सुनहरा पंख

देश-देश की लोककथाएं

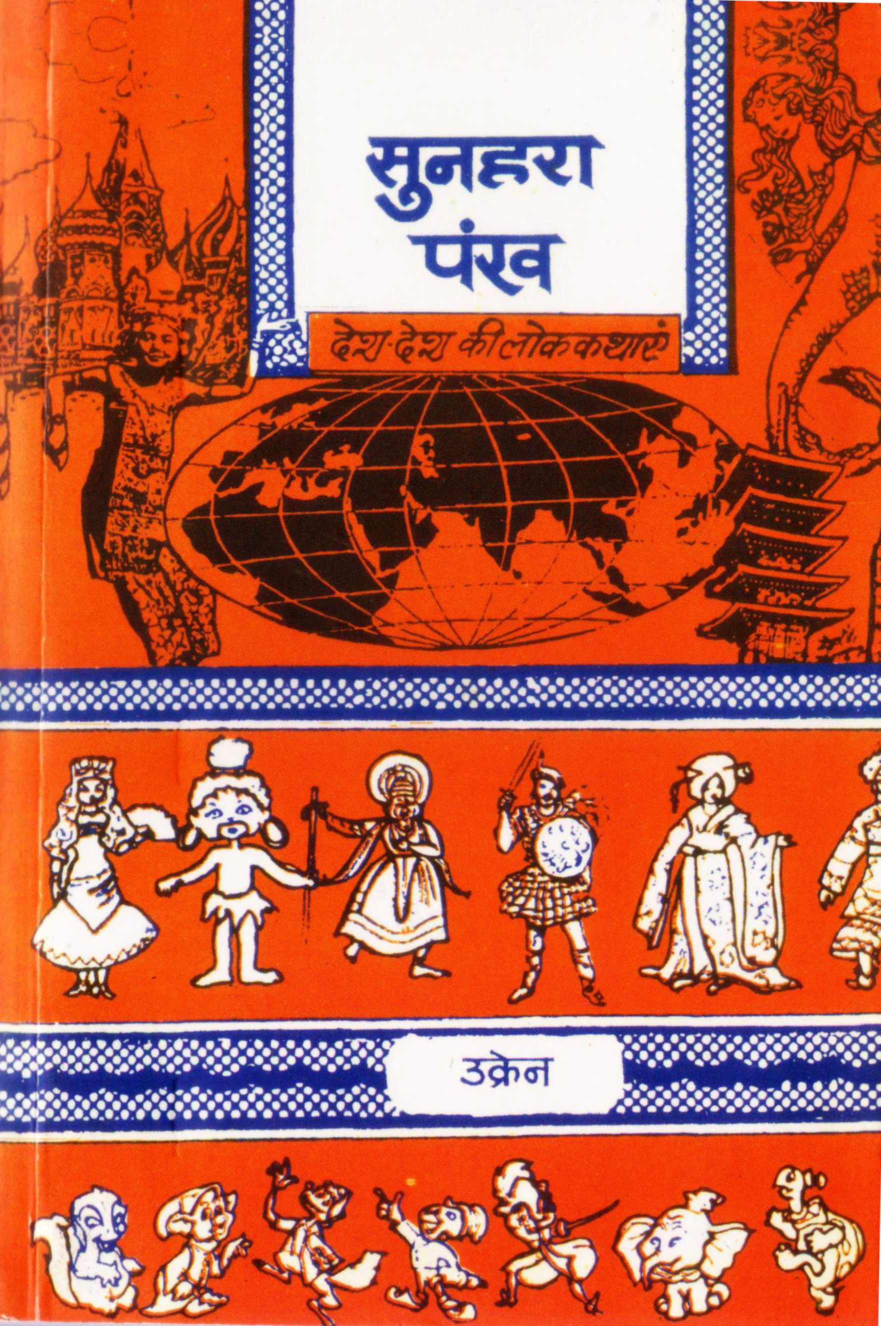

उक्रेन

सुनहरा पंख

उक्रेन की रोचक कथाएं

•

ज़ाकिर अली 'रजनीश'

•

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

भारतीय कॉपीराइट एक्ट के तहत इस पुस्तक में प्रकाशित सामग्री के सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। कोई भी व्यक्ति/संस्था/समूह आदि इस पुस्तक की आंशिक या पूरी सामग्री किसी भी रूप में बिना अनुमति के मुद्रित/प्रकाशित नहीं कर सकता। इस चेतावनी का उल्लंघन करनेवाले क़ानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे व हानि के उत्तरदायी होंगे। सभी विवादों का न्यायक्षेत्र दिल्ली रहेगा।

ISBN 81-7309-047-5 (PB)

© सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

•

प्रकाशक

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

एन-77, पहली मंजिल, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-110001

Publisher

Sasta Sahitya Mandal Prakashan

N-77, First Floor, Connaught Circus, New Delhi-110 001

फोन / Phone : 23310505, 41523565

Visit us at : www.sastasahityamandal.org

E-mail : sastasahityamandal@gmail.com

शाखा : कमला सदन, पटना साइंस कॉलेज के सामने,

अशोक राजपथ, पटना-800 006 (बिहार)

फोन : 0612-2678025

•

संस्करण : 2022

मूल्य : 70/-

•

आवरण सज्जा : सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

मुद्रक : आर.के. ऑफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

SUNHARA PANKH

by Jakir Ali Rajneesh

Price : Rs. 70/-

प्रकाशकीय

कुछ वर्ष पूर्व हमने हिन्दी तथा उसके परिवार की लोक-कथाओं की लगभग एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित की थीं। उन्हें पाठकों ने बहुत पसंद किया। उनमें से प्रत्येक के एकाधिक संस्करण हो गये। उसी से प्रेरित होकर हमने विभिन्न देशों की लोक-कथाओं की एक पुस्तक-माला 'देश-देश की लोक-कथाएं' का प्रकाशन आरंभ किया। इस माला में हमने अबतक मारीशस, रूस, चीन, चैक, बर्मा तथा जापान की लोक-कथाएं प्रकाशित की हैं और अब उक्रेन की लोक-कथाओं का संग्रह पाठकों के हाथों में है।

इस संग्रह की कथाएं बड़ी ही रोचक और मनोरंजक हैं। उन्हें पढ़ते-पढ़ते ऐसा लगता है, मानो उस देश के इतिहास के पन्ने पलट रहे हैं। कहानियों की भाषा-शैली में बड़ी सहजता और प्रवाह है।

पाठकों से हमारा अनुरोध है कि वे इसे तथा इस माला की अन्य पुस्तकों को ध्यानपूर्वक पढ़ें। लोक-कथाओं में देश के जन-जीवन की झांकी मिलती है, साथ ही वहां की संस्कृति का भी परिचय मिलता है। इस प्रकार इन कथाओं के पठन-पाठन से पाठकों का मनोरंजन तो होगा ही, उस देश की संस्कृति को भी जानने और समझने में सहायता मिलेगी।

—**मंत्री**

भूमिका

किसी भी देश की लोक-कथाएं वहां के जन-जीवन, वातावरण और उनकी आकांक्षाओं का प्रतिबिम्ब होती हैं। उक्रेन की लोक-कथाओं को पढ़ने से पहले यदि हम वहां के माहौल के बारे में जान लें तो शायद उन्हें ग्रहण करने में काफी सरलता हो।

हालांकि अब उक्रेन एक स्वतंत्र देश है, किन्तु पूर्व में वह सोवियत संघ का एक समृद्ध राज्य हुआ करता था। अपने पहाड़ों और वहां की कड़ाके के ठण्ड के कारण वह काफी विख्यात रहा। शायद यही कारण है कि हमें लोक-कथाओं में अजदहों (अग्निदानव) की कल्पना के दर्शन पग-पग पर होते हैं। इसके अतिरिक्त बलूत वहां का एक सर्वसुलभ पेड़ है, जिसका जिक्र भी हमें बहुतायत में मिलता है।

किन्तु एक चीज जो हमें सर्वाधिक चौंकाती है, वह है वहां की लोक-कथाओं में राज-परिवारों के कथानायकों की अनुपस्थिति। वहां की अधिकतर लोक-कथाओं में नायक साधारण व्यक्ति ही हुआ करते हैं। शायद ऐसा वहां की जनता की राजसत्ता में अरुचि के कारण हो।

लोक-कथाओं के पाठों में कभी एकरूपता नहीं होती। वे बदलते समय और कथावाचकों के साथ बदल जाया करते हैं। किन्तु उनकी मौलिकता और कथात्मकता हर युग और हर समय में अक्षुण्ण रहती है। आशा है उक्रेनी लोक-कथा साहित्य के ये चुनिंदे पाठकों के मन को भायेंगे।

—ज़ाकिर अली 'रजनीश'

तेलीबाग बाजार,
लखनऊ (उ.प्र.)

अनुक्रम

❑

१. सुनहरा पंख / ६
२. अच्छाई और बुराई / २१
३. अजदहा / ३२
४. तीन भाई / ४३
५. जादुई ढोल / ५३
६. शेर बना राजा / ६५
७. छुटकू / ७६
८. सुनहरी मछली / ८७
९. हुक्म चिड़िया का / १००
१०. मुंह तोड़ जवाब / १११

❑❑

लोक-कथाओं का चलन प्राचीन काल से है। इन कथाओं में लोक-जीवन की झांकी मिल जाती है। किसी समय में दिन के कार्यों से छुट्टी पाकर कुछ लोग मिलकर बैठ जाते थे। एक आदमी कहानी कहता था, बाकी लोग सुनते थे। कहानियां लम्बी होती थीं, छोटी भी। कहानी कहने वाला उनमें इतना रस उत्पन्न कर देता था कि सुनने वाले मंत्रमुग्ध होकर सुनते थे। कहानियों की भाषा बोलचाल की होती थी, जिसे बिना पढ़े लोग भी सहज ही समझ सकते थे।

कहानियां किसी भी देश की हों, सबके लिए होती हैं। वे आदमी-आदमी के बीच भेद नहीं करतीं। यद्यपि आज लोगों के पास इतना अवकाश नहीं है कि मिल-बैठकर कहानियां सुनें, फिर भी लोक-कथाओं की उपयोगिता कम नहीं हुई है।

सुनहरा पंख

सुनहरा पंख

किसी गांव में एक व्यापारी रहता था। उसका व्यापार दूर-दूर तक फैला था। व्यापारी के दो संतान थीं। दोनों ही लड़कियां थीं। बड़ी लड़की आलसी, ईर्ष्यालु और खुशामद-पसंद थी, जबकि छोटी लड़की मेहनती और मिलनसार थी। वह सभी के साथ बड़ी इज्जत से पेश आती थी। इसीलिए सभी लोग उसकी बड़ी इज्जत करते थे।

बड़ी लड़की सांवली थी। वह सारा दिन सजने-संवरने में लगाती और छोटी बहन से घर का सारा काम कराती। छोटी लड़की बहुत सुंदर थी। वह हमेशा सादगी से रहती और खुश रहती।

व्यापारी की पत्नी का बहुत पहले देहांत हो गया था। इसलिए घर में बड़ी बहन का ही हुक्म चलता था। व्यापारी के नाते-रिश्तेदार उससे अक्सर कहते कि तुम दूसरी शादी कर लो, लेकिन व्यापारी हंसकर टाल देता। वह अपनी लड़कियों को बहुत प्यार करता था। वह कतई नहीं चाहता था कि घर में उनकी सौतेली मां आये और उन्हें दुःख दे। इसीलिए उसने दूसरी शादी नहीं की थी।

व्यापारी का ज्यादा समय घर के बाहर ही बीतता। इसलिए बड़ी लड़की को अपनी मनमानी करने का मौका मिलता। वह छोटी पर अपना हुक्म चलाती और उससे घर के सारे काम करवाती। छोटी लड़की बड़ी बहन के डर से पिता से कुछ कह भी न पाती। उसे भगवान पर बड़ा भरोसा था। वह अपने मन में कहती—"भगवान सबकुछ देखता है। एक दिन उसे इसका बदला अवश्य मिलेगा।"

व्यापार पर जाने से पहले पिता अपनी बेटियों से पूछता कि उन्हें क्या चाहिए। बड़ी लड़की हमेशा अपने पिता से कीमती सामान और सौन्दर्य-प्रसाधन मंगाती, ताकि उन्हें धारण कर वह बहुत सुंदर हो जाये, लेकिन छोटी लड़की हमेशा टाल देती। वह कहती—"पिताजी, मुझे कुछ नहीं चाहिए। आपकी जो भी इच्छा हो, मेरे लिए ले आइयेगा। मुझे उसे पाकर खुशी होगी।"

छोटी लड़की की बातें सुनकर पिता खुश हो जाता और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरने लगता। यह देखकर बड़ी लड़की जल-भुन जाती। वह सोचती कि पिता इस तरह से उसे क्यों नहीं प्यार करता? पर सोचने भर से क्या होता है?

हमेशा की तरह जब एक बार पिता ने व्यापार पर जाते समय अपनी लड़कियों से उनकी मर्जी का सामान पूछा, तो बड़ी लड़की ने अपने लिए कीमती कपड़े मंगवाये, लेकिन छोटी लड़की बोली, "पिताजी, आप मेरे लिए सुनहरा पंख ले आइयेगा।"

"सुनहरा पंख? लेकिन तुम उसका क्या करोगी?" पिता ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

"कुछ नहीं। बस ऐसे ही।" लड़की ने जवाब दिया।

"ठीक है, जैसी तुम्हारी इच्छा।" व्यापारी ने कहा और घर से निकल पड़ा। दूसरे शहर पहुंच कर व्यापारी ने अपना माल बेचा। उसे बहुत फायदा हुआ। तभी उसे अपनी बेटियों की फरमाइश याद

आयी। वह बाजार गया और अपनी जरूरत की चीजें खरीदने लगा।

बड़ी लड़की के कपड़े तो उसे बड़ी आसानी से मिल गये, लेकिन जब उसने सुनहरे पंख का पता किया, तो लोग उसकी बात सुनकर हंस पड़े। यह देखकर व्यापारी निराश हो गया। उसने दूसरे लोगों से पता किया, लेकिन हर जगह उसे निराशा ही हाथ लगी।

वह एकदम निराश हो गया। अन्त में वह लौट रहा था कि उसे एक बूढ़ा आदमी मिला। वह उसे परेशान देख कर बोला, "क्या बात है बेटे, तुम बहुत परेशान लग रहे हो?"

बूढ़े की बात सुनकर व्यापारी को थोड़ी राहत मिली और उसने उससे अपने मन की बात कह सुनायी। व्यापारी की बात सुनकर बूढ़ा एकदम हंस पड़ा। बूढ़े को हंसता देखकर व्यापारी का गुस्सा भड़क उठा। वह बोला, "अजीब आदमी हैं आप! एक तो मैं इतना परेशान हूं और आपको हंसी सूझ रही है!"

व्यापारी की बात सुनकर बूढ़ा चुप हो गया। बोला, "नहीं बेटे, मैं तुम्हारी बात पर नहीं हंसा, मैं तुम्हारी बेटी की खुशकिस्मती पर हंस रहा हूं। बहुत जल्दी उसका भाग्य बदलने वाला है।"

लेकिन बूढ़े की बात का मतलब व्यापारी की समझ में नहीं आया। वह बोला, "मैं आपकी बात का मतलब नहीं समझा। आप कहना क्या चाहते हैं?"

"कुछ नहीं।" बूढ़े ने जवाब दिया, "आपको सुनहरा पंख चाहिए। आइये, मैं आपको देता हूं।"

कहता हुआ बूढ़ा व्यापारी को लेकर अपने घर गया। उसने अपनी एक छोटी सी पेटी खोली और पंख निकाल कर व्यापारी को दे दिया। व्यापारी ने पंख को ध्यान से देखा। उसे उस पंख में कुछ विशेषता नजर नहीं आयी। उसने बूढ़े को धन्यवाद दिया और अपने घर को लौट पड़ा।

छोटी लड़की ने जब उस सुनहरे पंख को देखा, तो एकदम से नाच उठी। यह देखकर उसके पिता और बड़ी बहन हैरान रह गये। उन्हें समझ में ही नहीं आया कि आखिर इस पंख में ऐसी क्या बात है, जो यह फूली नहीं समा रही है। उन लोगों ने उससे पूछा भी, लेकिन छोटी लड़की ने कोई जवाब न दिया और अपने काम में लग गई।

रात को सारे काम से छुट्टी पाकर जब छोटी लड़की सोने के लिए अपने बिस्तर पर गई, तो नींद उसकी आंखों से कोसों दूर थी। वह हाथ में उस पंख को लिये नचाती रही। फिर अचानक ही बड़बड़ाने लगी—"कितना सुंदर पंख है यह। काश, इतना सुंदर कोई राजकुमार भी होता, तो मैं..."

अभी लड़की की बात अधूरी ही थी कि वह सुनहरा पंख एकदम से चमक उठा और उसमें से आवाज आने लगी—"है, इतना सुंदर राजकुमार भी है। लेकिन तुम्हें उसे पाने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ेगी।"

"करूंगी। मैं राजकुमार को पाने के लिए कुछ भी करूंगी।" लड़की के मुंह से अपने आप ही निकल गया।

"ठीक है, तब तुम्हें उत्तर दिशा की ओर जाना होगा और तबतक चलना होगा, जबतक तुम्हारे जूते घिस न जायें। तभी वह राजकुमार तुम्हें मिल सकता है।" पंख से आवाज आयी।

यह सुनकर छोटी लड़की एकदम दीवानी-सी हो गई। अब तो उसे बस एक ही धुन लग गई कि उसे राजकुमार को प्राप्त करना है, चाहे जैसे भी हो, चाहे जिस तरह से हो।

सुबह होने पर उसने अपने मन की बात पिता से कही। लड़की की बात सुनकर पिता हैरान रह गया। वह बोला, "तू पागल हो गई है क्या? लगता है, तुझ पर किसी भूत का साया हो गया है, जो इस तरह से बहकी-बहकी बातें करने लगी है। चुपचाप घर में बैठ और

अपना काम कर।"

पिता की बातें सुनकर लड़की बहुत दुःखी हुई। लेकिन वह पक्का इरादा कर चुकी थी। अतः उसने खाना-पीना छोड़ दिया और काम-धंधा छोड़ कर अपनी चारपाई पर जा बैठी। पिता ने उसे बहुत समझाया, बहुत तरह के लालच दिये, लेकिन जब लड़की न मानी, तो उसने लड़की को इजाजत दे दी।

पिता की आज्ञा पाकर लड़की बहुत खुश हुई। उसने पिता को धन्यवाद दिया और सुनहरे पंख को लेकर उत्तर दिशा में निकल पड़ी।

चलते-चलते लड़की एक घने जंगल में पहुंच गई। अबतक वह बुरी तरह से थक गई थी। उसे बहुत जोरों की भूख भी सता रही थी। वह एक पेड़ के नीचे बने चबूतरे पर बैठ गई और सुनहरे पंख से बोली, "ऐ सुनहरे पंख, मैं बुरी तरह से थक गई हूं। भूख भी बहुत तेज लगी है। बताओ, अब मैं क्या करूं?"

सुनहरा पंख एकदम से चमका और फिर उसमें से आवाज आयी, "यहां से पचास कदम की दूरी पर एक झोपड़ी है। तुम वहां पहुंचो, तुम्हारी सारी परेशानी दूर हो जायेगी।"

यह सुनकर लड़की बहुत खुश हुई। वह फौरन उस झोपड़ी में जा पहुंची। झोपड़ी में एक बाबा बैठे हुए थे। लड़की ने उन्हें प्रणाम किया और अपना परिचय दिया।

बाबा ने कहा, "बेटी, तुम्हारी हिम्मत देख कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। मैं तुम्हारी मदद अवश्य करूंगा।"

फिर उन्होंने लड़की को खाने को दिया। लड़की ने भरपेट खाना खाया और झोपड़ी में ही सो गयी।

जब वह सो कर उठी, तो उसकी सारी थकान दूर हो चुकी थी। बाबा ने उसे सोने की थाली और चांदी का अंडा देते हुए कहा, "पंख वाला राजकुमार एक दुष्ट रानी के कब्जे में है। तुम्हें उसको रानी

के कब्जे से छुड़ाना होगा। लेकिन यह काम इतना आसान नहीं। तुम यह थाली और अंडा रक्खो, यह तुम्हारे काम आयेगा।''

लड़की ने थाली और अंडा ले लिया तथा बाबा को धन्यवाद देकर आगे चल पड़ी।

लड़की चलती रही, चलती रही। नदी-नाले पार करते हुए वह एक पहाड़ी इलाके में जा पहुंची। वहां पर कंटीले पेड़ लगे हुए थे और जंगली जानवरों की भयानक आवाजें आ रही थीं। उन आवाजों को सुनकर लड़की डरने लगी।

तभी अंडे से आवाज आयी—''मंजिल ये आसान नहीं, डरना तेरा काम नहीं। मानेगी तू नहीं हार, तभी मिलेगा राजकुमार।''

यह सुनकर लड़की का सारा डर गायब हो गया और वह आगे चल पड़ी। लेकिन जैसे ही वह दस-बीस कदम चली, उसकी नजर सामने खड़े एक शेर पर पड़ी। शेर को देखते ही वह बुरी तरह से कांप उठी।

अंडा पुनः बोला—''मंजिल ये आसान नहीं। डरना तेरा काम नहीं। यह न करेगा हमला तुझपर। चुभा हुआ कांटा पंजे पर। नेकी का कुछ काम करो। इसके दुःख को दूर करो।''

अंडे की बात सुनकर लड़की की हिम्मत वापस लौट आयी। उसने देखा, शेर अपना आगे का दाहिना पंजा उठाये हुए है। उसमें एक बड़ा-सा कांटा चुभा था। लड़की हिम्मत करके उसके पास गई और शेर के पैर का कांटा निकाल दिया।

कांटा निकल जाने से शेर को बहुत राहत मिली। वह बोला, ''बहन, तुमने मेरे पैर से कांटा निकाल कर मुझपर बहुत बड़ा अहसान किया है। जब कभी तुम्हें मेरी जरूरत हो, मुझे याद कर लेना। मैं हाजिर हो जाऊंगा।''

शेर की बात सुनकर लड़की मुस्कराई और आगे चल पड़ी।

चलते-चलते वह पुनः एक जंगल में जा पहुंची। जंगल में अंधकार छाया हुआ था। अंधेरा इतना घना था कि आगे का रास्ता भी सुझाई नहीं पड़ता था। लेकिन लड़की ने फिर भी रुकने का नाम नहीं लिया और अपने रास्ते पर बढ़ती रही।

आगे एक बड़ी-सी झील थी, लेकिन झील में खर-पतवार इतना ज्यादा था कि दूर से वह नजर ही नहीं आती थी। चलते-चलते लड़की जब झील के पास पहुंची, तो वह उसमें गिर गई। फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी और तैरते हुए बाहर निकल आयी। बाहर निकल कर वह एक ओर बैठ गई। झील का पानी बहुत ठण्डा था, इसलिए उसे जाड़ा लगने लगा। वह सोचने लगी कि अब वह क्या करे? इस बियाबान जंगल में वह आग कहां से लाये?

इस बार जादुई अंडा फिर से बोला, "डरो नहीं, तुम डरो नहीं। हिम्मत अपनी हारो नहीं। आग मैं जलाऊंगा। जाड़ा दूर भगाऊंगा।"

और अगले ही पल अंडे से आग की एक चिनगारी निकली और जमीन पर पड़ी सूखी झाड़ियां जलने लगीं।

आग की गर्मी पाकर लड़की की ठंडक दूर हुई और उसके कपड़े भी सूख गये। जैसे ही वह चलने को हुई वहां पर एक चमत्कार हो गया। झील के बीच उगी झाड़ियां एकदम गायब हो गईं और वहां पर एक परी प्रकट हो गई।

परी को देखकर लड़की हैरान रह गई। लेकिन इससे पहले कि वह कुछ पूछती, परी बोल पड़ी, "मैं परीलोक की राजकुमारी हूं। एक साधु के श्राप से झाड़ी में बदल गई थी। लेकिन तुमने आग की गर्मी से मुझे श्राप से मुक्ति दिला दी। मैं तुम्हारा यह अहसान जिन्दगी-भर नहीं भूलूंगी।"

उसके बाद परी ने एक लकड़ी का चौखटा देते हुए कहा, "यह जादू के जोर से चलता है। जैसे ही तुम इसमें कपड़ा लगाओगी, वह

अपने आप कढ़ जायेगा।''

यह कहकर परी ने लड़की को आशीर्वाद दिया और आसमान में उड़ गई। लड़की ने उस चौखटे को एक बार ध्यान से देखा और फिर उसे लेकर उत्तर की ओर बढ़ गई।

चलते-चलते लड़की के जूते घिस गये। तबतक वह एक शहर में जा पहुंची थी। सामने ही एक बड़ा-सा महल नजर आ रहा था। लड़की महल की ओर बढ़ गई। जब वह महल के पास पहुंची, उस समय वहां की रानी बाग से सैर करके लौट रही थी।

लड़की ने रानी का अभिवादन करने के बाद उससे कोई काम मांगा। रानी ने उससे उसका नाम-पता पूछा और फिर अपने पास नौकर रख लिया। लड़की का काम था रानी के पास रहना और उसका जी बहलाना।

एक दिन लड़की धूप में बैठी थाली में अंडे को रखकर नचा रही थी, तभी वहां पर रानी आ गई। रानी को वह सुनहरा अंडा बहुत भाया। वह बोली, ''क्या तुम यह अंडा मुझे दे सकती हो? इसके बदले में जो भी कीमत मांगोगी, मैं तुम्हें दूंगी।''

लड़की तो इसी मौके की ताक में थी। वह बोली, ''जी, महारानीजी, मुझे यह अंडा और थाली आपको देकर बड़ी प्रसन्नता होगी। इसका मुझे कोई मोल भी नहीं चाहिए। बस मेरी एक छोटी-सी इच्छा है कि एक बार मैं कलगी वाले राजकुमार को देखूं।''

कलगी वाले राजकुमार को रानी ने तहखाने में बंदी बना रक्खा था। उसका नाम सुनकर वह चौंकी, क्योंकि रानी स्वयं उससे शादी करना चाहती थी। उसने सोचा कि यह सिर्फ उसे देखने को ही तो कह रही है। वह तैयार हो गई।

रानी ने थाली और अंडा अपने पास रख लिया और रात में राजकुमार को दिखाने का वचन दिया। रात में जब सब लोग सो

गये, तो रानी लड़की को लेकर तहखाने में गई और कारागार में बंद राजकुमार को दिखाया। राजकुमार उस समय सोया हुआ था। कारागार के फाटक में एक मोटा-सा ताला लगा हुआ था और बाहर दो सिपाही पहरा दे रहे थे।

कारागार से वापस आने के बाद लड़की बहुत बेचैन हो गयी। उसे राजकुमार की दशा देखकर बड़ा दुःख हुआ। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या करे? अतः उसने सुनहरे पंख को बाहर निकाला और उससे पूछा, ''ऐ सुनहरे पंख, राजकुमार को रानी ने तहखाने में कैद कर रक्खा है। मैं भला इसे कैसे आजाद करा पाऊंगी?''

''उसकी तुम चिन्ता न करो।'' पंख बोला, ''समय आने पर सब-कुछ हो जायेगा।''

लड़की की समझ में कुछ भी न आया। लेकिन वह कर भी क्या सकती थी? सो वह चुपचाप बिस्तर पर लेट गई और राजकुमार के बारे में सोचती रही। पता नहीं, कब उसकी आंख लग गई।

अगले दिन लड़की को परी के दिये हुए चौखटे की याद आयी। उसने उसमें एक कपड़ा लगाया और उसे काढ़ने का हुक्म दिया। देखते-ही-देखते वहां एक सुई आ गई और कपड़े को काढ़ने लगी।

कुछ ही पल में कपड़ा कढ़ गया और सुई गायब हो गई। कढ़ाई वाकई बहुत सुंदर थी। उसे देखकर लड़की का मन प्रसन्न हो गया। उसने कपड़े को रूमाल के आकार में सीं दिया और रानी को भेंट कर दिया।

रूमाल को देखकर रानी का मन खिल उठा। इतनी सुंदर कढ़ाई उसने कभी देखी भी न थी। वह बोली, ''यह कढ़ाई तो बहुत सुंदर है। क्या तुमने इसे काढ़ा है?''

लड़की बहुत भोली थी। उसने उस जादुई चौखटे के बारे में रानी को सबकुछ सच-सच बता दिया। रानी ने जब उस चौखटे को देखा,

तो उसका जी ललचा गया। वह बोली, "तुम यह चौखटा मुझे दे दो। बदले में जो भी चाहोगी, मैं तुम्हें दूंगी।"

"क्या सचमुच मैं जो भी मांगूगी, आप मुझे दे देंगी?" लड़की ने पूछा।

तभी रानी को कलगी वाले राजकुमार की याद आ गई। उसने सोचा, कहीं यह लड़की उसे ही न मांग ले? वह बोली, "हां, कलगी वाले राजकुमार को छोड़कर तुम जो भी मांगोगी, मैं तुम्हें दूंगी। यह मेरा वादा है।"

लड़की ने एक क्षण के लिए कुछ सोचा, फिर बोली, "मैं कलगी वाले राजकुमार के साथ एक रात रहना चाहती हूं। अगर आपको यह शर्त मंजूर हो तो...।"

रानी ने थोड़ी देर कुछ सोचा, फिर उसने 'हां' कर दी और वह जादुई चौखटा लड़की से ले लिया।

लड़की ने सोचा था कि वह राजकुमार से मिलकर उसे सारी बात बतायेगी और फिर उससे उस तहखाने से निकलने का कोई उपाय पूछेगी। लेकिन जब वह वहां पहुंची तो राजकुमार सो रहा था। रानी ने जादू के बल पर राजकुमार को सुला दिया था। यह देखकर लड़की बहुत दुःखी हुई। उसने राजकुमार को जगाने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह उसमें सफल न हो सकी, और जब वह जगाते-जगाते थक गयी, तो निराश होकर रोने लगी।

लड़की के आंसू राजकुमार के गाल पर गिरे। आंसुओं के गिरते ही राजकुमार की बेहोशी टूट गई और वह उठ बैठा। राजकुमार को जगा देखकर लड़की बहुत खुश हुई और जल्दी-जल्दी उसे सारा हाल कह सुनाया।

लड़की की सारी कहानी सुनकर राजकुमार आश्चर्यचकित रह गया। वह लड़की के साहस पर मुग्ध हो गया और उससे प्यार करने

लगा। लेकिन सबसे बड़ी समस्या तो यह थी कि वे लोग रानी की कैद से बाहर कैसे निकलें?

ऐसे में लड़की को फिर से सुनहरे पंख की याद आयी। उसने पंख को अपनी जेब से बाहर निकाला और उससे बाहर निकलने का रास्ता पूछा।

पंख बोला, "इस समय तो जंगल का शेर ही तुम्हारे काम आ सकता है।"

लड़की ने फौरन शेर को याद किया। देखते-देखते शेर वहां पर हाजिर हो गया। उसने फाटक के बाहर खड़े पहरेदारों का काम तमाम कर दिया और फाटक के ताले को तोड़ डाला। यह देखकर लड़की और राजकुमार प्रसन्नता से फूले न समाए। पर अब महल के बाहर कैसे निकला जाये? लड़की ने शेर के सामने अपनी समस्या रक्खी। शेर कोई मामूली जानवर न था। उसे वनदेवी का आशीर्वाद प्राप्त था। वह बोला, "आप दोनों मेरी पीठ पर बैठ जाइये। मैं आप लोगों को लेकर यहां से निकल चलता हूं।"

फटाफट वे दोनों शेर पर सवार हो गये। शेर ने एक दहाड़ लगायी और उड़ता हुआ राजमहल के बाहर निकल गया।

तबतक रानी को इस बात की खबर हो गयी। उसने अपनी सेना को शेर के पीछे लगा दिया। राजकुमार ने जब अपने पीछे आती सेना को देखा, तो बोला, "हमें इस तरह से दुश्मनों को पीठ दिखाकर भागना अच्छा नहीं लगता। क्यों न हम लोग इन सैनिकों का सामना करें, नहीं तो दुनिया हमें कायर कहेगी और ..."

राजकुमार की बात काट कर शेर बोला, "अगर ऐसी बात है, तो मैं अभी इन सबका काम तमाम किये देता हूं।"

कहते हुए शेर एक जगह जमीन पर उतरा। उसने उन दोनों को अपनी पीठ से उतारा और फिर सेना पर टूट पड़ा। देखते-ही-देखते

शेर के असंख्य रूप हो गये और उसने पूरी सेना को मौत के घाट उतार दिया। तबतक रानी भी वहां आ गई। उसके हाथ में एक बड़ी-सी तलवार थी। वह तलवार लेकर राजकुमार पर झपटी। तबतक शेर वहां पर आ गया और उसने रानी को भी मौत की नींद सुला दिया।

रानी के मरते ही उसका जादू टूट गया, उसका महल नष्ट हो गया और आस-पास के तमाम पेड़ आदमियों में बदल गये। वे सभी राजकुमार और लड़की के पैरों पर गिर पड़े और बोले, "आपने हमें रानी के जादू से मुक्त करके वापस मनुष्यों का रूप दिया। आज से हम सब आपके गुलाम हुए।"

लड़की ने उन सभी लोगों को स्वतंत्र कर दिया और कहा, आपलोग अपने-अपने घर चले जायें। यह सुनकर वे लोग बहुत प्रसन्न हो गये और उसे दुआएं देते हुए अपने-अपने घरों को लौट गये।

राजकुमार को लेकर लड़की अपने पिता के पास पहुंची। अपनी बेटी को सही-सलामत देखकर व्यापारी बहुत प्रसन्न हुआ और उसे सीने से लगा लिया। एक सप्ताह तक राजकुमार वहां पर रहा, फिर वह लड़की को लेकर अपने राज्य में चला गया। वहां के राजा ने जब अपने पुत्र को देखा, तो उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। वह तो कब से उसे मरा हुआ समझ कर भुला चुका था।

अपने बेटे को पाकर वह फूला नहीं समाया। उसने उस लड़की के साथ राजकुमार की शादी कर दी और राज-पाट उसे सौंप दिया। फिर वे खुशी-खुशी अपनी जिंदगी बिताने लगे। ●

अच्छाई और बुराई

एक गांव में दो भाई रहा करते थे। एक का नाम था चेखो और दूसरे का सेखो। चेखो बहुत ही ईमानदार और भोलाभाला था। वह हर किसी की बात पर सहज ही विश्वास कर लिया करता था। इसलिए उसे कई बार धोखा भी खाना पड़ता था। लेकिन सेखो बहुत ही धूर्त और चालाक था। अपने फायदे के लिए वह दूसरों को अक्सर ही बेवकूफ बना दिया करता था। इसी वजह से उसके पास ढेर सारी सम्पत्ति इकट्ठी हो गई थी, जबकि चेखो बहुत ही गरीब और दुर्बल था।

एक बार दोनों भाई मिले। दोनों में बातें होने लगीं। सेखो बोला, "तुम क्यों ईमानदारी के पीछे पड़े हो? इससे तुम्हें क्या मिला आजतक? अगर तुम भी मेरी तरह बेईमानी का काम करते, तो आज तुम भी रईस होते और मजे से जिंदगी बिताते।"

चेखो उसकी बात पर हंसा। वह बोला, "यह तुम्हारी गलतफहमी है, भाई। ईमानदारी सदैव अच्छी चीज है। यह बात तो कोई भी बता सकता है।"

"नहीं, बेईमानी ही अच्छी है। चाहो तो तुम मुझ से शर्त लगा

लो। जो जीतेगा, उसे दूसरे की बात माननी पड़ेगी।" सेखो ने चालाकी से काम लिया।

ईमानदार चेखो ने सेखो की बात पर सहज ही विश्वास कर लिया और उसने शर्त लगा ली। लेकिन इसका फैसला कैसे हो? अन्त में सेखो ही बोला, "चलो, हमलोग घर की ओर चलते हैं। जो भी व्यक्ति हमें रास्ते में मिलेगा, हम उसी से अपनी बात का फैसला करवा लेंगे।"

चेखो इसके लिए तैयार हो गया और दोनों लोग गांव की ओर चल पड़े।

थोड़ी दूर जाने पर उन्हें एक बूढ़ा मिला। वह ठण्ड के कारण बुरी तरह से कांप रहा था। उसके हाथ में एक कुल्हाड़ी थी और सिर पर लकड़ियों का बोझ। शायद वह उन्हें जंगल से काट कर लाया था।

चेखो उस व्यक्ति का अभिवादन करने के बाद बोला, "बाबा, एक बात बताइये, दुनिया में ईमानदारी अच्छी चीज है या बेईमानी?"

"ईमानदारी को आजकल कौन पूछता है?" वह व्यक्ति बोला, "सब बेईमानी की पूजा कर रहे हैं। ईमानदार तो आजकल ठीक से अपना जीवन भी नहीं बिता सकता। इसलिए बेईमानी ही अच्छी है।"

उस व्यक्ति की बात सुनकर सेखो मुस्कराया, "कहो, क्या कहते हो?"

चेखो बोला, "हमें तीन व्यक्तियों से पूछना चाहिए। यदि तीनों लोग तुम्हारी बात का समर्थन करेंगे, तो मैं तुम्हारी शर्त मानूंगा।"

वे लोग आगे बढ़े। सामने से ही एक चरवाहा अपनी भेड़ों को लेकर चला आ रहा था। सेखो ने उससे पूछा, "क्यों भाई, ईमानदारी अच्छी चीज होती है या...?"

सेखो की बात पूरी होने से पहले ही चरवाहा बोल पड़ा, "कौन पूछता है आजकल ईमानदारी को? मुझे देखो, मेरे ही भाई ने धोखे से मुझको घर से बेदखल कर दिया। अब बताओ कौन कहेगा कि

ईमानदारी अच्छी है?"

सेखो फिर मुस्कराया। दो लोगों ने उसकी बात का समर्थन किया था। वह मन-ही-मन बहुत खुश हुआ। अब एक आदमी से और पूछना था। उसके बाद उसके भाई को उसकी बात माननी थी, फिर चाहे वह जो कहे।

दोनों लोग गांव के एकदम करीब जा पहुंचे। तभी उनकी भेंट एक साहूकार से हो गई। दोनों ने अपनी बात उसके सामने भी रक्खी। साहूकार अपने कीमती गरम कपड़ों और सिर के सुंदर टोप की ओर इशारा करते हुए बोला, "तुम लोग इन कपड़ों को देख रहे हो? क्या ये सब ईमानदारी से कमाये जा सकते थे? ये सब तो बेईमानी का प्रताप है। अरे, ईमानदारी आजकल कहां बची है? अगर तुम भी धनवान बनना चाहते हो, तो बेईमानी करना सीखो। समझे? बेईमानी करना।"

उसके बाद वह साहूकार अपनी राह पर चला गया। लेकिन चेखो इस बात से बहुत दुःखी हुआ। अब तो उसे अपने भाई की शर्त भी माननी थी। सेखो उससे बोला, "तुम अपनी सारी सम्पत्ति मेरे हवाले कर दो, क्योंकि तुम शर्त हार चुके हो।"

सेखो की बात सुनकर चेखो हैरान रह गया। उसे अपने भाई से इतनी बड़ी धोखाधड़ी की उम्मीद न थी। वह बोला, "लेकिन यह तो सरासर बेईमानी है?"

"ह-हा! सुना नहीं तुमने अभी? साहूकार ने कहा था कि अगर अमीर बनना चाहते हो, तो बेईमानी करना सीखो। और वही तो मैं कर रहा हूं।" सेखो के मुख पर धूर्तता नाच रही थी।

चेखो अपनी शर्त हार चुका था और उसके लिए अपनी बात प्राणों से भी प्यारी थी। अतः उसने अपनी सारी सम्पत्ति सेखो को सौंप दी। बची उसके पास सिर्फ एक टूटी हुई झोपड़ी।

चेखो की इस हरकत के लिए उसकी पत्नी ने उसे खूब खरी-खोटी सुनाई। पर चेखो अपनी बात के आगे मजबूर था और उसकी पत्नी भी इस बात को अच्छी तरह से जानती थी। इसलिए थोड़ी ही देर में वह चुप हो गई।

पर अब आगे क्या हो? बच्चों और स्वयं उनके लिए खाने का जुगाड़ कहां से हो? उस समय जाड़े का मौसम था। चारों ओर बर्फ-ही-बर्फ जमी हुई थी। इसलिए मजदूरी भी मिलनी मुश्किल थी। उनके पड़ोस के लोग भी इतने मालदार न थे, जो वे उन्हें कुछ दे पाते। अतः चेखो ने मजबूर होकर मदद के लिए भाई के पास जाने का निर्णय लिया।

उसे देखते ही सेखो मुस्कराया। अपने घर के भीतर वह अंगीठी में आग ताप रहा था। उसने कहा, ''कहो, कैसे हो, ईमानदार भाई? कैसी गुजर रही है?''

''गुजर क्या रही है, भाई? मेरे बच्चे भूख से तड़प रहे हैं। कृपा करके तुम मुझे एक बोरी आटा दे दो। मैं बाद में तुम्हें लौटा दूंगा।''

सेखो बोला, ''मुझे तुम्हारी दशा पर वाकई दुःख हो रहा है। पर मैं पूरी तरह से मजबूर हूं। यह जाड़े का मौसम है। इसलिए तीन-चार माह न तो तुम्हें कहीं काम मिलेगा और न तुम कहीं से पैसों का इंतजाम कर पाओगे। इसलिए मेरी रकम डूब जायेगी।''

''लेकिन, भाई, कुछ तो मेरे ऊपर दया करो। मेरे बच्चे तुम्हारे भी तो कुछ लगते हैं। क्या तुम्हारा फर्ज नहीं बनता कि तुम उनके लिए कुछ करो?''

''बनता क्यों नहीं है, पर मैं मजबूर हूं।'' सेखो ने कुटिलता से उसकी ओर देखते हुए कहा, ''हां, यदि तुम अपनी एक आंख निकाल कर दे दो, तो मैं तुम्हें एक बोरी आटा दे सकता हूं।''

''यह तुम क्या कह रहे हो, भाई?'' चेखो एकदम कांप-सा गया,

"एक बोरी आटे के लिए, एक आंख? यह तो सरासर अंधेर है।"

"अब अंधेर हो या उजेर, इससे मुझे कोई मतलब नहीं। यदि तुम्हें आटा चाहिए तो शर्त मानो, नहीं तो यहां से चलते बनो। बिना वजह मेरा समय मत खराब करो।"

चेखो कुछ देर तो सोचता रहा, फिर उसने अपनी एक आंख निकलवा दी और एक बोरी आटा लेकर घर जा पहुंचा।

चेखो की पत्नी ने जब उसका यह हाल देखा, तो एकदम आगबबूला हो गई। उसने सेखो को बहुत बुरा-भला कहा और अपनी किस्मत को कोसने लगी।

लेकिन थोड़ी देर के बाद उसका गुस्सा ठण्डा हो गया। आखिर भूख तो उसे भी लग रही थी। अतः मजबूर होकर उसे आटे को गूंथ कर रोटियां पकानी पड़ीं। जब उन लोगों के पेट में रोटियां पहुंची, तब जाकर उन्हें चैन पड़ा।

लेकिन एक बोरी आटा भला कितने दिन चलता। एक महीने बाद ही फिर से खाने की समस्या आ गई। जाड़ा अभी भी जोरों पर था। अतः चेखो मजबूर होकर फिर से सेखो के पास पहुंचा।

सेखो ने फिर से वही शर्त रख दी। चेखो ने सोचा कि ऐसी आंख रखने से भी क्या फायदा, जो अपने बच्चों को रोटी न दिला सके। इससे तो अच्छा है कि वह अपनी दूसरी आंख भी दे दे, और दूसरी आंख के बदले में भी उसने एक बोरी आटा प्राप्त कर लिया।

आटे की वह बोरी भी एक महीने से ज्यादा न चली। और एक माह के बाद फिर भोजन की समस्या आ गई। अब जाड़ा थोड़ा कम हो चुका था। लेकिन अंधे चेखो को भला मजदूरी कौन देता। अतः उसने भीख मांगने का निश्चय किया।

वह अपनी पत्नी से बोला, "तुम मुझे गांव के चौराहे पर चलकर छोड़ आओ, वहीं पर बैठकर मैं भीख मांग लूंगा। जब शाम हो जाये,

तो तुम मुझे लेने आ जाना। दिन भर में इतने पैसे मिल ही जायेंगे कि हमारी रोजी-रोटी चल सके।''

पत्नी क्या करती! उसे मालूम था कि चेखो जो ठान लेता है, उसे करके ही मानता है। यदि वह उसे छोड़ने नहीं गई, तो वह अकेला ही चल देता, और ऐसे में रास्ते में चोट लगने की सम्भावना भी है। अतः वह मजबूर होकर चेखो को गांव के चौराहे के पास छोड़कर चली आयी और स्वयं किसी काम की तलाश में निकल गई।

गांव के चौराहे पर भूखा-प्यासा चेखो दिन-भर बैठा रहा। जो लोग उधर से गुजरते एक-आध सिक्के डाल देते। चेखो उन्हें जल्दी से समेट लेता और उनके सुखी रहने की कामना करने लगता।

किसी तरह से दिन बीत गया। सूरज दूर पहाड़ों के उस पार छिप गया और वातावरण में ठंडक बढ़ने लगी। कुछ ही पलों में वहां एकदम सन्नाटा छा गया। अब चेखो को भी चिन्ता होने लगी, क्योंकि अभी तक उसकी पत्नी नहीं आयी थी। थोड़ी देर तक तो चेखो ने वहां प्रतीक्षा की, लेकिन जब देरी उसके बर्दाश्त के बाहर होने लगी, तो वह स्वयं ही उठा और अन्दाजे से घर की ओर चल पड़ा।

रास्ते का अन्दाजा न होने के कारण चेखो थोड़ी ही दूर में भटक गया और वह गांव की बजाय जंगल के किनारे जा पहुंचा। वहां पर जंगली जानवरों की तरह-तरह की आवाजें गूंज रही थीं। इसके अलावा ठण्ड भी बहुत बढ़ गई थी। अब तो चेखो को डर भी लगने लगा। सो एक मोटे से पेड़ को हाथ से टटोलकर वह उसपर चढ़कर बैठ गया।

थोड़ी देर बाद वहां पर अजीब-सी आवाजें होने लगीं। चेखो डर के मारे एक मोटी डाल से चिपक गया और नीचे से आने वाली आवाजों को सुनने का प्रयत्न करने लगा।

दरअसल उस पेड़ के नीचे शैतानों की एक टोली आकर जमा

हो गई थी और वे ही अपने मुंह से तरह-तरह की आवाजें निकाल रहे थे। लेकिन थोड़ी देर के बाद ही वहां पर उनका सरदार भी आ गया। उसके आते ही सभी एकदम चुप हो गये। सरदार ने पेड़ के तने से अपनी पीठ को टिकाते हुए पूछा, "आज तुम लोगों को पूरे तीन महीने हो गये हैं। बताओ, तुम लोगों ने इन तीन महीनों में क्या किया?"

एक शैतान आगे बढ़कर बोला, "सरदार, मैंने इस गांव के दो भाइयों के बीच में दुश्मनी पैदा करवा दी। एक भाई ने मेरे बहकाने पर अपने भाई की पूरी जायदाद हड़प ली और बाद में दो बोरी आटे की खातिर उसे अंधा बना दिया।"

चेखो एकदम से चौकन्ना हो गया। यह तो उसी के बारे में बात की जा रही थी। वह चुपचाप उनकी बातें सुनता रहा।

शैतान की बात खत्म होने पर उसका सरदार बोला, "यह कोई बड़ा काम नहीं है। शायद तुम्हें नहीं मालूम कि अगर वह अंधा आदमी इस पेड़ की पत्तियों का रस अपनी आंखों में लगा ले, तो वह फिर से देखने लगेगा।"

तभी दूसरा शैतान आगे बढ़ा और बोला, "सरदार, मैंने यहां की राजकुमारी को एक ऐसे रोग की छूत लगा दी है, जिसका इस दुनिया वालों के पास कोई इलाज नहीं। अब थोड़े ही दिनों में उसकी मृत्यु हो जायेगी और उसके मरते ही इस राज्य में दुःख के बादल छा जायेंगे।"

"हां, यह अच्छा काम है।" सरदार ने कहा, "लेकिन यदि कोई इस पेड़ की जड़ को पीस कर उसका पानी उस लड़की को पिला दे, तो वह एकदम ठीक हो जायेगी। खैर, अब तुम बताओ, तुमने कौन-से काम को अंजाम दिया है?" उसने एक तीसरे शैतान की ओर इशारा किया।

वह शैतान बड़े गर्व के साथ बोला, "सरदार, मैंने इस गांव के लोगों की बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया है, जिसके कारण वे अब अच्छी बातें सोचते ही नहीं। उनके मन में हमेशा धोखे और बेईमानी की बातें आती हैं और वे एक-दूसरे को ठगने की फिराक में लगे रहते हैं।"

"यह वाकई बहुत अच्छा काम है।" इस बार शैतानों का सरदार बहुत खुश हुआ। वह अपनी बात को आगे बढ़ाता हुआ बोला, "लेकिन एक ऐसी चीज भी है, जो तुम्हारे इस प्रभाव को खत्म कर देगी।"

"भला, वह क्या है?" उस शैतान ने हैरानी से पूछा।

"अगर कोई ईमानदार आदमी इस पहाड़ के झरने में भगवान का नाम लेकर तीन पत्थर फेंके, तो लोगों के सिर से तुम्हारा जादू उतर जायेगा। लेकिन प्रसन्नता की बात तो यह है कि ऐसा ईमानदार आदमी कोई है ही नहीं।"

कहने के साथ सरदार जोर से हंसा। उसकी हंसी में उसके साथी भी शामिल हो गये। एक पल तो ऐसा लगा जैसे सारा जंगल कांप उठा हो। चेखो का दिल बुरी तरह से दहल उठा। उसने अपनी आंखें बंद कर लीं और पेड़ की डाल से और जोर से लिपट गया।

रात-भर चेखो पेड़ की डाली से उसी तरह से चिपका रहा। सुबह होने पर जब चिड़िया चहचहायीं, तो उसकी जान-में-जान आयी। जल्दी से उसने थोड़ी-सी पत्तियां तोड़ीं और उसका रस अपनी आंखों में लगा लिया। सचमुच उस रस ने चमत्कार का काम किया। अगले ही पल चेखो को सबकुछ दिखाई देने लगा।

चेखो को खुशी का ठिकाना न रहा। जल्दी-जल्दी वह पेड़ से नीचे उतरा और घर की ओर लपका। लेकिन तभी उसे राजकुमारी और गांव के लोगों की बातें याद आ गईं। उसने आसपास नजर दौड़ाई।

पास ही एक नुकीला पत्थर पड़ा हुआ था। उसने पत्थर की सहायता से पेड़ की एक जड़ खोदी और उसके बाद पहाड़ की ओर चल पड़ा।

कुछ ही देर में चेखो पहाड़ की चोटी पर स्थित झरने पर जा पहुंचा। उसने वहां पर पड़े तीन पत्थरों को उठाया और ईश्वर का नाम लेकर उन्हें झरने में डाल दिया। अबतक उसे बड़े जोरों की भूख लग आयी थी और शरीर भी थकान के कारण बुरी तरह से टूट रहा था। लेकिन उस सबकी परवाह न करते हुए वह सीधा राजमहल की ओर चल पड़ा।

लगभग एक घंटे तक लगातार पैदल चलने के बाद चेखो राजमहल के द्वार पर पहुंचा। उस समय उसका शरीर पसीने से तर-बतर था और कपड़े धूल से सने होने के कारण बहुत भद्दे लग रहे थे। इसीलिए जब उसने दरबान से राजा से मिलने के लिए कहा, तो वह हंसने लगा और उसको वहां से भाग जाने को कहा।

किन्तु संयोग से तभी वहां पर रानी आ गई। वह अपनी बेटी के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए गरीबों को खाना खिलाने जा रही थीं। चेखो ने उनसे अपनी बात कही और उन्हें विश्वास दिलाया कि वह राजकुमारी को ठीक कर देगा।

अबतक सैकड़ों वैद्य और हकीम निराश होकर लौट चुके थे। इसलिए रानी को दवाओं पर जरा भी यकीन न रहा था। लेकिन जब चेखो ने उससे बहुत आग्रह किया, तो वह उसे लेकर राजकुमारी के पास पहुंची।

चेखो ने तुरन्त उस चमत्कारी पेड़ की जड़ को निकाला और उसे पीसकर राजकुमारी को पिला दिया। जड़ ने सचमुच चमत्कार का कार्य किया। उसका रस पीते ही राजकुमारी ने आंखें खोल दीं और उठ बैठी।

यह देखकर राजा और रानी की प्रसन्नता की सीमा न रही। राजा

ने प्रसन्नता के कारण चेखो को गले से लगा लिया और ढेर सारा धन इनाम में दिया। इसके अतिरिक्त चेखो के घर पहुंचने के लिए उसने शाही सवारी का भी इंतजाम किया।

राजा के रथ पर सवार होकर जब चेखो अपने गांव पहुंचा, तो गांव वाले हैरान रह गये। उसकी पत्नी और बच्चे तो निहाल हो गये, और जब उन्हें सारी कहानी पता चली तो वे आश्चर्यचकित रह गये। उन्हें विश्वास हो गया कि यह सब चेखो की ईमानदारी के कारण संभव हुआ था।

झरने में फेंके गये तीन पत्थरों के कारण गांव के सारे लोगों पर शैतान का किया गया जादू समाप्त हो गया, लेकिन चेखो का भाई सेखो पहले की ही तरह बना रहा। उसके मन से लालच अभी तक गया नहीं था। इसीलिए वह उस पेड़ का पता पूछने के लिए रात में चेखो के पास आया। चेखो ठहरा भोला-भाला। उसने उसे सारी बात सच-सच बता दी।

सेखो ने तुरन्त अपने भाई से बिदा ली और जंगल की ओर चल पड़ा। थोड़ी ही देर में वह जंगल में जा पहुंचा। उसने पहले उस पेड़ को तलाश किया और फिर चढ़कर उसकी डाल पर बैठ गया।

थोड़ी देर में वहां पर सारे शैतान इकट्ठा हुए। वे बहुत गुस्से में थे। शैतानों का सरदार बोला, "लगता है, किसी ने छिपकर हमारी बातें सुन ली हैं और उसने हमारे प्रभाव को समाप्त कर दिया है।"

"हां सरदार, जरूर ऐसा ही है।" एक शैतान ने उसका समर्थन किया, "और मुझे तो लगता है कि वह आज भी यहीं कहीं छिपा होगा।"

"ठीक है, उस आदमी को खोज निकालो। हम अभी उसे मौत के घाट उतार देते हैं।" सरदार ने हुक्म दिया।

तुरन्त खोजबीन प्रारम्भ हो गई। सेखो एकदम से डर गया। उसके

प्राण गले में अटक गये। अब क्या हो? अतः वह भगवान को याद करने लगा।

परन्तु तभी एक शैतान की नजर सेखो पर जा पड़ी। उसने तुरन्त उसे पकड़ कर नीचे खींच लिया। वे क्रोधित तो पहले से ही थे। देखते-ही-देखते उन्होंने उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। इस प्रकार उसे अपने व्यवहार के अनुसार फल मिल गया। ●

अजदहा

अराल अपने मां-बाप का इकलौता लड़का था। बचपन से ही उसे घरवालों का बहुत प्यार मिला था। इसीलिए वह आलसी और कामचोर हो गया था। दिन-भर वह अलाव के पास बैठा आग सेंकता रहता।

अराल के माता-पिता धीरे-धीरे बूढ़े हो रहे थे। उन्हें अपने बेटे की चिंता थी कि वह उनके बाद कैसे अपना जीवन व्यतीत करेगा। इसी चिन्ता में वे घुलते रहते थे।

एक दिन अराल के पिता ने लड़के को काम सीखने के लिए एक किसान के पास भेज दिया, जिससे वह खेती का काम सीख सके। लेकिन अराल वहां पर एक सप्ताह से ज्यादा न टिका और अपने घर लौट आया।

अराल को देखकर उसके मां-बाप उस पर बहुत बिगड़े, लेकिन उसने उनकी बातों पर ध्यान न दिया और उन्हें एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दिया।

अगली बार अराल को उसके पिता एक गुस्सैल सुनार के पास

छोड़ आया और उससे कह आया कि वह अराल को अपने घर से जाने न दे। लेकिन वहां भी अराल ज्यादा दिन न टिका और दूसरे सप्ताह में ही घर भाग आया।

अब तो अराल के बूढ़े पिता की हिम्मत जवाब दे गई और उसने उसे कस कर पीटा। अराल चुपचाप मार खाता रहा और फिर अलाव के पास जाकर बैठ गया।

अराल के माता-पिता ने आपस में सलाह करके यह तय किया कि इस बार अराल को किसी दूसरे राजा की सीमा में काम सीखने के लिए भेजा जाये, ताकि वह वहां से लौट कर न आ सके।

अगले दिन अराल के पिता ने बेटे को साथ लिया और अपनी मंजिल की ओर चल पड़ा। वे लोग चलते-चलते एक घने जंगल में पहुंच गये। अबतक वे बुरी तरह थक गये थे। अतः एक पेड़ के नीचे बैठकर आराम करने लगे।

उस इलाके में एक भयानक अजदहा (अग्निदानव) रहा करता था। उसकी शक्ल भेड़िये की तरह थी और वह दो पैरों से चलता था। अजदहे को तरह-तरह के जादू आते थे और वह जब गुस्से में होता था, तो उसके मुंह से आग निकलने लगती थी।

अजदहे को जब मनुष्यों की गंध मिली, तो उसने एक बूढ़े आदमी का रूप बदल लिया और उन लोगों के सामने आ गया। बड़ी विनम्रतापूर्वक बोला, "आप लोग कहां जा रहे हैं।

"हम लोग पड़ोसी देश की सीमा में जा रहे हैं, ताकि मैं इस लड़के को वहां पर कोई काम सिखाने के लिए रखवा सकूं।" अराल के पिता ने जवाब दिया।

"लेकिन यह काम तो यहां पर भी हो सकता है।" भेस बदले अजदहे ने बड़े अपनेपन से कहा।

"हां, हो तो सकता है, लेकिन यह बार-बार घर भाग जाता है

इसीलिए मैं इसे दूसरे देश पहुंचाना चाहता हूं।"

"ओह, तो यह बात है!" अजदहा बोला, "लेकिन तुम चाहो तो यह काम मैं भी कर सकता हूं। मैं इसे अपने पास रक्ख लूंगा और तरह-तरह के काम सिखा दूंगा, और यह तुम्हारे पास अपने मन से भाग कर जा भी न पायेगा।"

"क्या, सचमुच तुम ऐसा कर सकोगे?"

"हां, मैं सच कह रहा हूं। लेकिन मेरी भी एक शर्त है।"

"क्या?"

"यही कि तुम इसे एक साल बाद ही ले जा सकोगे। वह भी तब, जब अपने बेटे को पहचान लोगे।"

"मुझे मंजूर है।" अराल के पिता ने कहा और उस बूढ़े अजदहे के हाथ में अराल को सौंप दिया।

"ठीक है। एक साल बाद तुम मुझे इसी जगह पर मिलना।" अजदहे ने अराल के हाथ को थामते हुए कहा।

अराल के पिता ने सहमति जताई और प्रसन्नता-पूर्वक अपने घर को लौट पड़ा।

अजदहा थोड़ी दूर तक तो पैदल चलता रहा, लेकिन जब उसने देखा कि अराल का पिता वहां से चला गया है, तो वह अपने असली रूप में आ गया। अजदहे के असली रूप को देखकर अराल एकदम डर गया, लेकिन अजदहे ने उसकी परवाह नहीं की और जोर से जमीन पर धम्म से एक लात मारी।

जमीन पर लात पड़ते ही वह नीचे धंस गई और वहां पर रास्ता बन गया। अराल को लेकर अजदहा उस सुरंगनुमा रास्ते में उतर गया।

जमीन के नीचे एक बड़ा-सा मैदान था, जिसके बीच में एक सुन्दर-सा महल बना हुआ था। अराल को लेकर अजदहा वहां पर पहुंचा। महल में तमाम नौकर इधर-उधर टहल रहे थे। वे सभी काम

में लगे हुए थे। अजदहे ने अराल को कुछ भेड़ें सौंपते हुए कहा, "जाओ, इन्हें चरा कर ले आओ।"

अराल ने छड़ी संभाली और भेड़ों को हांकता हुआ मैदान में जा पहुंचा। भेड़ें वहां पर चरने लगीं और अराल जमीन पर पड़ कर सो गया।

अजदहे को जब मालूम हुआ कि अराल मैदान में सो रहा है, तो वह गुस्से में आग की लपटें छोड़ता हुआ उसके पास पहुंचा। अराल अब भी बेखबर सोया पड़ा था। अजदहे ने एक लम्बी-सी सांस छोड़ी और देखते-ही-देखते अराल के कपड़ों में आग लग गई।

आग लगने पर अराल की नींद टूट गई और वह उठकर इधर-उधर भागने लगा। यह देखकर अजदहा जोर से हंस पड़ा। थोड़ी ही देर में अराल का सारा शरीर जल कर राख हो गया। अजदहे ने उसकी राख को उठाया और उसे हवा में उछाल दिया, और अगले ही पल राख पुनः अराल में बदल गई। इस बार अराल का रूप कुछ बदला हुआ था। उसे देखकर अजदहा धीरे से मुस्कराया। किन्तु अगले ही पल उसने पुनः अराल के शरीर में आग लगा दी। वह फिर से जोर-जोर से जलने लगा।

अराल के शरीर के जल जाने पर अजदहे ने पुनः उसकी राख को पहले की तरह उछाला और अगले ही पल अराल फिर से जिंदा रूप में सामने हाजिर था। इस बार अराल का शरीर एकदम बदल गया था और वह बांका नौजवान नजर आ रहा था।

उसे देखकर अजदहा मुस्कराया, "अब ठीक है। तुम्हारे शरीर के साथ तुम्हारा स्वभाव भी बदल गया है और तुम एक मेहनती इंसान हो गये हो।"

उसके बाद अजदहे ने अराल को तरह-तरह की मायावी विद्याएं सिखायीं, जिनमें वह बहुत जल्द निपुण हो गया।

एक साल का समय बहुत होता है। उस एक साल में अराल के माता-पिता अपने बेटे से मिलने के लिए तड़प उठे। नियत दिन अराल का बूढ़ा पिता अपने बेटे को लेने के लिए पहुंच गया। वहां पर पहुंचकर उसने अपने बेटे को आवाज दी।

अराल के पिता की आवाज सुनकर अजदहा बूढ़े के रूप में हाजिर हो गया और उसे अपने महल में ले गया। उसने गेहूं के कुछ दाने लिए और सामने की ओर उछाल दिये। देखते-ही-देखते वहां पर तमाम चिड़ियां आ गईं।

"इन्हीं में तुम्हारा बेटा भी है।" अजदहा बोला, "अगर तुम उसे पहचान लो, तो अपने घर ले जा सकते हो।"

बूढ़े पिता ने बहुत कोशिश की, लेकिन वह उसमें सफल न हो सका। भला चिड़ियों में वह अपने बेटे को कैसे पहचानता? जब वह सफल न हो सका, तो अजदहे ने बड़ी विनम्रता से कहा, "अब आप एक साल बाद अपने बेटे को ले जाइये।"

"क्या तब भी मुझे इसी तरह से अपने बेटे को पहचानना होगा?"

"हां, यह शर्त आपने ही मंजूर की थी।"

बूढ़े पिता को अपने ऊपर बहुत गुस्सा आया। पर अब किया भी क्या जा सकता था? वह निराश होकर अपने घर लौट पड़ा।

एक साल बाद वह फिर अपने बेटे को लेने के लिए अजदहे के पास पहुंचा। इस बार अजदहा उसे एक खरगोश के दड़बे में ले गया और अपने बेटे को पहचानने को कहा। लेकिन इस बार भी उसके हाथ निराशा ही लगी। अतः वह खाली हाथ अपने घर को लौट गया।

तीसरे साल अराल को लेने के लिए जब उसका पिता जंगल में जा रहा था, तो एक मच्छर उसके कान के पास आकर भनभनाने लगा। बूढ़े ने उसे भगाना चाहा, लेकिन मच्छर एक-दो चक्कर काट कर फिर उसके पास लौट आया। इससे बूढ़े को गुस्सा आ गया।

उसने मच्छर को मारने के लिए जैसे ही हाथ उठाया, उसे लगा, वह उससे कुछ कह रहा है।

बूढ़ा ध्यान से उसकी बातें सुनने लगा। मच्छर कह रहा था, "पिताजी, मैं आपका बेटा अराल हूं। अजदहे ने मुझे बहुत सारी मायावी विद्याएं सिखायी हैं। उसी के बल पर मैं मच्छर का रूप धारण करके आपके पास आया हूं। इस बार जब आप मुझे लेने के लिए आयेंगे, तो वह आपको कबूतरों के दड़बे में ले जायेगा और मुझे पहचानने को कहेगा। वहां पर सारे कबूतर तो दाने चुग रहे होंगे, लेकिन एक कबूतर आपकी ओर देखता रहेगा। वह मैं ही होऊंगा।"

इतना कहकर मच्छर एक ओर उड़ गया।

अराल का पिता बहुत प्रसन्न हुआ और अजदहे के पास जा पहुंचा। अजदहा इस बार उसे वास्तव में कबूतरों के दड़बे में ले गया तथा अपने बेटे को पहचानने को कहा।

बूढ़े ने कबूतरों को ध्यान से देखा। सारे कबूतर तो दाने चुग रहे थे, सिर्फ एक कबूतर उसकी ओर देख रहा था। वह उसी कबूतर की ओर इशारा करके बोला, "यही मेरा बेटा है।"

"ओह, तुमने इस बार अपने बेटे को पहचान लिया। इसलिए तुम इसे अपने साथ ले जा सकते हो।" कहते हुए अजदहे ने अपना हाथ उठाया और देखते-ही-देखते अराल अपने वास्तविक रूप में आ गया।

बूढ़ा पिता अपने हट्टे-कट्टे बेटे से मिलकर बहुत खुश हुआ और खुशी-खुशी अपने घर को लौट पड़ा।

"बेटा, तुमने इन तीन सालों में कौन-सा काम सीखा?" अराल के पिता ने राह चलते हुए उससे पूछा।

"मैंने बहुत-सी मायावी विद्याएं सीखी हैं।" अराल ने जवाब दिया।

"लेकिन उससे क्या फायदा?"

"फायदा है, पिताजी। समय आने पर मैं बताऊंगा।" कहकर अराल चुप हो गया।

कुछ देर बाद अराल पुनः बोला, "पिताजी, सामने से दो शिकारी चले आ रहे हैं। मैं बाज बन जाता हूं। आप उन लोगों के हाथ पांच सौ रुपये में मुझे बेच दीजिये। बस, मेरी टोपी ले लीजिये।"

"यह तुम कैसी बातें कर रहे हो, बेटे?" उसके पिता ने पूछा, "क्या कोई बाप अपने बेटे को बेच सकता है?"

"ओह पिताजी, मैं वापस आ जाऊंगा। बस मैंने जैसा कहा है, वैसा करिये।"

तभी सामने से दो शिकारी आते दिखाई दिये। अराल झटपट बाज बन गया। उसके सिर पर एक टोपी रक्खी हुई थी।

शिकारियों के पास आते ही अराल बने बाज ने आसमान में तेजी से उड़ान भरी और एक चिड़िया को पकड़ कर ले आया। उन शिकारियों ने जब बाज की यह तत्परता देखी, तो वे अराल के पिता के पास आ गये और बोले, "क्या आप इस बाज को बेचना चाहेंगे?"

"हां, यदि पांच सौ रुपये में बिना टोपी के खरीद सकें, तो मैं तैयार हूं।" पिता ने अपनी शर्त बताई।

शिकारियों को टोपी की क्या जरूरत थी? उन्हें तो बाज पसंद था। उन्होंने अराल के पिता को पांच सौ रुपये दिये और बाज लेकर चलते बने।

जैसे ही वे लोग थोड़ी दूर गये, बाज ने आसमान में उड़ान भरी और वापस अपने पिता के पास अपने असली रूप में आ गया।

"वाह, यह तो बड़ी अच्छी विद्या सीखी है तुमने।" अराल का पिता बोला, "लेकिन पांच सौ रुपयों में आजकल क्या होता है?"

"आप चिन्ता न करिये, सामने से दो अन्य शिकारी आ रहे हैं।

इस बार मैं कुत्ता बन जाता हूं और आप उन्हें भी बिना पट्टे के मुझे पांच सौ रुपयों में बेच दीजिये।"

अराल ने कहा और कुत्ता बन गया। जैसे ही वे दोनों शिकारी पास आये, अराल ने पास की झाड़ी में एक छलांग लगायी और एक खरगोश को मुंह में दबा कर ले आया।

यह देखकर वे शिकारी बोले, "अरे वाह, आपका कुत्ता तो पक्का शिकारी है। क्या आप इसे बेचना पसंद करेंगे?"

"जी हां, बिना पट्टे के, पांच सौ रुपये में।"

और कुत्ते का भी सौदा पक्का हो गया। जैसे ही शिकारी कुत्ते को लेकर थोड़ी दूर गये, वह वहां से भागा और अपने असली रूप में पिता के पास लौट आया।

"सचमुच तुमने बहुत कमाल की विद्या सीखी है।" बाप ने गद्गद् होते हुए कहा, "इस तरह तो हम लोग मालामाल हो जायेंगे।"

"हां, क्यों नहीं।" लड़का सहमति में मुस्कराया।

तभी अराल को सामने से एक व्यापारी के आने की आहट मिली। वह बोला, "पिताजी, इस बार मैं घोड़ा बन जाता हूं। आप बिना लगाम के मुझे एक हजार रुपयों में बेचियेगा।"

"ठीक है, मैं ऐसा ही करूंगा।" बाप ने आश्वासन दिया।

और अराल झटपट घोड़ा बन गया।

तबतक सामने से आने वाला व्यापारी पास आ गया। उसने घोड़े को देखकर प्रसन्न होते हुए कहा, "भाईसाहब, आपका घोड़ा तो बड़ा प्यारा है। कहां से लिया?"

"अरब के व्यापारी से मैंने इसे दो महीने पहले खरीदा था।" अराल का पिता बोला, "पूरे नौ सौ रुपये में लिया है।"

"अच्छा, वाकई, आपका घोड़ा बहुत अच्छा है। इसने तो मेरा मन मोह लिया है। जी चाहता है, मैं इसपर सवारी करूं।"

"ऐसी बात है, तो आप इसे खरीद लीजिये। मैं एक हजार रुपये में बेचने को तैयार हूं।"

"क्या सचमुच? मुझे तो यकीन नहीं हो रहा है कि आप इसे एक हजार में बेचना चाहते हैं।"

"हां, मैं सचमुच बेचना चाहता हूं। लेकिन मैं घोड़े की लगाम आपको नहीं दूंगा। सिर्फ घोड़ा ही आपको एक हजार में मिलेगा।"

"यह भला कौन-सा नियम हुआ। आप घोड़े के साथ उसकी लगाम भी दीजिये। भले ही सौ रुपये और ले लीजिये।"

अराल के पिता ने सोचा कि जब जरा-सी लगाम के सौ रुपये मिल रहे हैं, तो वह तैयार हो गया और उसने ग्यारह सौ रुपये में घोड़ा लगाम सहित बेच दिया।

पैसे चुकाकर व्यापारी घोड़े पर बैठा और अपने रास्ते आगे बढ़ गया। अराल के पिता ने सोचा कि उसका बेटा अभी लौट कर आता ही होगा, लेकिन वह नहीं आया।

घोड़ा खरीदने वाला व्यापारी और कोई नहीं, स्वयं अजदहा था और उसने जानबूझकर घोड़े को लगाम सहित खरीदा था। वह घोड़े को लेकर अपने घर पहुंचा और उसे बांध दिया।

"अरे, यह घोड़ा कहां से ले आये?" अजदहे की पत्नी ने पूछा।

"यह घोड़ा नहीं, अराल है। बड़ी मुश्किल से हाथ आया है।" अजदहा बोला, "देखो, मैं थक गया हूं और सोने जा रहा हूं। तुम इसे नहला-धुलाकर तैयार कर देना। शाम को राजा के यहां शादी की दावत में जाना है।"

उसके बाद अजदहा सो गया। उसकी पत्नी ने घोड़े को खोला और उसे नहलाने के लिए तालाब के पास ले गई। अराल तो इसी ताक में था ही। मौका देखकर उसने एक जोरदार झटका दिया और लगाम सहित पानी में कूद गया। अजदहे की पत्नी यह देखकर घबरा

गई और लगाम पकड़ने के लिए पानी में कूद पड़ी। लेकिन अराल भी कहां हार मानने वाला था। वह झटपट मछली बन गया और पानी में तैरने लगा।

तबतक इस गड़बड़ी की खबर अजदहे को लग गई। वह भागता हुआ आया और मगरमच्छ बनकर तालाब में कूद पड़ा। मछली आगे-आगे, मगरमच्छ पीछे-पीछे। लेकिन कहां अजदहा और कहां अराल, थोड़े ही समय में अजदहा एकदम अराल के पास जा पहुंचा। अराल ने जब देखा कि वह पकड़ा जाने वाला है, तुरन्त मोतियों में बदल कर पानी में बिखर गया।

अजदहा भी कहां हार मानने वाला था! वह तुरन्त हंस में बदल गया और मोतियों को चुगने लगा। हंस मोतियों को चुगता गया, चुगता गया। लेकिन मोती थे कि खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहे थे। धीरे-धीरे हंस इतने मोती खा गया कि उसका चलना दूभर हो गया।

अराल यह देखकर मुस्कराया और झटपट बाज बन कर हंस पर टूट पड़ा। हंस तो वैसे ही चलने से मोहताज था। वह भला बाज का क्या मुकाबला करता! एक ही पल में बाज ने हंस का काम तमाम कर दिया।

अजदहे के मरते ही वहां की सारी मायानगरी समाप्त हो गई और जितने लोगों को उसने गुलाम बना रक्खा था, वे सभी आजाद हो गये। अराल ने उन सभी को आजादी की खुशखबरी सुनाई और अपने-अपने घर जाने को कहा। उन लोगों ने अराल को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और अपने घरों को चल पड़े।

अराल जब अपने पिता के पास पहुंचा, तो उसने इतनी देर लगाने का कारण पूछा। अराल ने उसे सारी बात बता दी।

"चलो, अच्छा हुआ कि तुमने उस मायावी अजदहे को खत्म कर दिया।" अराल का पिता खुश होता हुआ बोला।

"लेकिन पिताजी, उसी के साथ मेरी मायावी विद्याएं भी समाप्त हो गईं।"

"कोई बात नहीं। हमारे पास बहुत पैसा है। हमलोग इसी से कोई व्यापार करेंगे और मौज से रहेंगे।" कहते हुए अराल के पिता ने अपने बेटे को सीने से लगा लिया। •

तीन भाई

तुर्गनेव एक बूढ़ा आदमी था। बड़े ही उदार दिल का। उसके पास धन-सम्पत्ति की भी कमी न थी। लेकिन इसके बावजूद उसे तनिक भी घमण्ड न था। जब भी कहीं कोई प्राकृतिक आपदा आती, वह उन पीड़ितों की खुलकर मदद करता। यही कारण था कि लोग उसकी बहुत इज्जत किया करते थे।

लोगों का तो यहां तक कहना था कि तुर्गनेव के पास कोई जादुई शक्ति भी है जिसकी वजह से कभी उसके पास रुपये-पैसों की कमी नहीं रहती है। लेकिन तुर्गनेव इस बात के पूछने पर हंसकर जवाब टाल जाता। यही कारण था कि लोगों की यह धारणा मजबूत हो जाती थी।

तुर्गनेव साल में एक बार लम्बी यात्रा पर निकलता। न तो वह अपने साथ कोई सवारी लेता और न कोई सामान। बस छड़ी उठाई और निकल पड़ा। इस तरह उसे घूमने में मजा आता था। एक तो इस तरह की यात्रा में तरह-तरह के लोगों से मुलाकात हो जाती थी, दूसरे, उसे बहुत कुछ जानने को भी मिलता था। साथ-ही-साथ रास्ते

में ऐसे जरूरतमंद भी मिलते, जिनकी सेवा करके तुर्गनेव को बहुत सुख मिलता।

हालांकि तुर्गनेव काफी बूढ़ा हो चला था, उसका शरीर भी कमजोर हो गया था और ज्यादा दूर उससे पैदल चला भी नहीं जाता था, लेकिन इसके बावजूद वह हिम्मत नहीं हारा था। उसे अपनी इच्छा-शक्ति पर पूरा विश्वास था और लोगों की दुआओं पर भरोसा। इसलिए न तो उसे चोर-डाकुओं का कोई खतरा रहता था और न ही मौत से डर रहता था।

वह इस बार भी साल के अंत में अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। इस बार ठण्ड भी कुछ ज्यादा पड़ रही थी। ऊपर से तुर्गनेव का स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा न था। पर उसे इन सब बातों की परवाह ही कहां थी!

एक गांव को पार कर जब तुर्गनेव एक कस्बे में पहुंचा, तो वहां पर कुछ समय के लिए उसे रुकना पड़ा। पिछली रात को ही वहां पर एक बड़ा सा पेड़ गिर पड़ा था, जिसके कारण एक परिवार के चार लोगों की मृत्यु हो गई थी। इसके अलावा उन लोगों का खाने का सामान भी उसी में बर्बाद हो गया था।

उस बदकिस्मत परिवार में एक किसान अपने बूढ़े मां-बाप, पत्नी और तीन लड़कों के साथ रहता था। संयोग से उस दुर्घटना में किसान, उसकी पत्नी और बूढ़े मां-बाप मारे गये थे। बचे थे सिर्फ तीनों लड़के। तुर्गनेव ने लड़कों के सहयोग से उनके घर वालों का क्रिया-कर्म किया और उन्हें अपने साथ लेकर यात्रा पर निकल पड़ने का विचार किया।

पहले तो तुर्गनेव ने उन्हें समझाया कि वे अपना गांव न छोड़ें। पर उन लोगों ने कहा कि अब हमारा यहां पर बचा ही कौन है, जो हम उसके पास रहें! इसके अलावा वहां रहने पर उन्हें अपने मां-बाप और दादा-दादी का दुःख भी सतायेगा। इसीलिए तीनों ने फैसला

था कि वे तुर्गनेव के साथ यात्रा करेंगे। इससे उन्हें जीवन के अनुभव प्राप्त होंगे ही, दुःख भी कम हो जायेगा।

चारों लोग यात्रा पर चल दिये। जंगलों, गावों, कस्बों को पार करते हुए वे आगे बढ़ते रहे। तुर्गनेव जहां कहीं भी जाता, उसके जानने वाले उसे मिल जाते और उसकी खूब आव-भगत करते। एक-दो घण्टे वहां पर विश्राम करने के बाद वे पुनः अपनी यात्रा पर निकल पड़ते।

चलते-चलते वे एक नगर में पहुंचे। नगर के किनारे ही एक सुन्दर-सी हवेली बनी हुई थी। हवेली के चारों ओर सैनिक पहरा दे रहे थे।

उस भव्य इमारत के पास ही एक मनोहर रथ आकर रुका। रथ में से एक सुन्दर सी राजकुमारी उतरी और हवेली के अंदर चली गई।

यह देखकर बड़ा भाई चुप न रह सका। वह बोला, "बाबा, यह मकान कितना बढ़िया है। अगर यहां रहने को मिल जाये, तो बड़ा अच्छा हो।"

तुर्गनेव उसकी ओर देखकर मुस्कराया, "क्या तुम इस राजकुमारी से शादी करना चाहते हो?"

"चाहने से क्या होता है, बाबा?" बड़ा लड़का बोला, "और फिर इतनी सुंदर लड़की से कौन शादी करना न चाहेगा?"

"ठीक है, इसमें कौन-सी बड़ी बात है। आओ, मैं तुम्हारी इस लड़की से शादी कराए देता हूं। तुम यहीं पर आराम से रहो।" कहता हुआ तुर्गनेव तीनों भाइयों को लेकर उस हवेली के मालिक के पास पहुंचा।

हवेली का मालिक उस इलाके का राजा था। तुर्गनेव को देखते ही उसने श्रद्धा से अपना सिर झुका लिया। तुर्गनेव ने जब उसकी लड़की की शादी की बात कही, तो वह बोला, "यह तो मेरे लिए सौभाग्य का विषय होगा कि मैं आपकी इच्छा पूरी करूं।"

तीनों लड़के यह देखकर हैरान रह गये। उस दिन उन लोगों ने वहीं पर अपना डेरा डाला। बाद में बड़े लड़के की शादी उस राजकुमारी से हो गई। तुर्गनेव ने लड़के को आशीर्वाद दिया और कहा, "देखो बेटे, यह दुनिया चार दिन की है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करूंगा कि तुम मजे से रहो। लेकिन कभी तुम अपनी औकात मत भूलना।"

उसके बाद उसने दोनों भाइयों को साथ लिया और आगे चल पड़ा।

कुछ दूर चलने के बाद तुर्गनेव ने दोनों भाइयों से पूछा, "यदि तुम लोग चाहो तो अपने भाई के साथ ही रह सकते हो। मैं वापस उसके पास लौट चलता हूं।"

"नहीं, हम आपके साथ ही चलेंगे।" दोनों भाइयों ने जवाब दिया।

"जैसी तुम लोगों की मर्जी।" उसने कहा और आगे बढ़ चला।

चलते-चलते वे लोग एक कस्बे में पहुंचे। वहां पर एक जमींदार रहता था। जमींदार ने उन लोगों की बड़ी आवभगत की और रात में ठहरने के लिए एक बढ़िया से कमरे में बिस्तर लगवा दिये। तीनों लोगों ने खाना खाया और लेट गये। थके तो वे थे ही, जल्दी ही नींद आ गई।

सुबह मंझले भाई की आंख जल्दी खुल गई। जैसे ही वह हाथ-मुंह धोने के लिए कमरे से बाहर निकला, उसकी नजर जमींदार की लड़की पर पड़ गई। कुछ ही दूरी पर खड़ी वह अपने बाल सुखा रही थी। तभी उस लड़की ने भी इसे देख लिया और वह शर्मा कर अपने कमरे में चली गई।

उसी समय पीछे से तुर्गनेव भी आ गया। उसने मंझले भाई के चेहरे के भाव पढ़ लिये। वे उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोले, "तुम दोनों की जोड़ी बहुत अच्छी रहेगी।"

उनकी बात सुनकर मंझला भाई शर्मा गया। वह तो स्वयं यही

चाहता था। अतः कुछ न बोला। हाथ-मुंह धोने के बाद तुर्गनेव जमींदार के पास पहुंचा और उससे सारी बात कही। जमींदार उसके लिए सहर्ष तैयार हो गया। इस प्रकार जमींदार की लड़की के साथ मंझले भाई की शादी हो गई।

"देखो बेटे, जीवन ईश्वर की दी हुई एक बहुत बड़ी दौलत है। रुपया-पैसा तो इधर से आता है, उधर से चला जाता है। इसलिए तुम कभी अपनी औकात मत भूलना।" कहकर तुर्गनेव ने उसे आशीर्वाद दिया और छोटे भाई को साथ लेकर आगे बढ़ गया।

कस्बे के बाहर जाने पर वह छोटे भाई से बोला, "यदि तुम चाहो, तो अपने भाई के पास रह सकते हो। हम लोग उसके पास वापस लौट सकते हैं।"

"बाबा, जीवन आगे बढ़ने का नाम है। एक बार जब कदम आगे बढ़ गये, तो पीछे क्या लौटना!" छोटे लड़के ने जवाब दिया।

उसका उत्तर सुनकर तुर्गनेव का चेहरा खिल उठा। मन-ही-मन उसने उस लड़के को ढेरों आशीर्वाद दिये और अपनी राह पर चल पड़ा।

चलते-चलते वे लोग एक गांव के पास पहुंचे। गांव के किनारे ही एक छोटा सा कुंआ था। उस कुंए पर एक लड़की पानी भर रही थी। जैसे ही उस लड़की ने बूढ़े तुर्गनेव को देखा तो झुक कर अभिवादन किया और बोली, "बाबा, आप कहां जाना चाहते हैं? इस समय तो शाम हो गई है। ऐसे में आप कहां भटकेंगे? यदि आप चाहें, तो हमारी झोपड़ी में विश्राम कर सकते हैं।"

लड़की की बात सुनकर तुर्गनेव का चेहरा खिल उठा। अतः उसने उस लड़की के घर ठहरने का निश्चय किया। वह लड़की उन्हें लेकर अपने घर गई और अपने मां-बाप से परिचय कराया। लड़की के मां-बाप उन लोगों से मिलकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उन लोगों

का यथेष्ट स्वागत किया और बड़ी श्रद्धा के साथ चटनी-रोटी परोसी।

तुर्गनेव ने छोटे लड़के के साथ चटनी-रोटी बड़े शौक से खायी और उन लोगों के लिए भगवान से प्रार्थना की।

रात में अचानक तुर्गनेव की नींद टूटी। उसने सुना, दो लोग आपस में कुछ बातें कर रहे हैं। तुर्गनेव को आश्चर्य हुआ कि इतनी रात में कौन और क्या बात कर रहे हैं? सो वह उन लोगों की बातें सुनने लगा।

बातें करने वाले लड़की के मां-बाप थे। पिता कह रहा था, "मेरी भी हार्दिक इच्छा होती है कि तीर्थ करने जाऊं और लोगों की सेवा करूं। लेकिन जबतक बेटी की शादी नहीं हो जाती, हमारे हाथ-पैर बंधे हैं।"

"हां, आप ठीक कहते हैं। भगवान करे, जल्दी से हमारी बेटी का विवाह किसी अच्छे लड़के से हो जाये। फिर हमारे ऊपर कोई भार न रहे और हम आराम से तीर्थ-यात्रा का सुख उठा सकें।" लड़की की मां ने अपने पति का समर्थन किया।

उन लोगों की बात सुनकर तुर्गनेव मुस्करा पड़ा। उसने छोटे लड़के की ओर एक बार देखा और फिर करवट बदल कर सो गया।

अगले दिन तुर्गनेव ने लड़की के पिता से शादी की बात चलायी। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उसने तुरन्त मंजूरी दे दी। और इस प्रकार छोटे लड़के की भी शादी सम्पन्न हो गई।

तुर्गनेव ने राहत की सांस ली। उसने छोटे लड़के को आशीर्वाद देते हुए कहा, "अच्छा बेटे, अब मैं चलता हूं, भगवान तुम्हें परिश्रम का उचित फल दें और इतनी सद्बुद्धि कि तुम कभी अपनी औकात न भूलो।"

इसके बाद तुर्गनेव ने सबसे विदा ली और अपनी अज्ञात मंजिल की ओर चल पड़ा।

लड़की के मां-बाप की भी यह हार्दिक इच्छा थी कि वे तीर्थ-यात्रा कर दुनिया देखें। इसलिए उन लोगों ने अपना घर बेटी और दामाद के हवाले किया और उनके सुखी जीवन की कामना करते हुए घर से प्रस्थान किया।

तुर्गनेव लगभग एक साल तक इधर-उधर घूमता रहा। इस बीच उसने सारी दुनिया देखी। तरह-तरह के लोगों से मिलना हुआ और बहुत-कुछ सीखा। एक दिन अचानक उसे तीनों भाइयों का ख्याल आया। वह सोचने लगा, पता नहीं वे लोग किस हाल में होंगे ! और वह उनसे मिलने के लिए चल पड़ा।

सबसे पहले वह बड़े भाई के पास पहुंचा। उसका ससुर तबतक मर चुका था और अब वह स्वयं वहां का राजा था। जिस समय तुर्गनेव उसके पास पहुंचा, वह अपने दरबार में बैठा था। तुर्गनेव सीधा चलता हुआ उसके सामने जा पहुंचा।

"कैसे हो बेटे?" तुर्गनेव ने पूछा, "मुझे पहचाना, मैं वही...।"

लेकिन उसकी बात पूरी होने से पहले ही वह चिल्ला पड़ा, "ऐ बूढ़े, तू यहां कैसे आ गया? चल, भाग यहां से। मैं तुझ जैसे लोगों को पसंद नहीं करता।"

"अरे बेटे, इतनी जल्दी मुझे भूल गये? अभी एक साल पहले की ही तो बात है, जब...।" तुर्गनेव ने उसे समझाना चाहा।

"अरे, तू तो बोलता ही चला जा रहा है।" वह चिल्लाया, "कोई है यहां, इस बूढ़े को बाहर निकालो।"

तबतक दो दरबान वहां आ गये। उन लोगों ने तुर्गनेव को पकड़ा और बाहर ले जाने लगे।

यह देखकर तुर्गनेव को क्रोध आ गया। वह बोला, "मैंने तुझसे कहा था कि बेटा, कभी अपनी औकात मत भूलना, लेकिन तूने मेरी बात भुला दी। भगवान तुझे इसका फल देगा।"

और तभी चमत्कार हो गया। एकाएक वहां पर बिजली सी कौंधी और वह महल धूल में मिल गया। राजा बना लड़का एकदम से जमीन पर आ गिरा और उसके शरीर पर फफोले नजर आने लगे।

"भगवान सबकुछ देखता है।" तुर्गनेव ने कहा और आगे की ओर चल दिया।

इसके बाद तुर्गनेव ने मंझले भाई के घर का रुख किया। मंझला भाई भी जमींदार के स्वर्ग सिधार जाने के कारण जमींदारी निभा रहा था। दिन भर उसका काम था किसानों से जबरन लगान वसूल करना। चाहे खेतों में फसल हुई हो या न हुई हो, इससे कोई मतलब नहीं था। उसे बस लगान चाहिए, चाहे वह सीधे तरीके से निकले, या फिर घर के बर्तनों को बेचकर।

तुर्गनेव जब उसके पास पहुंचा, वह लगान वसूलने के लिए अपने लठैतों के साथ गांव की ओर जाने वाला था। तुर्गनेव को देखकर उसने समझा कि यह भी कोई किसान है, जो लगान देने आया है। वह उसी स्वर में बोला, "ऐ बूढ़े, लगान लाया कि नहीं, या ऐसे ही शक्ल दिखाने चला आया?"

"बेटे, मैं तुर्गनेव...।" उसने उसे याद दिलाया, " शायद तुमने मुझे पहचाना नहीं। मैंने ही तुम्हारी शादी...।"

"अबे, लगान देने आया है या शादी करवाने?" मंझले भाई को गुस्सा आ गया, "मुझे लगान चाहिए और अगर लगान न हो, तो अपनी बेटी की शादी मुझसे कर दे, सब माफ कर दूंगा।"

यह सुनते ही तुर्गनेव का गुस्सा सातवें आसमान पर जा पहुंचा। पर वह बोला कुछ नहीं, केवल अपनी नजरें आसमान को उठा दीं।

अगले ही पल एक बिजली-सी कड़की और पास ही में खड़ा एक पेड़ उसके ऊपर आ गिरा। पेड़ के गिरने से मंझले भाई की खोपड़ी फट गई और देखते-ही-देखते उसके प्राण-पखेरू उड़ गये।

"भगवान सबकुछ देखता है।" तुर्गनेव बड़बड़ाया, "उसके यहां देर है, अंधेर नहीं।" और वह आगे की ओर चल पड़ा।

अब तुर्गनेव की मंजिल थी छोटे भाई का घर। पता नहीं, वह कैसा है? कहीं वह भी तो इन जैसा नहीं हो गया? उसने सोचा और कदमों की रफ्तार बढ़ा दी।

छोटा भाई उस समय अपनी झोपड़ी के बाहर बैठा हाथ-पांव धो रहा था। जैसे ही उसने तुर्गनेव को देखा, दौड़कर उससे लिपट गया। वह आदरपूर्वक उसे झोंपड़ी में ले गया और खूब आवभगत की।

छोटे भाई का व्यवहार देखकर तुर्गनेव को राहत मिली। लेकिन उसने आजमाने के लिए कहा, "बेटा, अब मेरी मृत्यु करीब है। पीठ का घाव जिस दिन फटा, बस उसी दिन मेरी मृत्यु हो जायेगी। इसीलिए तुमसे मिलने आ गया था।"

"कैसे हुआ आपकी पीठ में घाव?" छोटे भाई ने पूछा, "वह कैसे ठीक होगा? बताइए, मैं पूरा प्रयत्न करूंगा।"

"अगर कोई युवक अपना ताजा खून मुझे पिला दे, तो वह घाव ठीक हो जायेगा।"

तुर्गनेव के कहने पर छोटे भाई ने तुरंत चाकू उठाया और अपने हाथ में चीरा लगा दिया। उसके हाथ से झर-झर खून बहने लगा। यह देखकर तुर्गनेव गद्‌गद् हो गया। वह बोला, "मैं तो तुम्हारी परीक्षा ले रहा था बेटे, और मुझे खुशी है कि तुम इस परीक्षा में खरे उतरे।"

और अगले ही पल फिर चमत्कार हुआ। छोटे भाई ने जहां पर अपना हाथ काटा था, वह एकदम से जुड़ गया और जितना खून उसका जमीन पर बह गया था, वह जमा होकर पारस पत्थर में बदल गया।

तुर्गनेव ने पारस उठा कर छोटे भाई को देते हुए कहा, "यह तुम्हारी श्रद्धा का फल है बेटे। लो इसे अपने पास रक्खो और सुखपूर्वक अपना

जीवन बिताओ।''

उसके बाद तुर्गनेव ने उसे आशीर्वाद दिया और अपनी मंजिल पर निकल पड़ा। उसका काम खत्म हो चुका था। तीनों भाइयों को अपने-अपने किए के अनुसार फल प्राप्त हो चुका था। ●

जादुई ढोल

किसी जमाने में एक गांव के किनारे एक शिकारी रहा करता था। दिनभर वह धनुष-बाण लिए जंगल-जंगल मारा-मारा फिरता। जो भी शिकार उसे हाथ लगता, हाट में ले जाकर उसे बेच देता। इस प्रकार उसका गुजारा चलता था।

एक दिन की बात है। शिकारी जंगल में गया हुआ था। उस रोज मौसम खराब था। शिकारी इधर-उधर भटकता रहा, लेकिन उसके हाथ में कोई शिकार नहीं आया। दोपहर में उसे एक खरगोश दिखाई दिया। शिकारी ने खरगोश पर जैसे ही निशाना साधा, वह पास की झाड़ी में छिप गया। तभी मौसम एकदम से बिगड़ गया और ओले पड़ने लगा।

शिकारी ने जल्दी से एक बड़े-से पेड़ के नीचे शरण ली। काफी देर तक पानी के साथ ओले गिरते रहे। ओलों की मार से पेड़ों के पत्ते झड़ गये और पशु-पक्षी घायल हो गये।

बरसात रुकने पर शिकारी आगे बढ़ा। तभी उसकी नजर सामने के पेड़ पर पड़ी। पेड़ के पत्ते झड़ जाने के कारण वह एकदम मुंडा हो गया था। कुछ ही ऊंचाई पर पेड़ में एक घोंसला बना था, जिसमें

एक उकाब का बच्चा बैठा हुआ था। ओलों की मार से वह बुरी तरह घायल हो चुका था और कराह रहा था।

जैसे ही शिकारी ने उकाब पर निशाना साधा, उसकी भी निगाह शिकारी पर जा पड़ी। वह बड़ी विनम्रतापूर्वक शिकारी से बोला, "शिकारीभाई, मैं पक्षियों के राजा उकाब का बेटा हूं। तुम मुझे मत मारो, मैं तुम्हारे काम आऊंगा।"

उकाब की बात सुनकर शिकारी ने धनुष की डोर ढीली कर दी। लेकिन तभी उसे अपने घर का ध्यान आया। आज उसे कोई शिकार नहीं मिला था, और अगर वह शाम तक कोई शिकार नहीं ले गया, तो उसे तथा उसके घरवालों को भूखा सोना पड़ेगा।

शिकारी ने दुबारा निशाना साधा। उकाब इस बार कराहते हुए बोला, "भाई, मैं बहुत कष्ट में हूं। ओलों की मार से मेरा शरीर घायल हो गया है। कृपा करके मेरी जान बख्श दो, मैं इसका बदला चुका दूंगा।"

शिकारी ने फिर निशाना हटा लिया, लेकिन फिर उसने सोचा कि अगर मैंने इसे नहीं मारा, तो यह स्वयं ही मर जायेगा, और उसने तिवारा निशाना तान दिया।

"मुझ पर दया करो शिकारीभाई, मैं तुम्हारे बेटे के समान हूं। क्या तुम अपने घायल बेटे को इसी तरह निशाने पर लगा सकते हो?"

इस बार उकाब की बात शिकारी पर असर कर गई। उसके सीने में भी दिल था। उसने पेड़ पर चढ़ कर उकाब को नीचे उतारा और अपने घर लाया, ताकि उसका उपचार किया जा सके।

शिकारी के उपचार से धीरे-धीरे उकाब एकदम ठीक हो गया। अब उसका घाव पूरी तरह से भर चुका था और वह ठीक तरह से उड़ भी लेता था। वह बोला, "शिकारीभाई, अब मैं पूरी तरह से स्वस्थ हो चुका हूं। मैं तुम्हारे इस अहसान के कारण अपने आपको दबा

आ महसूस कर रहा हूं। इसलिए मैं चाहता हूं कि तुम मेरे साथ ार घर चलो, ताकि मैं तुम्हारे इस अहसान का बदला चुका दूं।''

''लेकिन मैं तुम्हारे साथ कैसे चल सकता हूं? तुम तो आसमान में उड़ते हो और मैं जमीन पर चलता हूं।'' शिकारी ने कहा, ''तुम्हारी चाल के आगे तो मैं चींटी की तरह लगूंगा।''

''क्या तुम्हें हमारी बहादुरी के किस्से नहीं मालूम?'' उकाब ने पूछा, ''हमारे पंखों में इतनी शक्ति है कि हम दो मनुष्यों को अपने पंजों में दबा कर उड़ जायें।''

''लेकिन, कहीं अगर मैं गिर गया तो?''

''तुम तो नाहक ही डर रहे हो।'' उकाब ने दिलासा दिया, ''तुम्हें तो मालूम है कि एक बार हमारे भेस के एक पक्षी ने हाथी को अपने पंजों में दबा लिया था। फिर तुम तो कितने हल्के हो! तुम्हारे जैसे चार आदमियों को मैं बड़ी आसानी से लेकर उड़ सकता हूं।''

''ठीक है, लेकिन जरा मजबूती से पकड़ना।'' शिकारी ने सतर्क किया।

इस प्रकार उकाब ने शिकारी को अपने पंजों में दबाया और अपने देश को उड़ चला।

रास्ते में शिकारी को न जाने क्या सूझा कि वह पूछ बैठा, ''अच्छा, एक बात बताओ, जब मैंने तुम पर निशाना साधा था, तो तुम्हें कैसा लगा था?''

इस पर उकाब कुछ न बोला। उसने अपनी उड़ान और तेज कर दी और बादलों के बराबर जाकर शिकारी को एकदम से छोड़ दिया। शिकारी तेजी से नीचे की ओर गिरने लगा। लेकिन इससे पहले कि वह जमीन पर गिरता, उकाब ने उसे रास्ते में ही पकड़ लिया।

''बताओ, तुम्हें कैसा लगा था?'' उकाब ने पूछा।

''मुझे तो लगा, जैसे मेरी जान ही निकल गई।'' शिकारी ने जवाब

दिया।

''जब तुमने पहली बार मुझपर निशाना साधा था, तो मुझे भी ऐसा ही लगा था।''

उसके बाद उकाब ने दुबारा ऊंची उड़ान भरी और बादलों के पास जाकर शिकारी को छोड़ दिया, और जैसे ही वह गिरने को हुआ, उसने उसे पकड़ कर पूछा, ''बताओ तुम्हें इस बार कैसा लगा था?''

''मुझे लगा जैसे मैं मर ही गया।'' शिकारी ने जवाब दिया।

तीसरी बार उकाब ने फिर वैसा ही किया और पूछा, ''बताओ, इस बार कैसा लगा था?''

''इस बार तो लगा, जैसे मेरी हड्डी-पसली एक हो गई।''

''मुझे भी ऐसा ही लगा था, जब तीसरी बार तुमने निशाना साधा था।'' उकाब ने कहा और आगे उड़ चला।

तबतक उकाब अपने देश की सीमा में पहुंच चुका था। उसने शिकारी को समझाते हुए कहा, ''मैं तुम्हें पहले अपने भाई के घर ले चलता हूं। तुम उससे कहना कि अगर तुम ज़ादुई ढोल मुझे दो, तो मैं तुम्हारे भाई को तुमसे मिला सकता हूं।''

उसके बाद उकाब जमीन पर उतर आया और एक ओर छिप गया। शिकारी अकेले ही उकाब के भाई के घोंसले के पास पहुंचा। उसमें एक बहुत बड़ा पक्षी लेटा हुआ था। शिकारी को देखते ही वह बोला, ''ऐ भाई, क्या तुमने किसी उकाब पक्षी को देखा है, जो मेरी तरह विशाल और बहादुर हो?''

''हां, अगर तुम जादुई ढोल मुझे दे दो, तो मैं तुम्हें उससे मिला सकता हूं।'' शिकारी ने जवाब दिया।

''जादुई ढोल देने से तो अच्छा है कि वह न आये।'' वह बड़बड़ाया और घोंसले में लेट कर धूप सेंकने लगा।

शिकारी उकाब के पास लौट आया और उसे सारी बात कह

सुनायी। उकाब ने कहा, "कोई बात नहीं। अब मैं अपनी बहन के पास ले चलता हूं। शायद वहां बात बन जाये।"

उड़ते-उड़ते उकाब वहां पहुंचा और शिकारी को वैसा ही करने को कहा, किन्तु उसने भी मना करते हुए कहा, "रहने दो भाई, मैं जादुई ढोल तुम्हें नहीं दे सकती।"

निराश शिकारी उकाब के साथ उड़ चला और उकाब के पिता के पास पहुंचा, लेकिन उसने भी जादुई ढोल देने से इनकार कर दिया।

अन्त में उकाब शिकारी को अपनी मां के पास ले गया और वैसा ही करने को कहा।

उकाब की मां ने भी शिकारी से अपने बेटे के बारे में पूछा, और जब शिकारी ने उसके बदले में जादुई ढोल मांगा, तो वह बोल पड़ी, "हां-हां, क्यों नहीं। तुम मेरे बेटे को ला दो, मैं तुम्हें जादुई ढोल दे दूंगी।"

यह सुनकर शिकारी खुश हुआ। उसने जोर से उकाब को पुकारा। अगले ही पल वह सामने हाजिर हो गया। उकाब की मां ने अपने बेटे को अपने पंखों में छिपा लिया और खूब प्यार किया।

यह सब देखकर शिकारी अभिभूत हो उठा। तभी उकाब की मां ने शिकारी के सामने जादुई ढोल लाकर रख दिया, और उसे समझाते हुए बोली, "इसे अपने घर जाकर बजाना, तुम्हारी जिंदगी का काया-पलट हो जायेगा। लेकिन खबरदार, कहीं रास्ते में ऐसा मत करना, वरना तुम हाथ मलने के सिवा कुछ न कर पाओगे।"

शिकारी ने हामी भरी और ढोल लेकर अपने घर को चल पड़ा। चलते-चलते शिकारी थक गया और एक जगह बैठ कर आराम करने लगा। अचानक उसके मन में ख्याल आया कि ऐसा इस ढोल में क्या है, जो उकाब ने घर पर ही बजाने को कहा था? काफी देर तक वह विचार करता रहा। पर उसे कुछ समझ में नहीं आया और उसने उसे

बजा दिया।

ढोल के बजते ही एक जोरदार आवाज हुई और उसमें से भेड़ें निकलने लगीं। देखते-ही-देखते इतनी भेड़ें वहां इकट्ठी हो गईं कि उन्हें संभालना मुश्किल हो गया। जैसे ही शिकारी भेड़ों को एक ओर से इकट्ठा करता, वे दूसरी ओर भागने लगतीं और इस चक्कर में सारी भेड़ें इधर-उधर हो गईं। उसके हाथ एक भी भेड़ न लगी।

शिकारी को बड़ा दुःख हुआ कि उसने क्यों उकाब का कहना नहीं माना। किन्तु पछताने से क्या होने वाला था ! अतः वह वहीं पर बैठकर रोने लगा।

तभी वहां एक आदमी आया। देखने में वह बड़ा खतरनाक लगता था। उसने जानवरों की खाल के वस्त्र पहन रक्खे थे और गले में हड्डियों की माला। वह शिकारी के पास आकर बोला, "अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारी सारी भेड़ें इस ढोल के अंदर दुबारा बंद कर सकता हूं।"

शिकारी ने हैरान होकर उस आदमी की ओर देखा। वह आगे बोला, "लेकिन बदले में तुम्हें एक चीज मुझे देनी होगी।"

"क्या?" शिकारी ने पूछा।

"तुम्हारे बाद तुम्हारे घर में जो आया है।"

"मुझे मंजूर है।" शिकारी ने शर्त मान ली और उस डरावने आदमी ने सारी भेड़ें वापस उस ढोल में जमा करके उसे बंद कर दिया। यह देखकर शिकारी एकबार फिर हैरान हुआ। भला इतनी सारी भेड़ें इस ढोल में कैसे आ गईं?

शिकारी उस आदमी के साथ जब अपने घर पहुंचा, तो उसे पता चला कि उसके घर में बेटे का जन्म हुआ है। यह जान कर उसे बहुत दुःख हुआ, क्योंकि वह अनजाने में अपने बेटे को किसी और को सौंप चुका था।

पहले तो शिकारी ने उस आदमी से तरह-तरह से अनुनय-विनय की कि वह उसके बेटे को न ले जाये, लेकिन जब वह किसी तरह से तैयार न हुआ, तो शिकारी ने अपने दिल पर पत्थर रख कर अपने बेटे को उसे सौंप दिया।

वह अनजान व्यक्ति और कोई नहीं एक खतरनाक जादूगर था। जादूगर ने उस लड़के को अपनी एक नौकरानी को सौंप दिया और उसका पालन-पोषण करने का हुक्म दिया।

धीरे-धीरे करके पूरे अट्ठारह साल बीत गये। एक दिन शिकारी के बेटे को अपने असली मां-बाप के बारे में पता चला। तब उसने जादूगर से अपने मां-बाप के पास जाने की इजाजत मांगी।

जादूगर लड़के की बलि देकर एक बड़ी सिद्धि पाना चाहता था। इसलिए जब उसने सुना कि लड़का अपने घर जाना चाहता है, तो उसने उसके सामने एक असंभव-सी शर्तें रख दीं। वह बोला, "अगर तुम मेरी तीन शर्तें पूरी कर दो, तो मैं तुम्हें अपने घर जाने दूंगा।"

"बताइये, आपकी कौन-सी शर्तें हैं।" लड़के ने बड़े विश्वास से कहा, "मैं उन्हें पूरा करने की कोशिश करूंगा।"

जादूगर बोला, "नदी किनारे एक बड़ा-सा मैदान है। वहां पर तुम कुछ बीज बोओ। रात भर में ही वे बीज उग कर बड़े हो जायें और उनके फल काटकर तुम मेरे सामने खाने के लिए लाओ।"

कहते हुए जादूगर ने लड़के के हाथ में कुछ बीज थमा दिये।

जादूगर की अनोखी शर्त सुनकर लड़का पूरी तरह से निराश हो गया था। फिर भी उसने बीज ले लिए और नदी किनारे जाकर बैठ कर रोने लगा।

जिस जगह पर बैठ कर लड़का रो रहा था, उसके पास ही एक बड़ा सा पत्थर था, जिसमें जादूगर ने अपनी लड़की को कैद कर रक्खा था। जब उस लड़की ने रोने की आवाज सुनी तो लड़के से रोने का

कारण पूछा। लड़के ने सबकुछ सच-सच बता दिया।

इस पर वह लड़की बोली, "तुम चिन्ता मत करो। सुबह तक सारा काम हो जायेगा। हां, तुम जरा जल्दी उठ जाना, ताकि उन फलों को काटकर जादूगर को दे सको।"

लड़की का आश्वासन पाकर लड़का चुप हुआ और वहीं पर बैठे-बैठे सो गया। सुबह जब वह जगा, तो उसने सामने लगे हुए पेड़ों को देखा, जिनमें फल लटक रहे थे। यह देखकर वह प्रसन्न हो उठा और उसमें से कुछ फलों को काटकर तैयार कर दिया।

सुबह जब जादूगर वहां आया, तो वह उन फलों को देखकर हैरान रह गया। गुस्से में उसने उन फलों को एक ओर फेंक दिया और बोला, "कल सुबह तक तुम्हें इस पहाड़ को काटकर नदी को दूसरी ओर बहाना होगा, ताकि वहां तक जहाज आ सके और उसमें इन पेड़ों की लकड़ियां ले जा सकें।"

हुक्म देकर जादूगर वहां से चला गया। शिकारी के लड़के ने लड़की को सारी बात बतायी। इसपर उसने फिर आश्वासन दिया और कहा कि काम हो जायेगा।

जैसे ही सूरज पहाड़ियां के पीछे छुपा, जादूगर की लड़की ने इशारा किया और देखते-ही-देखते पहाड़ दो टुकड़ो में बंट गया और वहां पर नदी का पानी बहने लगा। नदी के साथ ही वहां पर एक पानी का जहाज भी आ गया और पेड़ों की लकड़ियां अपने-आप कट कर जहाज पर जमा होने लगीं।

जादूगर उसे देखकर बोला, "वाह, यह तो तुमने कमाल कर दिया। अब मेरी आखिरी शर्त बाकी है। अगर तुमने उसे भी पूरी कर दिया, तो तुम अपने मां-बाप के पास जा सकोगे।"

"अब मुझे और क्या करना होगा?" शिकारी के लड़के ने पूछा।

"अब तुम्हें सुनहरा खरगोश पकड़ कर लाना होगा। यदि तुम कल

शाम तक उसे पकड़ कर लाने में सफल हो गये, तो तुम्हारी इच्छा पूरी कर दूंगा।'' कहता हुआ जादूगर वहां से चला गया।

लड़की ने जब लड़के के मुंह से तीसरी शर्त सुनी, तो वह बोली, ''यह तो थोड़ा मुश्किल काम है। लेकिन कोशिश करते हैं। मेरा मन कहता है, हम इसमें भी सफल हो जायेंगे।''

रात में जब जादूगर सो गया, तो लड़का उसकी लड़की के पास पहुंचा और बोला ''चलो, अब हम चलते हैं।''

''हां, पहले मुझे इस चट्टान के बाहर निकालो।'' लड़की ने कहा।

''लेकिन कैसे निकालूं?''

लड़की ने अपने निकलने की तरकीब लड़के को बताई। लड़के ने वैसा ही किया, और अगले ही पल लड़की आजाद हो गई। फिर दोनों पहाड़ पर उस दिशा में चल दिये, जहां सुनहरा खरगोश रहता था।

थोड़ी दूर चलने पर एक छोटी-सी गुफा दिखाई दी। लड़की बोली, '' मैं इसके अंदर जाती हूं और अंदर से खरगोश को बाहर निकालूंगी। हो सकता है, वह बाहर निकलते समय अपना रूप बदल ले। इसलिए बाहर जो भी चीज निकले, तुम उसे पकड़ लेना।''

लड़के ने सहमति जताई तो जादूगर की लड़की गुफा के अंदर घुस गई। लड़का गुफा के मुहाने के पास बैठकर सुनहरे खरगोश के निकलने का इंतजार करने लगा।

कुछ ही देर में गुफा के अंदर से एक सांप निकला। लड़का उसे देखकर एकदम डर कर पीछे हट गया। सांप चुपचाप अपने रास्ते पर आगे बढ़ गया।

थोड़ी देर में जादूगर की लड़की बाहर आ गई। उसने पूछा, ''क्यों, कोई बाहर निकला था?''

''खरगोश तो नहीं निकला, परन्तु एक सांप जरूर निकला था।

मैं उसे देखकर डर गया और वह चला गया।'' लड़के ने जवाब दिया।

''ओह, वही तो खरगोश था। तुमने बहुत बड़ी गलती कर दी।'' लड़की नाराज होते हुए बोली, ''चलो, अब दूसरी जगह देखते हैं। शायद वहां हमें मिल जाये।''

दोनों दूसरी जगह पहुंचे। लड़की फिर लड़के को समझाकर अंदर चली गई। थोड़ी देर बाद गुफा के बाहर एक बूढ़ा निकला। उसके सारे शरीर पर कोढ़ था और उसके जिस्म से बदबू आ रही थी। उसे देखकर लड़के ने अपनी नाक बन्द कर ली और पीछे हट गया। बूढ़ा भी आगे चला गया।

अंदर से जब जादूगर की लड़की लौट कर आयी और उसे सारी बात पता चली, तो बहुत गुस्सा हुई, ''बड़े बेवकूफ हो तुम! मैंने तुमसे कहा था कि चाहे जो कोई बाहर निकले, तुम उसे पकड़ लेना। लेकिन तुमने इतना अच्छा मौका गंवा दिया। अब हम कभी सुनहरे खरगोश को नहीं पकड़ पायेंगे।''

''तो फिर? अब मैं क्या करूं?'' लड़के ने उदास होकर पूछा।

''अब तो एक ही रास्ता है।''

''क्या?''

''हम लोग यहां से भाग जायें।''

और फिर वे दोनों सर पर पांव रख कर एक ओर को भाग खड़े हुए।

सुबह जब जादूगर सो कर उठा, तो उसने शिकारी के लड़के और अपनी लड़की को गायब पाया। उसे समझते देर नहीं लगी कि वे भाग गये हैं। वह फौरन अपने जादुई डण्डे के पास गया और उससे सारा हाल पूछा। जादुई डण्डे ने उसे सबकुछ बता दिया। जादूगर गुस्से से कांपा और अपने एक नौकर को उन दोनों को पकड़ लाने का हुक्म दिया।

नौकर ने मालिक का हुक्म बजाया और उस ओर उड़ चला, जिधर वे दोनों गये थे। उधर जादूगर की लड़की को पता चल गया कि उसका पीछा किया जा रहा है। इसलिए उसने शिकारी के लड़के को समझाते हुए कहा कि मैं किला बन जाती हूं और तुमको पहरेदार बना देती हूं। जब कोई यहां आकर तुमसे पूछे कि तुमने दो लोगों को इधर से जाते हुए देखा है, तो तुम कह देना कि जब यह किला बन रहा था, तब एक लड़की और लड़का इधर से गुजरे थे।"

लड़के ने सहमति में सिर हिलाया और लड़की किले में बदल गई। उसी के साथ लड़का भी पहरेदार बन गया और मुस्तैदी से पहरेदारी में लग गया।

थोड़ी देर में वहां पर जादूगर का नौकर आ गया। उसने पहरेदार बने लड़के से पूछा, "क्या तुमने इधर से जाते हुए किसी को देखा है?"

"हां, जब यह किला बन रहा था, तब एक लड़का और एक लड़की इधर से गये थे।" उसने जवाब दिया।

"ओह, मैं आज की बात पूछ रहा हूं और तुम सौ साल पहले की बात बता रहे हो।" जादूगर के नौकर ने जवाब दिया और वापस जादूगर के पास लौट गया।

जादूगर ने जब अपने नौकर की बात सुनी, तो वह गुस्से से कांपते हुए बोला, "मूर्ख, वह पहरेदार ही वह लड़का और वह किला मेरी बेटी थी। इस बार मैं उन्हें पकड़ने जाता हूं। देखता हूं, वे कैसे बचते हैं।"

और जादूगर उस ओर उड़ चला।

इस बार लड़की को फिर पता चल गया कि उसका पीछा किया जा रहा है। उसने लड़के को नदी बना दिया और स्वयं मछली बन कर उसमें तैरने लगी।

थोड़ी देर में जादूगर वहां आ गया। नदी को देखकर बोला, ''ओह, मुझसे चालाकी! अभी तुम लोगों को मजा चखाता हूं।

कहते हुए जादूगर मगरमच्छ बन गया और मछली बनी अपनी बेटी का पीछा करने लगा। लड़की ने जब देखा कि अब वह पकड़ी जाने वाली है, तो वह भी पानी बन गई। यह देखकर जादूगर और गुस्सा हो गया और नदी के पानी को पीने लगा।

जादूगर पानी पीता गया, पीता गया। देखते-ही-देखते उसने इतना पानी पी लिया कि उसका पेट फट गया और वह मर गया।

यह देखकर लड़की अपने असली रूप में आ गई और लड़के को भी वापस उसने उसके असली रूप में कर दिया। उसके बाद शिकारी का लड़का जादूगर की लड़की को लेकर अपने घर गया।

अपने लड़के से मिलकर शिकारी और उसकी पत्नी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने बेटे को अपने सीने से लगा लिया और उसे जीभर कर प्यार किया। जब उन्हें यह पता चला कि जादूगर की लड़की ने ही उनके लड़के को छुड़ाने में मदद की है, तो उन्होंने उसके साथ अपने बेटे की शादी कर दी। सब हंसी-खुशी से रहने लगे। ●

शेर बना राजा

बहुत समय पहले की बात है– उस समय की, जब जानवरों का कोई राजा नहीं हुआ करता था। सभी अपनी मर्जी के मालिक थे और जैसा चाहते थे, वैसा किया करते थे। लेकिन जानवरों का कोई अपना राजा न होने के कारण जंगल में बड़ी अराजकता फैली हुई थी। हिंसक और ताकतवर जानवर अपने मनमाने व्यवहार के कारण आतंक फैलाए हुए थे। इस वजह से छोटे और शाकाहारी जीव बड़े परेशान रहते थे।

एक बार एक खरगोश धूप का आनंद लेने के लिए जंगल के बाहर निकल गया। पास में ही एक गांव था और गांव में उस समय वहां के राजा पधारे हुए थे। राजा के साथ घोड़ों और सैनिकों का एक जुलूस चल रहा था और सभी लोग उसकी जय-जयकार कर रहे थे। खरगोश उसे देखकर घबरा गया और जंगल में अपनी मां के पास लौट आया।

खरगोश की मां अपनी झाड़ी में आराम कर रही थी। उसने मां से उस सबके बारे में पूछा, तो वह बोली, ''वह आदमी उन सबका

राजा है। सभी लोग उसका हुक्म मानते हैं और उसका सम्मान करते हैं।''

''वाह !'' खरगोश अपने ही आप बड़बड़ाया, ''कितनी शान होती है राजा की ! सभी उसका हुक्म मानते हैं ! और रहता भी है वह कितने ठाठ से।''

पर अगले ही क्षण उसकी विचारधारा थम गई। वह मां से बोला, ''पर हमारा राजा कौन है?''

''बेटे, जानवरों में कोई राजा नहीं होता।'' मां ने जवाब दिया, ''सभी अपने मन के राजा हैं।''

पर खरगोश इतने से सन्तुष्ट न हुआ। वह झाड़ी से बाहर निकल गया और अपने दोस्तों से राजा के बारे में बताने लगा। साथ ही साथ वह सबसे यह भी कहता कि हमारा राजा क्यों नहीं हो सकता?

धीरे-धीरे यह बात सभी जानवरों में फैल गई। सभी छोटे जानवर चाहते थे कि कोई हमारा भी राजा हो, जो हमारे साथ न्याय करे और जिससे जंगल में सब डरें। सो उन्होंने यह फैसला किया कि हम जंगल के सभी जानवरों की सभा बुलाकर अपने राजा का चुनाव करें।

जब शेर के कानों में यह बात पहुंची, तो वह सोचने लगा कि मैं जंगल का सबसे ताकतवर जीव हूं, मुझे ही राजा बनना चाहिए। पर उसे मालूम था कि शाकाहारी और छोटे जानवर उसका समर्थन नहीं करेंगे, इसलिए उसने एक चाल चली।

शेर की एक खास दोस्त थी, लोमड़ी। वह बहुत चालाक थी। शेर उसी के पास पहुंचा और उससे अपने मन की बात कही। लोमड़ी ने शेर की बात बहुत ध्यान से सुनी और उसे आश्वासन दिया कि वह उसे राजा बनाने के लिए जी-जान एक कर देगी।

जंगल के बीचोंबीच जब जानवरों की फौज इकट्ठी हुई तो वह नन्हा खरगोश आगे आया और सबका अभिवादन करने के बाद

बोला, "प्यारे जंगल-वासियो, हम सबकी यह इच्छा है कि हमारे बीच से कोई ऐसा जीव चुना जाये, जो हमारा राजा बने। वह जंगल में शान्ति और व्यवस्था बनाये रक्खे और सभी लोग उसका हुक्म मानें।"

खरगोश की बात का सभी लोगों ने स्वागत किया। इससे पहले कि कोई अन्य जानवर उसपर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता, हाथी अपनी जगह पर खड़ा हो गया। वह अपनी सूंड से सभी का अभिवादन करते हुए बोला, "दोस्तो, मैं खरगोश महोदय के इस निर्णय का स्वागत करता हूं। आप सब इस बात से अच्छी तरह परिचित हैं कि जंगल में कितनी अव्यवस्था फैली हुई है। इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि कोई ऐसा राजा चुना जाये, जो समझदार और शक्तिशाली हो। तभी जंगल में शान्ति और व्यवस्था बन सकती है।"

हाथी ने एक पल के लिए भीड़ पर नजर दौड़ाई। सभी लोग उसकी बात बड़े ध्यान से सुन रहे थे। उसने अपनी बात आगे बढ़ाई, "वैसे आप लोग अगर चाहें, तो मैं भी इस पद को संभाल सकता हूं, पर फैसला सबकी मर्जी से होना चाहिए। इसलिए आप लोग गम्भीरता-पूर्वक इस बात पर विचार कर लें और तब अपना निर्णय दें।"

हाथी की बात सुनकर शेर एकदम से क्रोधित हो गया। उसे लगा, यह मेरा पद हथिया लेगा। वह गुर्राते हुए बोला, "नहीं सज्जनो, आप लोग इसकी बातों में मत आइये। यह तो एक आलसी और निकम्मा जानवर है। न यह तेज दौड़ सकता है, न दुश्मन को पकड़ सकता है। इसलिए आप लोग मुझे अपना राजा चुनिये, जिससे मैं दुश्मनों का सफाया कर सकूं।"

शेर की बात समाप्त होते ही वहां बड़ा शोर होने लगा। कुछ लोग शेर के समर्थक थे, कुछ हाथी के। वे आपस में लड़ने लगे। लोमड़ी को लगा कि अगर ऐसा ही होता रहा, तो सारी बात बिगड़ जायेगी।

इसलिए वह सबको चुप कराती हुई बोली, "दोस्तो, इस तरह लड़ने-भिड़ने से कोई हल नहीं निकलने वाला। अच्छा हो, अगर हम मिल बैठकर इस बात को तय कर लें।"

लोमड़ी की बात सुनकर सभी लोग शान्त हो गये। वे आपस में विचार करने लगे कि किस प्रकार राजा का चुनाव हो। तभी एक हिरण आगे आकर बोला, "अगर हम गुप्त मतदान के द्वारा राजा का चुनाव करें तो ज्यादा अच्छा रहेगा।"

"गुप्त मतदान?" लोमड़ी ने प्रश्न किया, "वह कैसे?"

"देखिये यह सामने बलूत के पेड़ में आप कोटर देख रहे हैं?" हिरण ने सामने की ओर इशारा किया, "जो लोग हाथी को राजा बनाना चाहते हों, वे कोटर में काला कंकड़ डालें और जो लोग शेर को राजा बनाना चाहते हों, वे लाल कंकड़ डालें। बाद में उन कंकड़ को गिन लिया जाये। अगर लाल कंकड़ ज्यादा हों, तो राजा शेर हो और अगर काले कंकड़ ज्यादा हों, तो राजा हाथी को बना दिया जाये।"

"हां, यह ठीक है।" सभी जानवरों ने एक साथ कहा।

"लेकिन...।" लोमड़ी ने कुछ कहना चाहा, पर वह बीच में ही अटक गई। उसे डर था कि इस तरह तो हाथी जीत जायेगा, क्योंकि जंगल में छोटे और शाकाहारी जीव अधिक हैं, इसलिए वे हाथी को ही जितायेंगे।

शेर भी इसी सोच में था। पर वह कर भी क्या सकता था? जब सारे जंगल वाले एक तरफ हों, तो वह अकेला क्या करता? सो उसने लाचारी से लोमड़ी की ओर देखा, जैसे पूछ रहा हो कि अब क्या किया जाये?

अचानक लोमड़ी के दिमाग में एक उपाय सूझ गया—बेईमानी। और वह मुस्करा पड़ी। लेकिन शेर उसके मन की बात समझ न पाया

और उसे लगा कि अब वह कभी राजा नहीं बन पायेगा।

निश्चित समय पर लाल और काले कंकड़ इकट्ठे किये गये। कंकड़ों की निगरानी के लिए दो भालू उसके पास तैनात कर दिये गये, जिससे कोई एक से ज्यादा कंकड़ न उठा सके। फिर मतदान शुरू हुआ। एक-एक करके जानवर आता और ढेर में से एक कंकड़ ले जाकर कोटर में डाल देता।

पास में ही हाथी और शेर भी बैठे हुए थे। हाथी यह देखकर बहुत खुश हो रहा था कि काले कंकड़ ज्यादा पड़ रहे हैं। लेकिन शेर का मन डूब रहा था। उसे अपनी आशाओं पर पानी फिरता नजर आ रहा था। साथ ही साथ उसे लोमड़ी पर गुस्सा भी आ रहा था। अगर उसने लोमड़ी पर विश्वास न किया होता, तो उसे इस तरह से अपनी हार के मातम में शामिल न होना पड़ता। पर फिलहाल इसके सिवा किया भी क्या जा सकता था? इसलिए वह चुपचाप बैठा हुआ तमाशा देख रहा था।

किन्तु लोमड़ी इस बात से पूरी तरह संतुष्ट थी। उसे तो पक्का विश्वास था कि मतदान में शेर ही जीतेगा, और जब उसका नम्बर आया, तो वह मतदान स्थल पर जाकर ठहर गई। धीरे से उसने अपनी जेब में पहले से रक्खे हुए लाल कंकड़ निकाले और उन्हें कोटर में उड़ेल दिये।

"ऐ लोमड़ी, तुम वहां पर क्या कर रही हो?" भालू ने उसे वहां पर ज्यादा देर खड़े देखकर पूछा।

"कुछ नहीं, मैं देख रही थी कि कहीं कोटर भर तो नहीं गया।" कहती हुई वह वापस अपनी जगह पर आकर बैठ गई।

मतदान का समय सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक रक्खा गया था। जैसे ही सूरज छिपा, गणना का काम चालू हो गया, और जब परिणाम निकला, तो सभी लोग चौंके बिना न रह सके। कोटर में निकले पत्थरों

की संख्या बराबर थी।

अब क्या हो? सवाल ज्यों-का-त्यों था। आखिर हाथी और शेर में से कौन राजा बने?

"यह तो फिर वही बात हो गयी कि राजा कौन?" मतगणना का परिणाम देखकर हाथी बोला, "मेरी समझ से मैं ही जंगल का राजा हो सकता हूं, क्योंकि मैं शेर से ज्यादा ताकतवर और समझदार हूं।"

"अ-ह-हा, बड़े आये राजा बनने वाले!" शेर ने आगे बढ़कर उसकी बात काटी, "जरा अपना शरीर तो देखो, कितना मोटा और भद्दा। तुम तो किसी को पकड़ कर दण्ड भी नहीं दे सकते। दुश्मन राज्य में अपनी मनमानी करेगा और तुम उसे सजा भी नहीं दे पाओगे! राजा तो बुद्धिमान, सुंदर और फुर्तीला होना चाहिए, जैसे कि मैं। मैं न तो सिर्फ तेज ही भाग सकता हूं बल्कि दुश्मन को पकड़ कर दण्ड भी दे सकता हूं। इसलिए राजा मुझे बनना चाहिए।"

लोमड़ी को एक बार फिर हस्तक्षेप करना पड़ा। वह बोली, "देखिये, आप लोग इस जंगल के सम्मानित जीव हैं। आप लोगों को इस तरह से लड़ना अच्छा नहीं लगता। अच्छा हो, यदि आप लोग दौड़ की प्रतियोगिता रक्खें। जो उसमें जीत जाये, उसे राजा मान लिया जाये।"

हाथी ने लोमड़ी का प्रतिवाद किया, "यह कौन-सी बात हुई? तुम्हें अच्छी तरह से मालूम है कि मैं दौड़ नहीं सकता और फिर राजा तो सिंहासन पर बैठकर राज्य चलाता है, दौड़ने-भागने का काम तो उसके नौकर करते हैं।"

हाथी का उत्तर सुनकर लोमड़ी निरुत्तर हो गई। तभी एक हिरण आगे आकर बोला, "अच्छा, यह तो आप लोग मानते ही हैं कि राजा को शक्तिशाली होना चाहिए, जिससे वह अपने दुश्मनों को सजा

दे सके।''

''हां, राजा को शक्तिशाली होना चाहिए।'' हाथी बोला।

''राजा तो शक्तिशाली ही बनता है।'' शेर ने भी उसका समर्थन किया।

''तो फिर क्यों न आप लोगों के बीच कुश्ती रख दी जाये? जो जीते, वही राजा।'' हिरण ने मुस्कराकर कहा।

''हां, यह ठीक है।'' हाथी ने हामी भरी।

''तो ठीक है, कल सुबह आप दोनों के बीच कुश्ती होगी। उसी में राजा का फैसला भी हो जायेगा।'' लोमड़ी ने निर्णायक स्वर में कहा।

''तब फिर हम सब कल सुबह कुश्ती देखने के लिए हाजिर हो जायेंगे।'' हिरण ने प्रसन्नता-पूर्वक अपनी सम्मति दी।

''अरे, नहीं-नहीं।'' लोमड़ी ने उसे टोका, ''जंगल के राजा पद के दावेदार, क्या आम जनता के सामने लड़ेंगे? क्या इससे राजा के पद का अपमान नहीं होगा?''

''तो फिर?'' हिरण को कुश्ती न देख पाने का दुःख हुआ।

''कल कुश्ती तो होगी, पर तुम लोगों के आने से पहले। तुम लोग सूर्योदय के बाद आओगे और तबतक कुश्ती का निर्णय हो चुका होगा।''

लोमड़ी की बात से सन्तुष्ट होकर सभी लोग अपने-अपने घरों को चले गये।

लेकिन शेर चिन्तित था। वह बोला, ''पर मैं यह कुश्ती नहीं जीत सकता। अगर वह मोटा मेरे ऊपर एक बार भी गिर पड़ा, तो मेरा कचूमर निकल जायेगा।''

''आप उसकी चिन्ता न करें।'' लोमड़ी ने शेर के कान के पास अपना मुंह ले जाकर कहा, ''जीत तो आपकी ही होगी। बस आप

देखते जाइये।"

और फिर दोनों अपने-अपने रास्ते चल पड़े।

हाथी को अपनी जीत का पूरा भरोसा था। यह बात उसके समर्थक भी जानते थे कि शेर उसे कुश्ती में हरा नहीं सकता, इसलिए वे सभी बहुत खुश थे। उन लोगों ने हाथी को पहले ही शुभकामनाएं देनी शुरू कर दीं और हाथी अपने साथियों के साथ देर रात तक मौज मनाता रहा।

लोमड़ी को यह मालूम था कि हाथी एक बलूत के पेड़ के नीचे सोता है। वह पेड़ बहुत विशाल और घना था। इसीलिए हाथी ने उसे अपना निवास-स्थान बना रक्खा था। अंधेरा होते ही लोमड़ी तीन भेड़ियों को लेकर उस पेड़ के पास पहुंची। उसके आदेश पर उन भेड़ियों ने तने को कुतरना शुरू कर दिया। इस प्रकार थोड़ी ही देर में पेड़ का आधे से ज्यादा भाग कट गया। सिर्फ थोड़ा-सा भाग ही शेष बचा। अब यदि उसे कोई धीरे से भी धक्का देता, तो वह तुरन्त गिर जाता।

देर रात में हाथी जब अपने साथियों के पास से लौट कर आया, तो वह तने के पास ही लेट गया। उस रोज वह बुरी तरह से थक गया था। इसलिए लेटते ही सो गया और स्वप्नलोक में जा पहुंचा।

पेड़ से कुछ दूरी पर शेर अपने साथियों के साथ इसी बात का इन्तजार कर रहा था। हाथी के सोते ही वे लोग छिपने के स्थान से निकल कर बाहर आ गये और पेड़ के पास जा पहुंचे। शेर ने मुस्कराकर एक बार सोये हुए हाथी को देखा और फिर आगे की कार्यवाही के लिए भेड़ियों को इशारा कर दिया। शेर का इशारा पाकर तीनों भेड़ियों ने एक लम्बी-सी छलांग लगाई और उछलकर बलूत के पेड़ पर ठोकर मारी। पेड़ का तना तो पहले ही कट चुका था, इसलिए वह उस झटके को सह न सका और भरभरा कर हाथी के ऊपर गिर पड़ा।

पेड़ का तना इतना भारी था कि हाथी उस वजन को संभाल न सका। एक जोरदार चीख उसके मुंह से निकली और फिर उसने वहीं पर अपना दम तोड़ दिया। शेर ने तुरन्त भेड़ियों को वहां से चले जाने को कहा। वे आदेश पाते ही नौ-दो ग्यारह हो गये। उसके बाद शेर ने राहत की सांस ली, क्योंकि उसने अपने प्रतिद्वंद्वी को ठिकाने लगा दिया था।

पेड़ से हुई आवाज को सुनकर सारे जंगल के जीव एकदम से घबरा गये और वे उस जगह पर जा पहुंचे, जहां पेड़ टूटा था। लेकिन जब उन्होंने वहां पर मृत हाथी को देखा, तो भौंचक्के रह गये।

शेर ने बड़ी शान से अपनी मूछों पर हाथ फेरते हुए कहा, ''मैंने इससे कहा था कि सुबह ही कुश्ती लड़ना, पर यह माना नहीं और अपना अंत करवा बैठा। मैंने इसे इतनी कस कर ठोकर मारी कि यह पेड़ समेत जमीन पर धराशायी हो गया। अब मैं इस जंगल का राजा हूं।''

किसी भी जानवर को शेर की बातों पर यकीन नहीं हो रहा था। लेकिन भला किसकी जान फालतू थी, जो वह उसका विरोध करके अपनी मौत को बुलाता। जब बेचारा हाथी न टिक सका, तो उनकी क्या बिसात! अतः उन लोगों ने बुझे मन से शेर को अपना राजा स्वीकार कर लिया।

अगले दिन शेर का राजा के रूप में राज्याभिषेक किया गया। इस अवसर पर जंगल के तमाम जीव-जन्तु वहां इकट्ठा हुए और उन्हें दावत दी गई। सभी ने वहां पर शेर को अपना राजा स्वीकारा और उसके आदेशानुसार चलने की प्रतिज्ञा की। शेर ने अपने राज-काज को ठीक ढंग से चलाने के लिए चार सहायक भी नियुक्त किये। पूर्वी क्षेत्र की सहायक बनी लोमड़ी, पश्चिमी क्षेत्र का अधिकारी बनाया गया चीता और उत्तरी तथा दक्षिणी क्षेत्र की कमान दो भेड़ियों

को सौंपी गई।

क्षेत्राधिकारी बनने के बाद लोमड़ी की तो बात ही कुछ और हो गई। अब वह शान से चलती और किसी से सीधे मुंह बात न करती। धीरे-धीरे उसका स्वभाव बिगड़ता गया और वह एकदम खूंखार हो गई। एक दिन तो उसने हद ही कर दी। उस रोज पानी बरस रहा था। अपने शिकार की तलाश में वह काफी देर से भटक रही थी, लेकिन जब कोई शिकार न पा सकी, तो एक खरगोश की झाड़ी में घुस गई।

उस झाड़ी में खरगोश और उसके बच्चे आराम कर रहे थे। लोमड़ी जबरदस्ती उनके पास बैठ गई और उन्हें घूर-घूर कर देखने लगी। थोड़ी देर में खरगोश के बच्चों को भूख लगी। खरगोश असमंजस में पड़ गया कि क्या करे? बच्चों को बाहर लेकर जाना ठीक नहीं, और यहां लोमड़ी के सामने भी नहीं छोड़ा जा सकता था। आखिर उसे बच्चों को अकेला छोड़ कर जाना ही पड़ा, और जैसे ही लोमड़ी को मौका मिला, उसने खरगोश के बच्चों को चट कर दिया।

खरगोश जब लौट कर आया, तो वह अपने बच्चों को न पाकर हैरान रह गया। उसने लोमड़ी से पूछा, "बहन, मैं अपने बच्चों को यहां छोड़ कर गया था? वे कहां गये?"

"मैं क्या तुम्हारी नौकर हूं, जो तुम्हारे बच्चों की देखभाल करती फिरूं?" लोमड़ी ने टका-सा जवाब दे दिया।

खरगोश को पक्का यकीन था कि उसके बच्चे लोमड़ी ने ही खाये हैं। वह बहुत दुःखी हुआ और रोता हुआ शेर के पास पहुंचा। उसने सिसक कर उसे अपना दुखड़ा सुनाया और लोमड़ी को दण्ड देने के लिए कहा।

शेर ने अपने दूत को भेजकर लोमड़ी को बुलाया और उससे अपनी सफाई पेश करने को कहा। लोमड़ी बोली, "हुजूर, यह खरगोश मुझ

पर निराधार आरोप लगा रहा है। मैंने तो आजतक इसके बच्चों को देखा भी नहीं।''

खरगोश ने उसका प्रतिवाद किया और तरह-तरह से अपनी बात रक्खी, लेकिन शेर ने उसकी बातों पर यकीन न किया और उलटे लोमड़ी पर झूठा आरोप लगाने के जुर्म में उसे दो सौ उठक-बैठकों की सजा सुना दी।

शेर का अन्याय देखकर सभी शाकाहारी और छोटे जीव भड़क उठे और वे उसपर पथराव करने लगे। जानवरों का गुस्सा देखकर शेर का खून भी खौल उठा। उसने अपने साथियों को आवाज दी कि वे इनका मुकाबला करें। इस प्रकार देखते-ही-देखते वहां पर एक युद्ध छिड़ गया।

परन्तु शाकाहारी और छोटे जीव शेर के साथियों के सामने ज्यादा देर तक टिक नहीं सके। लड़ाई में उनकी बुरी तरह से हार हुई और वे अपनी जान बचाकर भाग खड़े हुए। कहते हैं, तभी से शेर उन जीवों से चिढ़ा हुआ है और वह उनसे अपना बदला लेने की ताक में रहता है, और जंगल के शाकाहारी और छोटे जीव तभी से शेर और उसके साथियों से नफरत करते हैं। इसीलिए वे उनसे दूर रहते हैं। •

छुटकू

बहुत पहले की बात है। एक गांव में अबोलो नाम का एक किसान रहा करता था। उसका एक बेटा था। देखने में वह एकदम नाटा था, इसीलिए उसे सब लोग प्यार से 'छुटकू' कहा करते थे।

एक दिन की बात है। छुटकू अपने पिता के साथ खेत में जुताई का काम कर रहा था। अचानक एक जगह पर हल की नोक एक बड़ी चट्टान में फंस गई। अबोलो ने बहुत कोशिश की, लेकिन वह उस चट्टान को खिसका तक न सका।

"बेटे, तुम यहीं रुको, मैं कुछ लोगों को बुलाकर लाता हूं।" अबोलो ने कहा और एक ओर चला गया।

छुटकू कुछ देर तो चुपचाप बैठा रहा, लेकिन फिर वह धीरे से उठा और चट्टान के पास जा पहुंचा। उसने चट्टान के एक सिरे को पकड़ा और उसे उखाड़ डाला। तबतक उसका पिता कुछ लोगों को लेकर वहां आ गया। उन लोगों ने जब छुटकू को चट्टान उठाते देखा, तो हैरान रह गये। उन्होंने छुटकू की प्रशंसा की और फिर अपने-अपने कामों में लग गये।

जुताई करते समय छुटकू को एक कोने में फटी-पुरानी चुन्नी मिली। मिट्टी में दबी होने के कारण वह बुरी तरह से गल गई थी। उसे देखकर उसने अपने पिता से पूछा, ''पिताजी, यह किसकी चुन्नी है?''

चुन्नी को देखकर पिता की आंखें भर आईं। वह बोला, ''बेटे, यह तेरी बड़ी बहन की चुन्नी है।''

''बड़ी बहन!'' छुटकू हैरान रह गया, ''लेकिन आपने तो कभी नहीं बताया कि मेरी कोई बहन भी थी। मेरी बहन कहां है?''

''बेटे, बहुत पहले की बात है। तब तू पैदा भी नहीं हुआ था।'' अबोलो ने छुटकू को बताते हुए कहा, ''उस समय मेरे चार बेटे थे और एक बेटी। चारों बेटे दिन भर खेत में काम करते और बहन उन्हें खाना पहुंचाती। लेकिन एक दिन जब वह खाना पहुंचाने गई तो फिर लौटकर नहीं आयी। तुम्हारे भाइयों ने खेत के पास अग्निदानव के पैरों के निशान देखे, इससे उन्होंने अंदाजा लगाया कि उसे अग्निदानव उठाकर ले गया है। उसके बाद चारों भाइयों ने अपनी बहन को खोजने का फैसला किया। उन्होंने अपने साथ हथियार लिए और खोज में निकल पड़े। लेकिन उस दिन वे ऐसे गये कि अबतक नहीं लौटे। पता नहीं, वे अबतक जीवित भी हैं या नहीं?''

कहते-कहते अबोलो की आंखें बह चलीं।

अपने भाई-बहनों का समाचार सुनकर छुटकू को बहुत दुःख हुआ। वह बोला, ''पिताजी, मुझे विश्वास है कि वे लोग अभी तक जिन्दा हैं। इसलिए मैं उन्हें खोजने जाऊंगा।''

''लेकिन बेटे, जब तुम्हारे चार-चार भाई अपनी बहन को न खोज सके, तो तुम उन्हें क्या खोजोगे?'' पिता ने समझाया।

लेकिन छुटकू ने तो जिद ही पकड़ ली। घर पहुंचने पर उसने खाना-पीना तक छोड़ दिया। मां-बाप ने बहुत समझाया, लेकिन वह

अपनी जिद पर अड़ा रहा और अंत में उन्हें आज्ञा देनी ही पड़ी।

छुटकू ने एक बड़ा-सा लोहे का टुकड़ा लोहार को देकर कहा कि तुम इसकी मेरे लिए तलवार बना दो। लोहार ने दो दिन में तलवार बनाकर छुटकू को सौंप दी। वह तलवार इतनी भारी थी कि उसे चार आदमी मिल कर बड़ी मुश्किल से उठा पाते थे। छुटकू ने तलवार को एक हाथ से उठाया और आसमान में उछाल दिया। देखते-देखते वह आसमान में जाकर गायब हो गई।

"यह तलवार कल शाम तक लौट कर आयेगी। तब आप मुझे जगा दीजियेगा।" उसने अपने पिता से कहा और सोने के लिए चला गया।

दूसरे दिन शाम को छुटकू को जगाया गया। थोड़ी ही देर में तलवार आती हुई नजर आयी और जैसे ही वह जमीन पर गिरने को हुई, उसने अपनी मुट्ठी उसके आगे कर दी।

और अगले ही क्षण तलवार दो टुकड़ों में टूट गई। वह बोला, "यह भी कोई तलवार है। इससे अग्निदानव का मुकाबला नहीं किया जा सकता। हमें तो इससे मजबूत तलवार चाहिए।"

लोहार ने दो दिन में उससे भी मजबूत तलवार बना दी। छुटकू ने उसे फिर आसमान में उछाला और सोने चला गया। दूसरे दिन जब तलवार नीचे गिरने लगी, तो उसने फिर से अपनी मुट्‌ठी आगे कर दी। लेकिन इस बार तलवार नहीं टूटी। बस थोड़ी सी टेढ़ी हो गई। छुटकू ने लोहार से उसे सीधा करवाया और अग्निदानव की तलाश में निकल पड़ा।

चलते-चलते छुटकू एक जंगल में पहुंचा। जंगल में पहुंचकर उसे एक अजीब-सा निशान नजर आया। उसने सोचा कि यही अग्निदानव के पैरों के निशान होने चाहिए। वह उनका पीछा करते हुए चलने लगा।

कुछ देर में वह एक गुफा के सामने जा पहुंचा। छुटकू ने इधर-उधर देखा और फिर गुफा में घुस गया। सामने ही एक युवती पेड़ों में पानी डाल रही थी। वह छुटकू को देख कर बोली, "अरे भलेमानस, यहां क्या करने आये हो? यह तो अग्निदानव की गुफा है। तुम अपनी जान बचाना चाहते हो, तो यहां से भाग जाओ।"

"मैं अपनी जान बचाने नहीं, तुम्हें अग्निदानव के चंगुल से आजाद कराने आया हूं।" छुटकू ने जवाब दिया।

"अच्छा?" युवती बोली, "मगर अफसोस कि जब मेरे चार-चार भाई मिलकर अग्निदानव का मुकाबला न कर सके, तो तुम...।"

तभी अग्निदानव वहां आ गया। वह छुटकू को देखकर बोला, "ऐ चूहे, तेरी हिम्मत कैसे हुई यहां आने की ! मैं तुझे कच्चा चबा जाऊंगा।"

"कच्चा तो तभी चबायेगा, जब तू जिन्दा बचेगा।" कहते हुए छुटकू ने अपनी तलवार से दानव पर वार किया।

अग्निदानव एक ओर झुक गया और छुटकू का वार खाली गया। अब बारी दानव की थी। उसने अपना मुंह खोला, आग की बड़ी-सी लपट निकली और छुटकू की तरफ बढ़ी। लेकिन वह पहले से ही तैयार था। उसने जल्दी से बायीं ओर छलांग लगाई और अपने-आप को बचा लिया। लेकिन इस बार उसने एक पल की भी देर नहीं लगाई और अपनी तलवार अग्निदानव की ओर उछाल दी। तलवार नाचती हुई दानव के पास पहुंची और देखते-देखते उसकी गर्दन कट कर अलग हो गई।

दानव के मरते ही वहां पर जोर का धमाका हुआ और वह गुफा नष्ट हो गई। चारों ओर धुंआ-सा छा गया और जब धुंआ छंटा, तो छुटकू ने अपने सामने चार युवकों को खड़े देखा। उसे समझते देर न लगी कि ये उसके भाई हैं। लेकिन उसने उन लोगों को अपना

परिचय नहीं दिया और अपने साथ लेकर चल पड़ा।

चलते-चलते वे लोग एक मैदान में आये। काफी लम्बा रास्ता तय करने के कारण वे लोग बुरी तरह से थक गये थे, अतः वहीं बैठकर आराम करने लगे। छुटकू तो कुछ ज्यादा ही थका था। जैसे ही वह लेटा, उसे नींद आ गई।

अचानक चारों भाइयों ने जाने क्या सोचा कि उन्होंने छुटकू को एक पेड़ से बांध दिया और अपनी बहन को साथ लेकर घर लौट गये।

इधर छुटकू जब जगा, तो उसने स्वयं को पेड़ से बंधा पाया। यह देखकर उसे बहुत गुस्सा आया। उसने जोर का एक झटका दिया और पेड़ को उखाड़ डाला। फिर उसने जल्दी से रस्सियां खोलीं और अपने घर को चल पड़ा।

जब वह घर पहुंचा, तो अंधेरा हो चला था। अंदर उसके भाई आपस में बातें कर रहे थे। एक भाई बोला, "हम लोगों ने मिलकर अग्निदानव को मार डाला और अपनी बहन को छुड़ा लाये।"

यह सुनकर छुटकू को बहुत गुस्सा आया। उसने सोचा कि ऐसे घर में रहने से क्या फायदा! और वह वापस पहाड़ों की ओर चल पड़ा।

चलते-चलते वह एक पहाड़ी पर जा पहुंचा। वहां उसने एक आदमी को देखा, जो दो बड़ी-सी चट्टानों को खिसका रहा था। उसे देखकर छुटकू ने पूछा, "क्यों भाई, तुम यहां अकेले क्या कर रहे हो?"

"मेरा नाम पर्वतपलट है। मैं पहाड़ों को खिसका कर रास्ता बनाता हूं।" उसने जवाब दिया।

"मेरा नाम छुटकू है। क्या तुम मुझसे दोस्ती करोगे?" छुटकू ने पूछा।

"हां, क्यों नहीं।" दोनों ने हाथ मिलाया और फिर आगे की ओर

चल पड़े।

पहाड़ों को पार कर वे जंगल में पहुंचे। वहां पर उन्होंने देखा कि एक आदमी बलूत के पेड़ों को गाजर मूली की तरह उखाड़ रहा है। उसे देखकर छुटकू ने अपना सवाल दोहरा दिया, "क्यों भाई, तुम यह क्या कर रहे हो? क्या तुम हम लोगों से दोस्ती करोगे?"

"मेरा नाम पेड़ उखाड़ है।" वह व्यक्ति बोला, "मैं घर से अपनी किस्मत आजमाने निकला था, और ये पेड़ मैं इसीलिए उखाड़ रहा था, ताकि रास्ता बनाया जा सके।"

दोनों लोगों ने उससे हाथ मिलाया और आगे चल पड़े।

थोड़ी दूर चलने के बाद रास्ते में एक नदी पड़ी। नदी की चौड़ाई काफी थी। इसके अलावा उसमें बर्फ भी जमी हुई थी। ऐसे में उसे पार करना मौत को दावत देने के समान था। अतः वे लोग किसी पुल की तलाश में नदी के किनारे-किनारे चल पड़े।

अचानक उन्हें नदी के किनारे खड़ा एक बूढ़ा दिखाई दिया। जब वह दाईं ओर की मूंछे ऐंठता, नदी का पानी दो भागों में बंट जाता, और जब वह बायीं ओर की मूंछे ऐंठता, नदी फिर पहले की तरह बहने लगती।

"भले आदमी, तुम यह क्या कर रहे हो?" छुटकू ने उससे पूछा।

"नदी के उसपार जाने के लिए पानी को रोक रहा हूं।" उसने जवाब दिया।

"क्या तुम हमारे साथ किस्मत आजमाने चलोगे?"

"हां, क्यों नहीं? मैं भी इसी काम से निकला था।"

"लेकिन तुम्हारा नाम क्या है? हम तुम्हें किस नाम से पुकारेंगे?"

"मेरा नाम नदीपकड़ है।" उसने जवाब दिया।

फिर चारों लोगों ने आपस में परिचय किया और अपनी मंजिल की ओर चल पड़े। चलते-चलते वे लोग ऐसी जगह पर पहुंचे, जो

उन लोगों ने कभी नहीं देखी थी। पास ही एक झोपड़ी भी बनी थी। उन लोगों ने उसी में आराम करने का निश्चय किया और ठहर गये।

"पर्वतपलट, तुम यहां पर ठहरो, हम लोग शिकार करके लाते हैं।" छुटकू ने कहा और बाकी लोगों को साथ लेकर शिकार की तलाश में निकल गया।

जैसे ही वे लोग गये, पर्वतपलट लेटकर सो गया। अभी उसे सोये हुए ज्यादा देर भी नहीं हुई थी कि किसी ने दरवाजा खटखटाया।

"अरे, कौन है, जो मेरी नींद खराब करने आ गया? दरवाजा खुला हुआ है, चुपचाप अंदर आ जाओ और मुझे सोने दो।" पर्वतपलट ने लेटे-लेटे ही जवाब दिया।

दरवाजा खोलकर एक बूढ़ा अंदर आया। वह बूढ़ा एकदम नाटा था, लेकिन उसकी दाढ़ी जमीन पर लटक रही थी। उसने पर्वतपलट के सिर पर एक हाथ मारा और उसके बालों में गांठ लगाकर खूंटी पर टांग दिया। फिर उसने जो कुछ सामान वहां पर खाने-पीने का रक्खा था, सटक लिया और चुपचाप दरवाजे के बाहर निकल गया।

खूंटी पर लटका पर्वतपलट छटपटाता रहा। जब उसके साथी लौटकर आये, तो उन्होंने उसे छुड़ाया और खाना बनाकर खा-पीकर सो गये।

अगले दिन झोपड़ी में ठहरने की बारी बलूतउखाड़ की आई। जैसे ही वह सोया, वह बूढ़ा पुनः आ धमका, "दरवाजा खोलो।"

"तुम कोई यहां के राजा नहीं हो, जो मैं तुम्हारे लिए दरवाजा खोलूं।" बलूतउखाड़ ने जवाब दिया।

बूढ़ा फिर अंदर आया और उसने बलूतउखाड़ को भी खूंटी पर टांग दिया। उसके बाद उसने खाना-पीना साफ किया और चलता बना।

शिकार के बाद जब उसके साथी लौटे, तो वे हैरान रह गये। उन्होंने

उसे उतारा और खाना बनाने में लग गये।

तीसरे दिन नदीपकड़ झोपड़ी में ठहरा। उसके साथ भी वही सबकुछ हुआ और दाढ़ी वाला बूढ़ा उसे भी टांग कर चला गया।

चौथे दिन छुटकू झोपड़ी में रुका। जैसे ही वह सोने चला, आवाज आयी, "दरवाजा खोलो।"

छुटकू धीरे से उठा और दरवाजा खोल दिया। बूढ़ा यह देखकर हैरान रह गया। उस रहस्यमयी बूढ़े को देखकर छुटकू भी सावधान हो गया। जैसे ही बूढ़े ने छुटकू पर वार करना चाहा, उसने उसकी दाढ़ी पकड़ ली और बोला, "तुम कौन हो और क्या चाहते हो?"

लेकिन बूढ़ा बजाय जवाब देने के उसे उल्टा-सीधा कहने लगा। इसपर छुटकू को गुस्सा आ गया। वह बूढ़े को लेकर बाहर आया। बाहर एक बलूत का पेड़ था। उसने उस पेड़ को बीच से चीर कर बूढ़े की दाढ़ी उसमें फंसा दी और अंदर जाकर सो गया।

कुछ देर बाद जब उसके साथी लौटे, तो वे छुटकू को सही-सलामत देखकर हैरान रह गये। सबसे पहले चारों ने खाना खाया, फिर छुटकू ने उन लोगों को बूढ़े के बारे में बताया। फिर वह उस बूढ़े को दिखाने के लिए बाहर आया। पर वहां तो पेड़ ही गायब था। बूढ़ा अपनी दाढ़ी समेत उस पेड़ को उखाड़ ले गया था।

"इसका मतलब है कि वह बूढ़ा कोई महत्त्वपूर्ण आदमी है। हमें उसकी तलाश करनी चाहिए।" छुटकू ने सुझाव दिया।

सभी लोग बूढ़े की खोज में जुट गये। बूढ़ा जिस रास्ते से गया था, पेड़ के घिसटने के निशान उसपर बने हुए थे। वे लोग उन निशानों का पीछा करते एक कुएं के पास पहुंचे। वह एकदम सूखा कुआं था।

छुटकू ने अपने साथियों से चर्चा की और फिर अपनी कमर में रस्सा बांध कर कुएं में उतर गया।

कुएं के नीचे एक सुरंग जैसी थी। वह उस सुरंग में घुस गया।

कुएं के अंदर एक बड़ा-सा मैदान दिखाई दिया, जिसमें एक खूबसूरत महल बना हुआ था। महल के पास ही एक खूबसूरत लड़की टहल रही थी। जैसे ही उसने छुटकू को देखा, वह भागकर उसके पास आ गई और बोली, "तुम यहां से भाग जाओ, नहीं तो वह बूढ़ा जादूगर तुम्हें मार डालेगा।"

"मैं उसी की तलाश में यहां आया हूं और उसे मारकर ही यहां से जाऊंगा।" छुटकू ने जवाब दिया।

छुटकू की बात सुनकर वह लड़की उससे बहुत प्रभावित हुई। बोली, "अगर तुम सचमुच उसे मारना चाहते हो, तो पहले उसकी दाढ़ी काटना, नहीं तो तुम उसे कभी नहीं मार पाओगे।"

तभी वह बूढ़ा वहां आ गया। छुटकू को देखकर उसका खून खौल उठा। वह बोला, "चूहे, अब तू मरने के लिए तैयार हो जा। तेरी मौत ही तुझे यहां तक घसीट कर लाई है।"

दोनों लोग आपस में लड़ पड़े। कभी छुटकू बूढ़े को पटकता, कभी बूढ़ा छुटकू को। तभी छुटकू को उस लड़की की बात याद आ गई और उसने एक ही झटके में बूढ़े की दाढ़ी काट डाली। दाढ़ी कटते ही बूढ़ा जमीन पर गिर पड़ा और फिर देखते-देखते उसके प्राण पखेरू उड़ गये।

"मैं अन्जेलो द्वीप की राजकुमारी हूं। तुमने इस बूढ़े को मारकर मेरी जान बचायी, इसके लिए मैं तुम्हारी बहुत आभारी हूं।" उस लड़की ने छुटकू के पास आकर कहा।

छुटकू उस लड़की का परिचय पाकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने बूढ़े के महल का सारा खजाना बोरों में भरा और फिर राजकुमारी को साथ लेकर कुएं में जा पहुंचा। बाहर उसके साथी उसका इंतजार कर रहे थे। छुटकू ने पहले सोना-चांदी के बोरे रस्सी में बांध कर ऊपर पहुंचा दिये, फिर रस्सी के सहारे राजकुमारी को भी ऊपर पहुंचा

दिया। राजकुमारी को देखकर उन लोगों की नीयत बदल गई। उन लोगों ने छुटकू को कुएं में ही छोड़ दिया और सोना-चांदी लेकर राजकुमारी के साथ आगे बढ़ गये।

छुटकू को जब अपने दोस्तों का हाल पता चला, तो उसे बड़ा क्रोध आया। किसी तरह वह कुएं की दीवारों में उग आए पेड़ों के सहारे ऊपर तक पहुंचा और इधर-उधर देखने लगा, लेकिन उसके दोस्त कहीं भी नजर नहीं आये।

अचानक वहां पर ओले पड़ने लगे। छुटकू फौरन एक पेड़ पर चढ़ गया। पेड़ की एक डाल पर उकाब पक्षी का घोसला था, जिसमें उसके बच्चे आराम कर रहे थे। छुटकू को उन बच्चों पर दया आ गई और उसने अपने कोट से उन बच्चों को ढांक दिया, ताकि ओले उनके ऊपर न पड़ें।

तभी उन बच्चों की मां वहां आ गई। उसने जब छुटकू का यह प्यार देखा, तो गद्‌गद्‌ हो गई और उससे वहां पर आने का कारण पूछा। छुटकू ने उसे सारा हाल कह सुनाया।

उकाब पक्षी देखने में हाथी जितना विशाल था। वह बोला, "तुमने मेरे बच्चों की जान बचायी है, इसलिए तुम्हारी मदद करना मेरा फर्ज है। तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ, मैं तुम्हें उन लोगों तक पहुंचा दूंगी और साथ ही उन्हें सजा भी दूंगी।"

छुटकू यह सुनकर बहुत खुश हुआ। वह उकाब पक्षी की पीठ पर बैठ गया। वह उसे लेकर ऊंचे आसमान में उड़ने लगा और इधर-उधर देखने लगा। काफी दूरी पर वे लोग जाते हुए दिखाई दिये। उकाब पलक झपकते ही वहां पर जा पहुंचा और छुटकू को जमीन पर उतार दिया।

इतने विशाल पक्षी और छुटकू को देखकर उन तीनों धोखेबाजों का शरीर डर के मारे कांपने लगा। इससे पहले कि वे कुछ कहते,

उकाब ने एक झपट्टा मारा और तीनों को लेकर आसमान में उड़ गई। काफी ऊंचाई पर पहुंचकर उसने तीनों को वापस छोड़ दिया। जमीन पर गिरते ही तीनों की जान निकल गई।

छुटकू ने उकाब को धन्यवाद दिया और राजकुमारी को लेकर उसके राज्य में जा पहुंचा। वहां के राजा ने राजकुमारी को सकुशल देखा, तो वह खुशी से फूला न समाया। उसने छुटकू की खूब आवभगत की और राजकुमारी की इच्छानुसार उन दोनों की शादी कर दी। वे लोग वहां आनंद से रहने लगे। ●

सुनहरी मछली

सर्दी का मौसम था। चारों ओर बर्फ बिखरी हुई दिखाई दे रही थी। मकान की छतों से लेकर पेड़ों की डालों तक बर्फ का साम्राज्य फैला हुआ था। देखने में ऐसा लगता था, जैसे किसी ने एक विशाल सफेद चादर से सबकुछ ढक दिया हो।

ऐसे में एक झोपड़ी का दरवाजा धीरे से खुला। अंदर से एक पैंसठ वर्षीय बूढ़ा ओलोव बाहर निकला। बाहर ठण्डी हवाएं बड़ी तेजी से चल रही थीं। बूढ़े ने अपने शरीर को ढेर सारे कपड़ों के बीच छिपा रक्खा था। उन कपड़ों के ऊपर लगे असंख्य पेबन्द इस बात की गवाही दे रहे थे कि उस व्यक्ति की हालत अच्छी नहीं थी।

जैसे ही हवा का झोंका बूढ़े ओलोव से टकराया, उसकी हड्डियां तक कांप उठीं। एक पल के लिए उसका मन हुआ कि वह बाहर जाने का इरादा स्थगित कर दे, किन्तु यह तो उसका नियमित कार्य था। उसी के साथ उसकी रोजी जुड़ी हुई थी। अगर बाहर नहीं जाता, तो फिर घर का काम कैसे चलता?

ओलोव ने एक बार मन को मजबूत किया, सिर के टोपे को कानों तक खींचा, कंधे पर जाल डाला और नदी की तरफ चल पड़ा।

मछली पकड़ने का कार्य ओलोव को विरासत में मिला था। उसके

यहां यह कार्य सात पुश्तों से चला आ रहा था, फिर ओलोव ही क्या, उसके मोहल्ले के सभी व्यक्ति मछली पकड़ने का कार्य करते थे। ओलोव की अपने मोहल्ले में काफी प्रतिष्ठा थी और लोग उसे अपना सरदार मानते थे।

वैसे तो ओलोव की समाज में काफी धाक थी, किन्तु उसे एक ही दुःख था। उसके कोई संतान नहीं थी। बहुत पहले एक बेटी हुई थी, किन्तु कुछ ही दिनों में उसकी मृत्यु हो गई। ओलोव के माता-पिता भी बहुत पहले इस संसार से विदा हो चुके थे। इसलिए अब ओलोव और उसकी पत्नी बस दो जने साथ रहा करते थे।

कोई संतान न होने के कारण ओलोव की पत्नी आलिया बहुत दुःखी रहा करती थी। इसी वजह से उसका स्वभाव कुछ चिड़चिड़ा हो गया था। अक्सर वह ओलोव को डांट दिया करती। पर ओलोव उसके दुःख को समझता था, इसलिए उसकी किसी भी बात का बुरा नहीं मानता था और उसे हंसकर टाल दिया करता था।

चूंकि मछली ही ओलोव का मुख्य धंधा था, इसलिए अक्सर ही जब बर्फ बहुत जोरों को पड़ती और नदी का पानी जम जाता, तो ओलोव को निराश होना पड़ता था। ऐसी दशा में घर कैसे चले? इसलिए आलिया ने दूसरों के घरों में मजदूरी का कार्य कर लिया था। वह लोगों के घर का काम कर देती और उनके गंदे कपड़े वगैरह धो देती। इससे उसे काफी पैसे मिल जाते और उसकी गुजर-बसर हो जाती।

रोज की तरह आज भी ओलोव शांत भाव से नदी की ओर चला जा रहा था। हालांकि बर्फ पड़ना काफी देर पहले बंद हो चुका था, लेकिन रास्ते में कहीं-कहीं अब भी बर्फ की पतली मोम-सी परत जमी हुई थी। जैसे ही उसमें ओलोव का पैर पड़ता, वह अंदर तक धंस जाता। ओलोव के पैरों में हालांकि पुराने चमड़े के जूते थे, पर वे

इस कदर फट चुके थे कि उनमें कई मोटे-मोटे सूराख हो गये थे और उन सूराखों के रास्ते जब बर्फ उसके पांव से छूती, तो उसे गुदगुदी का अहसास होता। लगता, जैसे किसी नन्हें बच्चे ने उसे प्यार से छू लिया हो।

ओलोव के घर से नदी ज्यादा दूर नहीं थी। थोड़ी ही देर में वह नदी पर जा पहुंचा। नदी एकदम शांत थी। ओलोव ने सोचा, कहीं इसका पानी जम तो नहीं गया? उसने कंधे पर से जाल उतारा और उसे सुधारने लगा। फिर उसने पूरे जोश के साथ जाल को नदी की तरफ उछाल दिया।

पर हाय रे किस्मत ! जाल नदी के जमे हुए जल के ऊपर ही टिक गया। ओलोव को यह देखकर बड़ी निराशा हुई। उसने एक ठण्डी-सी आह भरी और जाल को वापस खींच लिया। जाल को पुनः फेंकने के लिए ओलोव ने उसे सहेजा और ईश्वर का नाम लेकर दूसरे छोर पर फेंका। इस बार जाल नदी की सतह पर जमी बर्फ की चादर को चीर कर अंदर तक जा पहुंचा। ओलोव को लगा, मेहनत सफल हुई। उसने धीरे-धीरे डोरी खींच कर जाल को कसा और फिर उसे बाहर निकाला।

पर अफसोस, जाल में कुछ भी नहीं था। ओलोव बुरी तरह से निराश हो गया। प्रतिदिन वह तीन बार ही नदी में जाल डाला करता था। यदि तीन बार में मछलियां मिल जायें तो ठीक, नहीं तो फिर उस दिन फाका। यही उसका नियम था। इस नियम को उसने जवानी से लेकर अबतक कभी तोड़ा नहीं था। हालांकि उसकी पत्नी आलिया इसके लिए अक्सर उसे कोसा करती थी, पर वह उसकी बातों पर कान न देता था। चाहे इसके लिए उसे आलसी कहा जाये या निकम्मा !

तीसरी बार जाल फेंकने से पहले उसने एक बार आसमान की

ओर देखा। मन-ही-मन कुछ बुदबुदाया और जाल को नचाकर पानी की तरफ उछाल दिया।

लेकिन इस बार भी उसके हाथ कोई बड़ी सफलता नहीं लगी। जाल में मात्र एक मछली ही फंसी थी। वह भी छोटी सी। हां, वह रंगीन जरूर थी। उसे देखकर ओलोव ने सोचा—"शायद बाजार में इसे पालने के शौकीन लोग अच्छे दाम पर खरीद लें?"

लेकिन जैसे ही ओलोव ने मछली को अपने हाथ में पकड़ा, वह बोल पड़ी, "मुझे छोड़ दो ओलोव, मुझे छोड़ दो !"

ओलोव हैरान रह गया। यह आवाज कहां से आयी? उसने आश्चर्यपूर्वक इधर-उधर देखा, पर कुछ समझ में न आया। आखिर आता भी कहां से? बोलने वाला तो उसके हाथ में ही था। लेकिन ओलोव ने ऐसा कभी सपने में भी न सोचा था कि कोई मछली आदमियों की तरह बोल सकती है। इसलिए उसने मछली पर ध्यान ही न दिया।

"ओलोव, मैं बोल रही हूं, तुम्हारे हाथ में थमी सुनहरी मछली।" मछली बोली, "कृपा करके मुझे छोड़ दो, इसके बदले मैं तुम्हारे काम आऊंगी।"

और इस बार तो जैसे ओलोव पर हैरानी का पहाड़ ही टूट पड़ा। वाकई मछली ही बोल रही थी। लेकिन अब भी जैसे उसे विश्वास नहीं हो रहा था। उसे लगा, वह कोई सपना देख रहा है। एकदम अनोखा सपना।

"यह कोई सपना नहीं ओलोव, हकीकत है।" मछली ने कहा, "मैं कोई साधारण मछली नहीं हूं। मैं मछलियों की रानी हूं और आदमियों की तरह बोल सकती हूं।"

"अच्छा!" ओलोव को तो अभी भी यकीन नहीं हो रहा था।

"हां, मैं सच कह रही हूं। तुम मुझे छोड़ दो, मैं जरूरत पड़ने पर

तुम्हारे काम आऊंगी।" मछली ने विनम्रतापूर्वक अपनी बात दोहरायी।

"सचमुच?" ओलोव अब भी सहज नहीं हो पाया था, "यह तो आश्चर्यजनक है, बोलने वाली मछली! किसी को इस बात पर विश्वास ही नहीं होगा।"

"हां, लेकिन यह सत्य है।" मछली ने उसका समर्थन किया।

अचानक ओलोव को जैसे कुछ याद आया। बोला, "लेकिन तुम्हें तो यहां कष्ट हो रहा होगा?"

"यह भी कोई कहने की बात है? इसीलिए तो मैं तुमसे प्रार्थना कर रही हूं कि मुझे पानी में छोड़ दो। मैं भविष्य में तुम्हारे काम आऊंगी।"

"लेकिन फिर तुम मुझे दुबारा कहां मिलोगी?" ओलोव ने पूछा।

"यहीं, नदी किनारे।" मछली ने जवाब दिया, "जब कभी तुम को मेरी जरूरत हो, नदी किनारे खड़े होकर मुझे आवाज देना, मैं हाजिर हो जाऊंगी।"

"अच्छा, लेकिन तुम्हारा नाम क्या है? मैं भला तुम्हें किस नाम से बुलाऊंगा?"

"तुम मुझे 'सुनहरी मछली' कहकर बुला सकते हो।"

"अच्छा-अच्छा !" ओलोव के होठों पर खुशी की चमक दौड़ गई। उसने एक बार मछली को गौर से देखा और फिर उसे पानी में छोड़ दिया।

अगले ही पल सुनहरी मछली नदी की सतह पर थी। वह बोली, "धन्यवाद ओलोव, मैं तुम्हारा यह अहसान कभी नहीं भूलूंगी। जब कभी तुम्हें मेरी जरूरत हो, निःसंकोच मुझे आवाज देना। अच्छा, अब मैं चलती हूं।"

और फिर वह अपने नन्हें-नन्हें शल्कों को हिलाती हुई नदी में

गायब हो गई।

ओलोव मंत्रमुग्ध भाव से उसे देखता रहा और जब मछली गायब हो गई, तो जैसे उसका जादू टूटा। उस समय उसके होठों पर मुस्कान की पतली पर्त तैर रही थी। लेकिन तभी उसकी निगाह जाल पर जा पड़ी और तभी उसे वास्तविकता का अहसास हुआ।

"चलो, आज फिर फाका !" और वह जाल को बटोरने लगा।

ओलोव जब अपने घर पहुंचा, तो उसकी पत्नी झोपड़ी के बाहर बर्तन मांज रही थी। उसने देखा ओलोव के कंधे पर जाल पड़ा हुआ है और उसके होठों पर मुस्कान खिली हुई है। वह बोली, "लगता है, आज ढेर सारी मछलियां हाथ लगी हैं?"

"ढेर सारी मछलियां?" ओलोव ने उल्टा प्रश्न किया, "किसने कहा कि आज मुझे ढेर सारी मछलियां मिली हैं?"

"और फिर? खुश तो तुम ऐसे ही दिखाई दे रहे हो?"

"नहीं, सच बात तो यह है कि आज मुझे सिर्फ एक मछली मिली थी और वह भी मैंने वापस नदी में छोड़ दी।"

"क्या?" आलिया पर तो पहाड़ ही टूट पड़ा, "तुम्हारा दिमाग तो ठीक है न? मछली छोड़ दी, तो फिर हमारा आज का खर्च कैसे चलेगा?"

"जैसे ऊपर वाला चाहे।" ओलोव अब भी गम्भीर नहीं हुआ था।

"लगता है, तुम सठिया गये हो, जो ऐसी बहकी-बहकी बातें कर रहे हो!" आलिया ने तेज स्वर में कहा, "अरे, तुम्हारे दिमाग को क्या होता जा रहा है? तुम्हें खाने-पीने की कुछ चिन्ता है या नहीं?..."

ओलोव को मालूम था कि अब वह चुप होने वाली नहीं। इसलिए उसने बीच में ही उसकी बात काट दी और उसे झोपड़ी के अन्दर ले जाकर बोला, "सुनो, आज जो कुछ मैंने देखा, तुम्हें उसपर विश्वास नहीं होगा।" और वह उसे सारी बात बताने लगा।

आलिया चुपचाप सारी बातें सुनती रही। उसे मालूम था कि उसका पति कभी झूठ नहीं बोलता। इसलिए उसने बीच में अपनी टांग नहीं अड़ाई। लेकिन जैसे ही वह चुप हुआ आलिया बोल पड़ी, ''और तुम खाली हाथ चले आये। अरे, तुम तो जिन्दगी भर बेवकूफ ही रहोगे। तुम्हारे दिमाग में इतनी-सी बात नहीं आयी कि क्या पता, वह झूठ ही बोल रही हो?''

''नहीं, वह भला झूठ क्यों बोलेगी? वह जरूर हर इच्छा पूरी कर सकती है।''

''आ-ह-हा, बड़ी आयी इच्छा पूरी करने वाली! अगर इतना ही भरोसा था तुम्हें उसकी बातों पर, तो क्यों नहीं, उसी समय उससे कुछ मांग लिया? देख लेते कि वह पूरा कर पाती है या नहीं।''

''लेकिन क्या उस समय मांगना अच्छा रहता? तब तो वह यही समझती न कि मैं कितना मतलबी हूं।''

''हां, तुम तो ठहरे बड़े दानी आदमी। घर में मियां के भंजी भांग नहीं है और नवाब साहब दयानतदारी दिखाने चले हैं ! अरे, तुम क्या उससे इतना भी नहीं कह सकते थे कि अगर तुमने उसे छोड़ दिया, तो आज हमें भूखा रहना पड़ेगा। फिर वह खुद ही कुछ-न-कुछ करती।''

''हां, मैंने सोचा तो था।''

''बस, तुम जिन्दगी-भर सोचते ही रहना'' आलिया ने उसकी बात बीच में ही काट दी, ''अरे, अब खड़े-खड़े मेरा मुंह क्या देख रहे हो। जाओगे भी उसके पास या...?''

''लेकिन मैं उससे जाकर क्या मांगूगा?''

''क्या मांगोगे?'' आलिया स्वयं सोच में पड़ गई, ''ऐसा करो, तुम उससे कहना कि हमें एक नौकरानी दिला दे, जो हमारा सारा काम कर दिया करे। फिर हम आराम से मौज करेंगे। अब हमारा

कोई लड़का-वड़का तो है नहीं।''

ओलोव ने समझ लिया कि अब आलिया की बात रुकने वाली नहीं, इसलिए वह चुपचाप नदी की ओर लौट पड़ा।

''अरे सुना, याद तो रहेगा न?'' आलिया ने अपनी बात बीच में ही छोड़कर उसे टोका, ''अगर तुम्हें न याद रहे, तो मैं चलूं साथ में?''

ओलोव ने सोचा कि अगर आलिया उसके साथ गई, तो यह अपनी आदत से मानेगी नहीं और उलटा-सीधा कह डालेगी। इससे सुनहरी मछली नाराज भी हो सकती है। अतः वह बोला, ''नहीं, तुम रहने दो। मुझे याद रहेगा और वैसे भी बाहर कितनी ठण्ड पड़ रही है।''

''हां, यह तो है। पर तुम जरा याद रखना।''

ओलोव ने कोई जवाब न दिया। उसके दिमाग में सुनहरी मछली नाच रही थी। पानी में तैरती हुई, रंग-बिरंगे शल्कों वाली।

ओलोव जब नदी पर पहुंचा, तो नदी पहले की तरह शांत थी। उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई, पर सुनहरी मछली तो क्या, कोई साधारण मछली भी पानी की सतह पर तैरती दिखाई नहीं दी।

धीरे-धीरे चलते हुए ओलोव उस स्थान पर पहुंचा, जहां से उसने जाल फेंका था। उस जगह पर खड़े होकर उसने जोर से आवाज लगाई, ''ओ सुनहरी मछली, मैं आ गया। मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है।''

इतना कहकर ओलोव चुप हो गया। लेकिन पानी में कोई हलचल न हुई। उसे लगा कि कहीं मछली ने उसे धोखा तो नहीं दिया? लेकिन नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। सुनहरी मछली उसे धोखा नहीं दे सकती। उसने अपने मन को समझाया और दूसरी बार आवाज लगाई।

तभी उसके सामने पानी में हलचल हुई। अगले ही क्षण सुनहरी मछली पानी की सतह पर मौजूद थी। वह बोली, ''लगता है, मुझे आने में काफी देर हो गई। अगर ऐसा है तो मैं...।''

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है सुनहरी मछली, दरअसल मैं ही जरा उतावला हो चला था।" ओलोव ने स्वयं को संयत रखने का प्रयत्न किया।

"अच्छा, बोलो, तुम्हें क्या चाहिए, जिसके लिए मुझे याद किया?" मछली ने पूछा।

"हां.., हां.., दरअसल बात यह है कि... ।" ओलोव हकला गया।

"हां-हां, कहो।"

"दरअसल बात यह है कि मेरी पत्नी चाहती है कि हमारे यहां अगर एक नौकरानी होती तो... ।"

"ओह, बस इतनी-सी बात ! जाओ, तुम्हारे घर नौकरानी पहुंच गई है।"

"क्या, सचमुच? हां-हां, क्यों नहीं। आप तो मछलियों की रानी हैं! जी, धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद !" कहते हुए ओलोव ने मछली की तरफ देखा। पर वह तो वहां पर थी ही नहीं। ओलोव ने एक लम्बी-सी सांस ली और फिर अपने घर को लौट पड़ा।

ओलोव जब घर पहुंचा, तो उसकी पत्नी बाहर ही मिली। पास ही में एक लड़की बैठी बर्तन धो रही थी। उसे देखकर ओलोव बोला, "अरे वाह, यह तो सचमुच की नौकरानी है।"

"क्या खाक नौकरानी है! कितने धीरे-धीरे काम करती है। ओरी, जरा जल्दी-जल्दी हाथ चला। ऐसी सड़ी नौकरानी भला किस काम की! तुम्हें तो अपने लिए कोई अच्छा-सा घर मांगना चाहिए था।"

"क्या? यह तुम क्या कह रही हो? हमें तो उस मछली का शुक्रिया अदा करना चाहिए... ।"

आलिया ने उसकी बात बीच में ही काट दी, "शुक्रिया तो उसे हमारा अदा करना चाहिए। तुमने उसे जीवन दिया, यह क्या कम है? इसके आगे तो दुनिया की सारी बातें बेकार हैं।"

इस बार ओलोव चुप रहा। आलिया की बात जारी रही, "इसलिए मैं कहती हूं कि तुम सुनहरी मछली के पास जाओ और उससे अपने लिए एक बढ़िया-सा मकान मांगो।"

"लेकिन अभी उसके पास जाना क्या उचित होगा?"

"क्यों नहीं उचित होगा?" आलिया ने अपनी आंखें तरेरी।

ओलोव में इतना साहस न था कि वह टिक पाता। इसलिए वह एक बार फिर नदी की ओर चल पड़ा।

नदी पर पहुंच कर जैसे ही ओलोव ने आवाज़ लगाई, मछली तुरंत हाजिर हो गई। ओलोव ने डरते-डरते उसके सामने अपनी बात रख दी, "सुनहरी मछली, हम लोग बहुत गरीब आदमी हैं। एक टूटी-सी झोंपड़ी में रहते हैं। इसीलिए मेरी पत्नी चाहती है कि यदि एक मकान...।"

"ठीक है जाओ, तुम्हारी झोपड़ी महल में बदल गई है।" मछली ने कहा और पानी में डुबकी लगा गई।

ओलोव जब घर पहुंचा, तो वास्तव में झोंपड़ी के स्थान पर एक सुन्दर मकान खड़ा था। उसे देख कर ओलोव की खुशी का ठिकाना न रहा। लेकिन इससे पहले कि वह कुछ बोलता, आलिया ने उसे टोक दिया, "वैसे घर तो बहुत अच्छा है, लेकिन खाली अच्छा घर लेकर क्या चाटें? जबतक घर में रुपये-पैसे, नौकर-चाकर, घोड़ा-गाड़ी न हो, तबतक सब बेकार।"

"देखो, तुम लालच कर रही हो।" ओलोव ने उसे समझाना चाहा, "और...।"

पर आलिया ने उल्टा उसे ही डांट दिया, "मैं लालच कर रही हूं! जैसे मैं अपने लिए ही सारी चीजें मांग रही हूं। तुम्हें ही रोज कड़कड़ाते जाड़े में मछली मारने जाना पड़ता है। उसपर सिर्फ तीन बार ही जाल डालेंगे नवाब साहब। अगर उस तीन बार में मछली न फंसी, तो फिर फाका करो। सारी जिन्दगी हमारी ऐसे बीत गई।

अब जब बुढ़ापे में हमें ऐसा मौका मिला है कि हम चैन से रह सकें, तो इसका फायदा क्यों न उठायें?"

ओलोव चुपचाप सुन रहा था। अंत में आलिया ने हुक्म सुनाया, "तुम अभी मछली के पास जाओ और उससे ये सब चीजें मांगो।"

ओलोव अपनी पत्नी को अच्छी तरह से जानता था। अगर उसने किसी चीज की जिद पकड़ ली तो उसे पूरा करे बिना न मानेगी। इसलिए मजबूर होकर ओलोव ने पुनः नदी का रास्ता पकड़ा।

वहां पहुंचकर उसने मछली को पुकारा। उसकी बात सुनकर मछली को कोई आश्चर्य नहीं हुआ। वह मनुष्यों की आदत से अच्छी तरह से परिचित थी। उसने इस बार भी ओलोव की बात मान ली और उसे मांगी हुई चीजें मुहय्या कर दीं।

आलिया को जब सारी सुविधाएं प्राप्त हो गईं तो उसने राहत की सांस ली। उस दिन उसने अपने नौकरों से कहकर खूब अच्छे पकवान बनवाये और उसे सारे मोहल्ले में बंटवाया। मोहल्ले वाले यह देखकर हैरान थे कि जो लोग कलतक एक-एक दाने को तरस रहे थे, वे आज रईसों की तरह रह रहे हैं। भला इनके पास इतनी दौलत कहां से आ गई?

आलिया की खुशी की तो सीमा ही न थी। देर रात तक वह नौकरों को तरह-तरह के आदेश देती रही और जब भागदौड़ के कारण बुरी तरह थक गई, तो वह बिस्तर पर लेटी। लेकिन मोटे और गुदगुदे गद्दे के कारण उसे सारी रात नींद नहीं आयी ! जब सुबह उसकी आंख लगी, तो उसने देखा कि वह इस देश की रानी हो गई है और सभी लोगों पर अपना हुक्म चला रही है।

सुबह जगने पर आलिया ने अपने पति से यह बात बतायी और उससे कहा कि सुनहरी मछली के पास जाओ और उससे कहो कि वह उसे इस देश का राजा बना दे।

आलिया की बात सुनकर ओलोव एकदम-से बिगड़ पड़ा, "तुम पागल हो गई हो क्या? इतना कुछ तुम्हें मिला, लेकिन तुम्हारी हवस पूरी नहीं हुई। चुपचाप इसी में खुश रहो और राजा बनने का ख्वाव दिल से निकाल दो।"

लेकिन आलिया ने अपनी जिद न छोड़ी। वह बार-बार एक ही रट लगाये रही कि उसे रानी बनना है। अंत में ओलोव को मानना ही पड़ा। मजबूर होकर वह मछली के पास पहुंचा और उसके सामने आलिया की फरमाइश रक्खी। उसकी बात सुनकर मछली धीरे से मुस्कराई और कहा, "जाओ, ऐसा ही होगा।"

और सचमुच ओलोव वहां का राजा बन गया और आलिया हो गई उसकी रानी। दोनों मजे से सिंहासन पर बैठते और दरबारियों पर हुक्म चलाते। जिधर भी वे जाते, लोग उनका जय-जयकार करते।

धीरे-धीरे करके एक माह बीत गया। आलिया बहुत प्रसन्न रहती, लेकिन फिर वह प्रसन्नता भी कम होने लगी। वह सोचती कि काश वह पूरे संसार की रानी होती! सारे जीव-जन्तु उसका कहना मानते और उसे देखकर अपना सिर झुकाते।

ओलोव ने जब यह बात सुनी, तो हैरान रह गया। उसने आलिया को खूब कसकर डांटा और कहा कि ऐसा होना असंभव है। पर आलिया भला कैसे मान जाती! अपनी बात मनवाने के लिए उसने चाल चली और कहा कि अगर तुम मछली के पास नहीं जाओगे, तो मैं दीवार पर सिर पटक-पटक कर अपनी जान दे दूंगी।

मजबूर होकर ओलोव को मछली के पास जाना पड़ा। लेकिन जैसे ही उसने मछली से यह कहा, उसका चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। वह बोली, "लालच ने तुम्हें अंधा बना दिया है। इसलिए तुम उल्टी-सीधी मांगे मेरे सामने रखने लगे हो। इतने दिन तुमने बहुत मेरी दया का प्रसाद चखा। अब वापस जाकर उसी गरीबी में रहो।"

इतना कहकर मछली वहां से गायब हो गई। देखते-देखते ओलोव के चमकीले कपड़े चिथड़ों में बदल गये। उसे अपनी पत्नी पर बहुत गुस्सा आया। पर अब हो क्या सकता था? सुनहरी मछली हमेशा के लिए जा चुकी थी। साथ ही दिखा चुकी थी उन्हें उनकी हकीकत, जिसे वे दौलत के नशे में भूल चुके थे।

हुक्म चिड़िया का

एक गांव में एक किसान रहता था। किसान के दो बेटे थे। बड़ा बेटा पिता के काम में हाथ बंटाता था, लेकिन छोटा बेटा बड़ा शैतान था। वह दिनभर इधर-उधर मटरगश्ती करता रहता था। उसकी शैतानियां पूरे गांव में मशहूर थीं। शायद ही कोई दिन ऐसा होता था, जब कोई व्यक्ति उसकी शिकायत लेकर उसके घरवालों के पास न आता हो।

किसान की पत्नी बहुत बूढ़ी हो चुकी थी। घर के काम-काज करने में उसे परेशानी होती थी। लेकिन उसे अपना छोटा बेटा बहुत प्रिय था। क्या मजाल है कि उसके सामने कोई उसके बेटे को डांट दे! यही कारण था कि वह बहुत शैतान हो गया था।

मां की बड़ी इच्छा थी कि वह अपनी बहू का मुंह देखे। इसलिए उसने अपने बड़े बेटे की शादी कर दी। संयोग कुछ ऐसा हुआ कि शादी के कुछ ही दिनों बाद मां का देहांत हो गया, जैसे बहू का मुंह देखने के लिए ही वह अभी तक जी रही थी।

बड़े लड़के की बहू बड़ी समझदार और सलीका-पसंद औरत थी। कुछ ही दिनों में वह अपने देवर येमेला के ऊधम से तंग आ गई। अब अगर वह उलटा-सीधा कुछ करता, तो उसकी भाभी उसे डांट

लगा देती। येमेला को यह बुरा लगता। वह अपने भैया और पिता से भाभी की शिकायत करता। लेकिन वे लोग उसकी बात पर ध्यान न देते। आखिर उसकी शैतानियां वे कबतक बर्दाश्त करते?

भाभी ने अपने कठोर व्यवहार से येमेला को शीघ्र नियंत्रण में कर लिया। अब उसे घर का काम करना पड़ता और सबके सामने सलीके से रहना पड़ता। लेकिन जैसे ही वह घर से बाहर निकलता, फिर शैतानी शुरू हो जाती।

एक दिन की बात है। ठण्ड बहुत पड़ रही थी। येमेला के पिता और भाई काम से गये हुए थे। घर में सिर्फ वह और उसकी भाभी थी। येमेला अलाव के पास बैठा आग ताप रहा था और भाभी घर का काम कर रही थी। अचानक पानी खत्म हो गया। भाभी ने उसे आवाज देते हुए कहा, "येमेला, जाओ नदी से दो बाल्टी पानी भर लाओ। घर का पानी खत्म हो गया है।"

"ओफ्फो भाभी, इस कड़कड़ाती ठण्ड में तो नदी भी जम गई होगी। फिर भला पानी कहां से मिलेगा?" येमेला ने जवाब दिया।

"हां, मुझे मालूम है।" भाभी बोली, "लेकिन नदी के तट पर कोई जगह तो ऐसी होगी, जहां बर्फ न जमी हो। जाओ, जल्दी से पानी ले आओ।"

येमेला को मालूम था कि जब भाभी ने पानी के लिए कह दिया, तो उसे जाना ही पड़ेगा। अतः वह चुपचाप उठा और दो बाल्टियां लेकर निकल पड़ा।

बाहर गजब की ठण्ड थी। हवा जैसे सीने को चीरे दे रही थी। उसके अलावा रास्तों में भी बर्फ जमी थी। किसी तरह ठिठुरते-ठिठुरते येमेला नदी के पास पहुंचा। किनारे के पास ही एक बड़ा-सा पेड़ था। उस पर रंग-बिरंगी चिड़िया आया करती थीं। येमेला की नजर सहसा उधर उठ गई।

उसने देखा, पेड़ पर एक सुनहरी चिड़िया बैठी हुई थी।

"वाह, क्या चिड़िया है !" येमेला के मुंह से निकला और उसने एक पत्थर उठा कर चिड़िया पर मार दिया।

संयोग की बात निशाना एकदम ठीक बैठा। पत्थर चिड़िया के सिर पर पड़ा और वह जमीन पर गिर पड़ी। यह देखकर येमेला बहुत खुश हुआ और दौड़कर उसने चिड़िया को उठा लिया।

चिड़िया के खून तो नहीं निकला था, बस अंदरूनी चोट लगी थी। येमेला के हाथ में आकर वह एकदम से फड़फड़ाने लगी और बोली, "मुझे छोड़ दो, मुझे छोड़ दो।"

"वाह ! मैं तुम्हें क्यों छोड़ दूं? मैं तो तुम्हें पिंजरे में पालूंगा।" येमेला ने हंसकर जवाब दिया।

"मुझे छोड़ दो येमेला, बदले में मैं तुम्हारी हर इच्छा पूरी करूंगी।"

"अच्छा, मुझे बेवकूफ बनाना चाहती हो? मैं तुम्हारी बात पर कैसे भरोसा कर लूं?"

"मैं कोई मामूली चिड़िया नहीं हूं। मेरी बात एकदम सच है। जब तुम यह कहोगे कि हुक्म चिड़िया का और इच्छा मेरी, तो तुम्हारी इच्छा पूरी हो जायेगी।"

"ठीक है, मैं अभी आजमाए लेता हूं।" कहते हुए येमेला ने अपनी खाली पड़ी बाल्टियों की ओर देखा और बोला, "हुक्म चिड़िया का और इच्छा मेरी, मेरी बाल्टियां पानी से भर जायें।"

और आश्चर्य ! बाल्टियां सचमुच पानी से भर गईं। यह देखकर चिड़िया बोली, "अब तो तुम्हें मेरी बातों पर भरोसा हो गया?"

"हां", येमेला ने धीरे से सिर हिलाया और चिड़िया को छोड़ दिया। वह एक ओर को उड़ गई।

येमेला बहुत प्रसन्न था। तभी उसे भाभी का ध्यान आया। अगर वह देर से घर पहुंचा, तो जरूर उसे डांट पड़ेगी। अतः वह बाल्टियों

के पास पहुंचा और उन्हें उठाने लगा, लेकिन तभी उसे चिड़िया का ध्यान आ गया। वह मुस्कराया और बोला, "हुक्म चिड़िया का इच्छा मेरी, ऐ बाल्टियों, तुम अपने-आप चलकर मेरे घर पहुंच जाओ।"

और बाल्टियां अपने आप चलने लगीं। येमेला भी उनके पीछे हो लिया। गांव के लोगों ने जब यह दृश्य देखा, तो वे हैरान रह गये। बाल्टियां अपने-आप कैसे चल सकती हैं? उन्होंने अपनी आंखें मलीं और चिकोटी काटी, पर दृश्य ज्यों-का-त्यों मौजूद था। आखिर यह चमत्कार हुआ कैसे?

गांव के लोगों ने येमेला से पूछना चाहा, पर उसने किसी को जवाब नहीं दिया और मुस्कराता हुआ अपने घर चला गया।

बाल्टियों को उनके स्थान पर पहुंचाने के बाद जब येमेला अलावघर में पहुंचा, तो लकड़ियां बुझ चुकी थीं। यह देखकर येमेला का गुस्सा भड़क उठा। वह बोला, "भाभी, यह आग क्यों बुझ गई?"

"क्योंकि लकड़ियां खत्म हो गई हैं।" भाभी ने जवाब दिया, "अगर तुम्हें आग तापनी है, तो जाकर लकड़ियां काट लाओ।"

अब क्या किया जाये? घर में बिना आग के तो रहा ही नहीं जा सकता था। जाड़ा ही इतना तगड़ा था। अतः येमेला ने कुल्हाड़ी उठायी और जंगल में जा पहुंचा। उसने कुल्हाड़ी को हुक्म देकर कहा, "हुक्म चिड़िया का और इच्छा मेरी, कुल्हाड़ी तुम जंगल की ढेर सारी सूखी लकड़ियां काट दो।"

कहने भर की देरी थी। कुल्हाड़ी फटाफट चालू हो गई और लकड़ियां ढेर होने लगीं। जब येमेला के काम भर की लकड़ियां इकट्ठी हो गईं, तो वह बोला, "हुक्म चिड़िया का और इच्छा मेरी, ऐ कुल्हाड़ी, तू रुक जा और लकड़ियों, तुम अपने आप बंधकर मेरे साथ घर की ओर चल पड़ो।"

झटपट लकड़ियों का बंडल बंध गया और वह घर की ओर चल

पड़ा। लेकिन तभी उसे बर्फ की गाड़ी का ध्यान आया। अगर वह बिना कुत्तों के गाड़ी पर बैठ कर घर जाये, तो कितना मजा आयेगा, और वह बोला, ''हुक्म चिड़िया का और इच्छा मेरी। लकड़ियों, तुम यहीं रुक जाओ और बर्फ की गाड़ी, तुम यहां पर हाजिर हो जाओ।''

अगले ही पल गाड़ी वहां हाजिर थी। येमेला गाड़ी पर सवार होकर पुनः बोला, ''हुक्म चिड़िया का और इच्छा मेरी, लकड़ियों, तुम गाड़ी पर रख जाओ और गाड़ी, तुम मेरे घर चलो।''

गाड़ी झटपट येमेला के घर की ओर उड़ चली। येमेला उसपर बैठ कर जोर-जोर से तरह-तरह की आवाजें निकालने लगा। उसकी आवाजें सुनकर गांव वाले इकट्ठे हो गये और बिना कुत्तों की गाड़ी को चलते अचरज से देखने लगे।

गाड़ी में कुत्तों को बांधने के लिए जो पट्टे लगे होते हैं, वे खुले हुए थे। अतः जो भी उनकी चपेट में आता, पट्टों में उलझ जाता और गिर जाता। यह देखकर येमेला जोर-जोर से हंसने लगा।

घर पहुंचकर गाड़ी अपने-अपने स्थान पर जा रुकी और येमेला की इच्छानुसार लकड़ियां अपनी जगह पहुंच गईं।

येमेला की भाभी यह देखकर हैरान रह गईं। वह बोलीं, ''क्यों रे येमेला, तू अभी-अभी तो गया था और इतनी जल्दी कैसे लौट आया?''

''तुमने मुझे कोई कामचोर समझा है क्या?'' येमेला ने शेखी बघारी, ''अगर मैं चाहूं तो एक मिनट में पूरे जंगल को साफ कर दूं।''

कहकर वह अलावघर जा पहुंचा और लकड़ियां जलाकर अपनी ठण्डक को दूर करने का प्रयत्न करने लगा।

शाम को जब येमेला के भाई और पिता लौट कर आये, तो गांव वालों ने येमेला के कारनामों की चर्चा उनसे की। उनकी बातें सुनकर

वे लोग हैरान रह गये। येमेला का पिता बोला, "ऐसा कैसे हो सकता है कि बर्फ की गाड़ी बिना कुत्ते के दौड़े और बाल्टियां अपने आप चलें? जरूर तुम लोगों ने नशा कर रक्खा होगा?"

"नहीं भाई साहब, हम लोग सच कह रहे हैं। आप चाहें तो येमेला से पूछ सकते हैं।" एक आदमी ने सुझाव दिया।

येमेला के पिता ने येमेला को बुलाया और उससे सारी बातें पूछीं। इसपर येमेला उन बातों से साफ कन्नी काट गया। वह बोला, "पिताजी, मुझे तो लगता है कि इन लोगों ने नशा कर रक्खा है। तभी इस तरह से उलटा-सीधा बोल रहे हैं। मैं तो बाल्टियों को खुद उठाकर लाया था और गाड़ी भी कुत्ते खींच रहे थे।"

येमेला के पिता को येमेला की बातों पर विश्वास हो गया। उसने गांववालों को भगा दिया और अपने काम में लग गया।

लेकिन गांववालों को भला कहां चैन पड़ सकता था! और फिर जिन लोगों को गाड़ी के पट्टों से चोट लगी थी, वे तो चुप रह ही नहीं सकते थे। इसलिए वे लोग राजा के दरबार में पहुंचे और येमेला के बारे में खूब नमक-मिर्च लगाकर कहा।

राजा ने येमेला को लाने के लिए एक सिपाही को भेजा। सिपाही सीधे येमेला के घर में घुसता चला गया। उस समय उसके पिता और भाई काम पर गये थे और भाभी नहा रही थी। घर पर सिर्फ येमेला ही था। वह अलावघर में बैठा आग ताप रहा था।

सिपाही येमेला के पास जाकर अकड़कर बोला, "क्या तू ही येमेला है? राजाजी ने तुझे बुलाया है। उठ और मेरे साथ चल।"

सिपाही की बातें सुनकर येमेला को गुस्सा आ गया। वह मन-ही-मन बड़बड़ाया, "हुक्म चिड़िया का और इच्छा मेरी। लाठी, तू इसकी जरा अच्छी तरह से खातिरदारी कर दे और घर के बाहर तक खदेड़ आ।"

फिर क्या था, लाठी उठी और धड़ाधड़ सिपाही को पीटने लगी। दो-चार लाठियों में सिपाही की हिम्मत जवाब दे गई और वह सिर पर पैर रखकर भाग खड़ा हुआ।

गिरते-पड़ते सिपाही राजा के दरबार में पहुंचा और रो-रो कर बताया, "महाराज, येमेला बहुत बड़ा जादूगर है। उसने तो कुछ कहा भी नहीं और उसकी जादुई लाठी मेरी पिटाई करने लगी। मुझे उसने बहुत मारा, महाराज, बहुत मारा।"

"हूं।" राजा बोला, "इसका मतलब यह है कि वह वाकई जादूगर है। तब तो उसे काबू में करना ही होगा, वरना वह मेरे लिए खतरा बन सकता है।"

"हां, महाराज," राजा के मंत्री ने उसका समर्थन किया, "येमेला को काबू में करने का एक ही उपाय है।"

"क्या?"

"यही कि उसे धोखे से अपने कब्जे में किया जाये। तभी वह हमारी गिरफ्त में आ सकता है।"

"हां, तुम ठीक कहते हो। मैं इस काम के लिए तुम्हें नियुक्त करता हूं। अगर तुम येमेला को गिरफ्तार करके ले आये, तो तुम्हें बहुत बड़ा इनाम दिया जायेगा।"

"जैसी आज्ञा, महाराज।" मंत्री ने अपना सिर झुकाया और येमेला को गिरफ्तार करने के लिए निकल पड़ा।

मंत्री सीधे येमेला के घर पहुंचा और उससे बड़े प्यार से बोला, "येमेला, उस सिपाही की धृष्टता के लिए मैं महाराज की ओर से तुम से क्षमा मांगता हूं। दरअसल महाराज तो यह जानकर बहुत खुश हैं कि उनके राज्य में तुम्हारे जैसा योग्य और चमत्कारी व्यक्ति मौजूद हैं। इसीलिए वह तुमसे मिलना चाहते हैं।"

येमेला को समझते देर नहीं लगी कि ये राजा की कोई नई चाल

है। उसने मन-ही-मन कहा, "हुक्म चिड़िया का और इच्छा मेरी। इस मंत्री के मन की बात क्या है?"

और फौरन ही येमेला को लगा कि वह मंत्री के मन के विचारों को साफ-साफ पढ़ रहा है। सारी बात जानकर वह पुनः मन में बड़बड़ाया, "हुक्म चिड़िया का और इच्छा मेरी। राजा की बेटी को मेरी दीवानी बना दे।"

फिर वह मंत्री के साथ चल पड़ा। राजा येमेला से बड़ी प्रसन्नतापूर्वक मिला। उसने येमेला के स्वागत में सभी को गरम कॉफी पिलायी। लेकिन येमेला के प्याले में जहर मिला हुआ था। जैसे ही उसने कॉफी पी, वह बेहोश हो गया। तब राजा ने मंत्री को हुक्म दिया, "ले जाओ इस जादूगर को और पीपे में बंद करके समुद्र में फेंक दो।"

राजा की बेटी ने, जिसके दिल में येमेला के लिए प्यार जन्म ले चुका था, इसका विरोध किया जिससे राजा को गुस्सा आ गया और उसने अपनी बेटी को भी येमेला के साथ पीपे में बंद करवा कर समुद्र में फिंकवा दिया।

राजकुमारी का रो-रो कर बुरा हाल हो गया। वह येमेला को जगाती रही, ताकि किसी तरह से उस पीपे से निकल कर जान बचाने का कोई उपाय हो सके। लेकिन जब राजकुमारी येमेला को जगा-जगा कर थक गई, तो वह येमेला के चेहरे पर अपना सिर रखकर रोने लगी। राजकुमारी के आंसू बहते-बहते येमेला के चेहरे पर पड़े। तब कहीं जाकर उसकी बेहोशी टूटी और वह जग गया। अपने पास राजकुमारी को पाकर वह हैरान रह गया और एकटक उसे देखने लगा।

राजकुमारी ने जब येमेला को इस तरह से देखते पाया, तो वह गुस्सा होकर बोली, "तुम्हें कुछ खबर भी है? हम लोगों को पीपे में बंद करके समुद्र में फेंक दिया गया है। अब किसी भी क्षण कोई बड़ी

मछली हमें खा सकती है।"

राजकुमारी की बात सुनकर येमेला मुस्कराया, "नहीं राजकुमारी, ऐसा नहीं होगा। हम लोग तो एक द्वीप के पास पहुंच रहे हैं, जहां पर एक सुन्दर-सा महल हमारा इंतजार कर रहा है।"

फिर वह मन-ही-मन बोला, "हुक्म चिड़िया का और इच्छा मेरी। यह पीपा एक द्वीप के पास पहुंच जाये और द्वीप पर एक सुन्दर सा महल बन जाये।"

कुछ ही देर में पीपा लहरों के सहारे बहता हुआ द्वीप के तट से जा लगा। येमेला पुनः मन-ही-मन बोला, "हुक्म चिड़िया का और इच्छा मेरी, पीपा अपने-आप खुल जाये और बाहर सेवक हमारे स्वागत के लिए तैयार हो जायें।" अगले ही क्षण पीपा अपने आप खुल गया। दोनों लोग बाहर निकले। देखा, बाहर ढेर सारे आदमी हार लेकर खड़े हैं। येमेला को देखते ही एक व्यक्ति बढ़कर बोला, "हुजूर, हम इस महल में आपका स्वागत करते हैं।"

दोनों लोग महल में पहुंचे। वहां उनकी सुख-सुविधा का सारा सामान मौजूद था। उसे देखकर राजकुमारी बहुत खुश हुई। वह बोली, "अरे, यह महल तो हमारे राजमहल से भी अच्छा बना है।"

"इसमें भी कोई शक है !" येमेला शरारती अंदाज में बोला, "आखिर संसार की सबसे सुन्दर राजकुमारी के लिए सबसे सुन्दर महल तो होना ही चाहिए।"

यह सुनकर राजकुमारी शर्मा गई और येमेला के सीने से लिपट गई। येमेला ने भगवान को साक्षी मानकर राजकुमारी से विवाह कर लिया और फिर दोनों वहीं पर रहने लगे।

धीरे-धीरे काफी दिन बीत गये। अब तो येमेला और उसकी पत्नी को अपने घरवालों की याद सताने लगी। एक दिन येमेला से उसकी पत्नी बोली, "कितना अच्छा होता, अगर हमारे परिवार वाले भी हमारे

साथ होते?"

"हां, तो इसमें कौन-सी बड़ी बात है? वे लोग भी आते ही होंगे।" येमेला ने मुस्करा कर कहा और फिर अपने मन में बुदबुदाया, "हुक्म चिड़िया का और इच्छा मेरी, इस द्वीप से हमारे शहर तक एक बड़ा-सा पुल बन जाये और एक रथ पर बैठ कर मेरे पिता, भाई और भाभी आ जायें।"

येमेला के कहने भर की देर थी, तुरंत पुल बनकर तैयार हो गया। येमेला ने उस तरफ देखा, तो उसे दिखाई दिया कि पुल पर से एक बड़ा-सा रथ चला आ रहा है।

अपनी पत्नी के साथ येमेला महल के बाहर पहुंचा। तबतक रथ वहां आ चुका था। उससे उसके परिवार के सदस्य उतर रहे थे। येमेला दौड़ कर अपने पिता के पास पहुंच गया। पिता ने उसे देखकर कहा, "शैतान कहीं का! तू यहां पर छुपा हुआ है और हम लोग तुझे सारी दुनिया में खोजते फिर रहे हैं!"

उन्होंने येमेला को गले से लगा लिया। येमेला ने सबसे क्षमा मांगी और सारी बात बतायी। वे लोग अपनी बहू से मिलकर बहुत खुश हुए और प्रसन्नतापूर्वक उन्हीं के साथ महल में रहने लगे।

एक दिन येमेला को खबर मिली कि तट पर एक जहाज आकर रुका है। उसमें सिपाही भी हैं और वे लोग कुछ पूछ रहे हैं। येमेला फौरन वहां जा पहुंचा। उसने देखा कि जहाज पर उसका ससुर खड़ा है। उसे देखकर येमेला मुस्कराया और बोला, "कहिये राजासाहब, आप यहां क्या कर रहे हैं? शिकार खेलने निकले हैं क्या?"

"नहीं, हमें एक पीपे की तलाश है। उसमें मेरी बेटी और एक शैतान लड़का है। मैंने गुस्से में आकर उन लोगों को समुद्र में फिंकवा दिया था। लेकिन अब मुझे अपने किये पर पछतावा हो रहा है। इसलिए मैं उन्हें खोज रहा हूं, ताकि उनसे अपने किये की माफी मांग

सकूं।"

"अच्छा, तो आप उस जादुई शक्ति वाले युवक की तलाश में हैं, जिसे आपने कॉफी में जहर मिला कर पिला दिया था?" येमेला ने पूछा।

"हां-हां, उसी चमत्कारी युवक की। मेरी लड़की उस युवक से प्रेम करती थी और मैंने उसे भी उसके साथ...।"

"लेकिन अबतक तो वे लोग मर-मरा गये होंगे।"

"नहीं-नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मेरा विश्वास कहता है कि वे लोग अभी जिन्दा हैं। मैं उनसे माफी मांग कर उन्हें अपना राज्य सौंप देना चाहता हूं ताकि मैं आसानी से अपनी अंतिम सांसें ले सकूं।" कहते-कहते राजा की आंखें भर आयीं।

"ओह, अच्छा आप मेरी तरफ ध्यान से देखिए। कहीं मैं ही तो वह चमत्कारी लड़का नहीं?" येमेला शरारतपूर्ण ढंग से मुस्कराया।

राजा ने येमेला को गौर से देखा। येमेला को पहचानते ही वह उसके पैरों पर गिर पड़ा और बोला, "मुझे क्षमा कर दो बेटे, मैंने तुम्हारे साथ बड़ा अन्याय किया।"

"अरे, यह आप क्या करते हैं?" कहते हुए येमेला ने उन्हें उठाया और बोला, "आप तो मेरे पिता के समान हैं। चलिये, आपकी बेटी आपको बहुत याद करती है।"

राजा येमेला के साथ महल में पहुंचा। वह अपनी बेटी से मिलकर बहुत खुश हुआ और उससे अपने किये की क्षमा मांगने लगा। यह देखकर राजकुमारी की आंखों से प्रसन्नता के आंसू बह निकले।

आपस में मिलकर सबकी शिकायतें दूर हो गईं और वे हंसी-खुशी अपने दिन बिताने लगे। ●

मुंहतोड़ जवाब

आसिमो उस रोज बहुत दुःखी था। आखिर दुःखी होने वाली बात ही थी। उसके पड़ोसी कोसुम ने उसकी दस भेड़ें हड़प ली थीं। उसकी तो जैसे सारी उम्मीदों पर पानी ही फिर गया था। आखिर वही भेड़ें तो थीं उसका सहारा। उसने सोचा था कि एक दिन वह इन्हीं भेड़ों को बेचकर अपनी बेटी आएलीता की शादी बड़ी धूमधाम से करेगा। लेकिन अब? अब तो उसके सारे सपने ही मिट्टी में मिल गये थे।

दरअसल हुआ यह था कि कुछ दिन पहले तक आसिमो और कोसुम में बड़ी गहरी दोस्ती थी। आसिमो के थोड़े से खेत थे, जिनसे वह अपना काम चलाता था, जबकि कोसुम एक व्यापारी था। उसके पास रुपयों-पैसों की कमी न थी, लेकिन इसके बावजूद दोनों में दोस्ती थी।

हालांकि गांव के दूसरे बड़े-बूढ़े अक्सर यह कहते सुने जाते थे कि अमीर और गरीब के बीच कभी दोस्ती नहीं होती। एक दिन

आसिमो को जरूर पछताना पड़ेगा।

और सच में आज वही हुआ था। आज आसिमो अपने घर में बैठा वास्तव में पछता रहा था। उसे क्या पता था कि कोसुम इस तरह से बेईमानी पर उतर आयेगा, नहीं तो जब कोसुम ने पिछली बरसात में उसके घर की एक कोठरी ढह जाने के बाद उसे अपनी चरागाह में भेड़ें बांधने को कहा था, तो वह ऐसा क्यों करता? लेकिन भोले आसिमो ने उसकी बात पर विश्वास कर लिया और आज कोसुम उन्हें अपनी भेड़ें बता रहा था। उसका कहना था कि ये भेड़ें उसने आसिमो से खरीद ली हैं।

हार कर आसिमो ने जमींदार के पास जाने का फैसला किया। हालांकि जमींदारों के बारे में यह मशहूर था कि वह अमीरों की बातों की ही तरफदारी करते हैं, लेकिन इसके अतिरिक्त और किया भी क्या जा सकता था? सो वह एक दिन सुबह-ही-सुबह जमींदार के पास अपनी फरियाद लेकर जा पहुंचा।

सारी बात सुनने के बाद मोटा जमींदार अपनी कुर्सी पर देह को झुलाते हुए बोला, "मैं कैसे मान लूं कि तुम सही कह रहे हो? कल कोसुम भी मेरे पास आया था। उसने तो कहा है कि वे भेड़ें मैंने खरीदी हैं।"

"नहीं हुजूर," आसिमो बीच में ही बोल पड़ा, "वह झूठ बोल रहा है।"

"तो क्या तुम मुझे बेवकूफ समझते हो? मैं आदमी की शक्ल देखकर पहचान लेता हूं कि वह झूठ बोल रहा है या सच। समझे।"

"पर वे मेरी ही भेड़ें हैं ...।"

"खामोश !" जमींदार ने उसे बीच में ही डांट दिया।

आसिमो की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उसका शरीर कांपने लगा। कहीं जमींदार ने गुस्से में कुछ उलटा-सीधा आदेश दे दिया तो क्या

होगा?

लेकिन जमींदार ने ऐसा कुछ नहीं किया। थोड़ा चुप रहने के बाद वह बोला, "मैं एक शर्त पर तुम्हारी बात के लिए खोजबीन करवा सकता हूं। यदि तुम मेरी पहेली का उत्तर दे दो।" कहते हुए उसने घूरकर आसिमो की ओर देखा।

आसिमो को कुछ आशा बंधी। वह बोला, "कहिये, क्या पहेली है?"

"सबसे सहनशील कौन है? सबसे वेगवान कौन-सी वस्तु है? मनुष्य को सबसे ज्यादा अच्छी क्या चीज लगती है?" जमींदार ने कहा, "अगर तुम कलतक इन सवालों के जवाब ले आओ तो..।"

"जी, मैं कोशिश करता हूं।" आसिमो ने जवाब दिया और अपने घर लौट गया।

आसिमो जब घर पहुंचा, तो उसकी लड़की आएलीता दरवाजे पर ही मिली। वह अपने पिता का इंतजार कर रही थी। उसने आसीमो को देखते ही पूछा, "क्या हुआ, पिताजी? जमींदार ने क्या कहा?"

आसिमो ने बड़ी निराशा से आएलीता को सारी बातें बता दीं और कहा, "अब वे भेड़ें हमारी किस्मत में नहीं। न तो हम उन सवालों के जवाब उसे दे पायेंगे और न ही वह... ।" आसिमो ने अपनी बात बीच में ही छोड़ दी।

"आप ऐसी बात क्यों सोचते हैं?" आएलीता ने पिता को हाथों से सहारा देते हुए कहा, "मुझे इन प्रश्नों के उत्तर मालूम हैं।"

"क्या सच?" आसिमो को जैसे विश्वास ही नहीं हुआ।

"हां, मैं सच कह रही हूं पिताजी।" आएलीता मुस्कराकर बोली, "चलिये, अब खाना खा लीजिये। कल जाकर आप उन्हें इनके उत्तर बता दीजियेगा।"

आएलीता की बात सुनकर आसिमो को कुछ आशा बंधी। उसे

मालूम था कि उसकी बेटी बहुत बुद्धिमान है। उसे जरूर इनके उत्तर पता होंगे। अतः उसने हाथ-मुंह धोया और खाना खाने बैठ गया।

अगले दिन आसिमो सुबह-सुबह ही जमींदार के घर पहुंच गया। उसे देखकर जमींदार मुस्कराया, "कहो, आज बड़ी जल्दी आ गये? मेरे प्रश्नों के उत्तर खोज लिये हैं क्या?"

"जी हुजूर," आसिमो बोला, "आपकी कृपा से मैंने उनके उत्तर खोज लिए हैं।"

"अच्छा, जरा मैं भी तो सुनूं।"

"जी, इस दुनिया में सबसे सहनशील धरती है, सबसे वेगवान चीज मन है और मनुष्य को दुनिया में नींद सबसे ज्यादा प्यारी लगती है।"

"वाह!" जमींदार के मुंह से अनायास ही निकल गया, "तुम तो कमाल के आदमी हो। कहां से मिले तुम्हें उत्तर?"

"जी, ये मैंने अपने दिमाग के सहारे खोजे हैं।" आसिमो ने जवाब दिया।

"नहीं-नहीं, मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं कर सकता। वैसे भी तुम शक्ल से इतने समझदार नहीं लगते, और अगर तुम वास्तव में इतने समझदार होते तो कोसुम को अपनी भेड़ें नहीं देते। इसलिए मुझे सच-सच बता दो, मैं कुछ नहीं कहूंगा। लेकिन अगर बाद में मुझे यह मालूम हुआ कि..."

जमींदार की बात सुनकर आसिमो एकदम से घबरा गया। वह बोला, "हुजूर, दरअसल बात यह है कि मुझे इन प्रश्नों के उत्तर मेरी बेटी ने बताये हैं।"

"अच्छा! तो यह बात है! फिर तुमने मुझ से झूठ क्यों बोला?" जमींदार एकदम से दहाड़ा, "लेकिन मैं भी देखता हूं कि तुम्हारी बेटी कितनी चालाक है!"

उसके बाद उसने अपने एक सेवक को आदेश देकर कपास के बीज लाने को कहा। आसिमो वहां पर चुपचाप खड़ा कांपता रहा। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि यह जमींदार अब क्या करने वाला है।

कुछ ही देर में नौकर कपास के बीज ले आया। जमींदार आसिमो को बीज देता हुआ बोला, "तुम्हारी बेटी ने मुझे चुनौती दी है। जाओ, उसे ये बीज देकर कहो कि इन बीजों को रात भर में बोकर उसके पौधे में लगने वाले कपास से सूत कातकर उससे एक चादर बुनकर दे। यदि वह ऐसा कर सकती है तो..."

आसिमो कुछ नहीं बोला। निराश मन से उसने ये बीज ले लिए और अपने घर को चल दिया। आएलीता आज भी उसे दरवाजे पर ही मिली। उसे उम्मीद थी कि जमींदार आज उन लोगों की भेड़ें वापस दिला देगा।

लेकिन जब उसने अपने पिता के लटके हुए चेहरे को देखा, तो बोली, "क्या हुआ पिताजी, जमींदार क्या उन उत्तरों से सन्तुष्ट नहीं हुआ?"

"नहीं बेटी, ऐसी बात नहीं। दरअसल हमारी किस्मत ही खराब है। अब उन भेड़ों को तो हम भूल ही जायें, यही अच्छा है।"

"नहीं, ऐसे कैसे हो सकता है? आखिर मुझे बतलाइये कि जमींदार ने आपसे क्या कहा।"

आसिमो पहले तो टालता रहा। लेकिन जब आएलीता नहीं मानी, तो उसने वे कपास के बीज उसे दिखा दिये और सारी बात कह सुनायी।

आएलीता ने उन बीजों को अपने हाथ में ले लिया। कुछ देर तक वह सोचती रही फिर मुस्करा कर बोली, "आप फिक्र न कीजिये पिताजी, सबकुछ ठीक हो जायेगा।"

"लेकिन कैसे?"

"वह मैं आपको सबकुछ रात में बता दूंगी।" आएलीता ने उसे दिलासा दिया।

बूढ़ा आसिमो इसके सिवा कर भी क्या सकता था। उसने सोचा, शायद मेरी बेटी के पास इसका भी कोई जवाब हो।

तीसरे दिन जमींदार ने जब आसिमो को खाली हाथ देखा, तो मुस्कराकर बोला "कहो, तैयार हुई चादर?"

"हुजूर, मेरी बेटी ने कहा है कि चादर वह एक क्या चार तैयार कर दे। लेकिन यहां की मिट्टी में कीड़े बहुत हैं, अगर आप चांद से थोड़ी-सी मिट्टी मंगा दें, तो मैं कलतक आपकी इच्छा पूरी कर सकती हूं।"

आसिमो का जवाब सुनकर जमींदार भौंचक्का रह गया। उसके सवाल का जवाब इस तरह से होगा, उसने इसकी उम्मीद भी न की थी। चांद से मिट्टी मंगवाना ठीक उसी प्रकार सम्भव नहीं था, जिस प्रकार रात भर में कपास के बीज से सूत निकाल कर चादर तैयार करना। इसलिए उसने उस काम को निरस्त कर दिया।

लेकिन इसका मतलब होता कि वह आएलीता के आगे हार मान ले। और यह उसके लिए असम्भव था। अतः उसने इस बार उबले हुए अंडे मंगवाये और उन्हें आसिमो को सौंपते हुए कहा, "लो, अपनी बेटी से कहो कि वह रात भर में इन अंडों से बच्चे निकालकर उन्हें बड़ा करे और फिर उसका मांस पकाकर मेरे सामने हाजिर करे। यदि वह ऐसा कर लेगी, तो तुम्हारी भेड़ें मैं दिला दूंगा।"

आसिमो की बेटी आएलीता ने जब यह शर्त सुनी, तो वह बोली, "यह कोई बड़ी बात नहीं है, पिताजी। आप जमींदार से कह दीजियेगा कि वह हमें सूरज की किरणों का दरबा बनवा दे, तो हम उसकी इच्छा पूरी कर देंगे।"

"और न वह ऐसा कर पायेगा, न उसकी इच्छा पूरी होगी।" आसिमो ने उसकी बात सुनी तो दोनों के होठों पर बरबस हंसी तैर गई।

जमींदार ने जब आसिमो का उत्तर सुना, तो उसके हाथों के तोते उड़ गये। अब क्या हो? क्या वह अदना-सी लड़की के आगे हार मान ले और आसिमो को उसकी भेड़ें दिला दे? लेकिन नहीं, यह तो उसकी शान के खिलाफ है। फिर कैसे उस लड़की को हराया जाये?

जमींदार सोच में पड़ गया। थोड़ी देर बाद उसके दिमाग में एक विचार आया। वह बोला, "सुनो अब अन्तिम पहेली। तुम अपनी बेटी से कहो कि कल वह मेरे सामने हाजिर हो। लेकिन न वह सवारी से आये, न पैदल। न तो वह मेरे पास नंगे पैर आये और न उसके पैरों में जूते-चप्पल हों। न तो वह मेरे लिये कोई उपहार लाये और न ही वह बिना उपहार आये। अगर वह सचमुच ही बुद्धिमान है और मेरी शर्तों को पूरा करती है, तो मैं तुमसे वादा करता हूं कि तुम्हें तुम्हारी भेड़ें दिला दूंगा।"

"जी हुजूर, मैं अपनी बेटी से आपकी सारी शर्तें कह दूंगा।" आसिमो ने अभिवादन करते हुए कहा और अपने घर को लौट पड़ा।

आसिमो रास्ते भर बड़ी उधेड़बुन में रहा। भला यह कैसे सम्भव है कि आदमी सवारी से भी आये और सवारी से न भी आये। एक ही आदमी दोनों काम कैसे कर सकता है? और फिर न नंगे पैर आये और न जूते पहने? यह भी कोई बात हुई? यह तो निहायत ही बेवकूफी की बात है। इसके अलावा तीसरी शर्त कि न उपहार लेकर आये और न बिना उपहार के? हुंह, ये सब बेतुकी बातें हैं। ऐसा हो ही नहीं सकता। इसका मतलब है कि मेरी भेड़ें गईं! हे ईश्वर, अब मैं क्या करूं? अब मेरी बेटी की शादी भला कैसे होगी?

आसिमो जब अपने घर पहुंचा, तो शाम हो चुकी थी। लोगों ने

अपने-अपने घरों में दिये जला दिये थे। गलियों में सन्नाटा छाया हुआ था। लेकिन आएलीता अब भी अपने दरवाजे पर खड़ी अपने पिता का इन्तजार कर रही थी। पता नहीं, जमींदार ने क्या फैसला दिया हो। कहीं वह नाराज होकर कुछ उलटा-सीधा न कर बैठा हो? वैसे भी वह अच्छा आदमी नहीं है, क्योंकि अगर उसे न्याय करना होता, तो वह इस तरह की उलटी-सीधी शर्तें क्यों लगाता? जरूर उसे कोसुम ने कुछ पैसे दिये होंगे। तभी वह फैसले को टाल रहा है। वैसे भी आजकल गरीबों की कौन सुनता है? हम लोग तो बस ईश्वर के भरोसे किसी तरह जी रहे हैं। लेकिन पिताजी कहां रह गये? अगर जमींदार ने फैसला नहीं दिया तो क्या हुआ, उन्हें अपने घर तो आ जाना चाहिए था। पता नहीं, कहां भटक रहे होंगे?

और तभी आएलीता की निगाह अपने पिता पर पड़ी। वह दौड़ कर उनके पास जा पहुंची और बच्चों की तरह लिपट कर बोली, "क्या बात है पिताजी? आप अबतक कहां थे? मैं कब से घर पर अकेली आपका इंतजार कर रही हूं।"

लेकिन आसिमो कुछ नहीं बोला। उसके पास बोलने के लिए था भी क्या? वह चुपचाप आएलीता के साथ चलता हुआ घर में पहुंचा और चारपाई पर बैठ गया।

पर आएलीता से अपने पिता की चुप्पी बर्दाश्त न हुई। उसने पूछा, "क्या बात है पिताजी? आप कुछ बोलते क्यों नहीं?"

"क्या बोलूं बेटी? अब हमारे पास बोलने को कुछ बचा ही नहीं।" कहते हुए आसिमो ने एक लम्बी सांस ली और सारी बात बता दी।

आसिमो की बातें सुनकर आएलीता एकदम से हंस पड़ी, "बस, इतनी सी बात है? मैं तो समझी थी कि जमींदार ने जाने क्या-क्या किया होगा!"

"तुम इसे इतनी सी-बात कहती हो?" आसिमो ने हैरान होकर

पूछा, "भला यह कैसे सम्भव है कि आदमी न सवारी पर हो, न पैदल हो? न वह नंगे पैर और न जूते पहनकर दरबार में पहुंचे...!"

आएलीता ने पिताजी की बात बीच में ही काट दी, "उसकी चिंता आप न करें, पिताजी। मैं उसकी सारी शर्तें पूरी कर दूंगी। मुझे विश्वास है कि हमारी भेड़ें हमें फिर से वापस मिल जायेंगी।"

"लेकिन कैसे?" आसिमो को अब भी विश्वास नहीं हो रहा था।

"वह आप कल ही देख लीजियेगा।" कहते हुए आएलीता मुस्करा पड़ी, "इस बार जमींदार भी याद करेगा कि उसका पाला किसकी बेटी से पड़ा है!"

सुबह आएलीता ने अपनी घोड़ागाड़ी निकाली और उसमें अपना एक बकरा जोत दिया। उसके बाद उसने एक पैर में जूता पहना और एक पांव नंगा ही रक्खा। फिर उसने एक कबूतर को हाथ में पकड़ा और गाड़ी पर एक पैर रखकर एक पैर से चलते हुए जमींदार से मिलने के लिए चल पड़ी।

जमींदार ने जब आएलीता का यह रूप देखा, तो हैरान रह गया। उसे विश्वास हो गया कि यह बहुत ही होशियार लड़की है।

जमींदार ने एक क्षण के लिए कुछ सोचा और फिर बोला, "शाबास आएलीता, तुम्हारी बुद्धिमत्ता देखकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। अब तुम्हारे पिता को उसकी भेड़ें दिला दी जायेंगी।"

"जी, बहुत-बहुत शुक्रिया।" आएलीता प्रसन्न हो उठी।

"लेकिन इस शुक्रिया से काम नहीं चलेगा," जमींदार ने अपनी रौबदार आवाज में कहा, "तुम्हें इस बुद्धिमत्ता की सजा दी जायेगी।"

"सजा?" आएलीता की खुशी एक पल में फुर्र हो गई।

"हां सजा," जमींदार ने अपनी बात आगे बढ़ाई, "और तुम्हारी सजा यह है कि तुम्हें मेरे घर में मेरी बहू बनकर रहना होगा।"

"क्या?" आएलीता का मुंह आश्चर्य से खुला-का-खुला रह गया।

"मैं अपने इकलौते बेटे की शादी तुम्हारे साथ करना चाहता हूं। बोलो तुम्हें मंजूर है?" कहते-कहते जमींदार मुस्करा उठा, "और मंजूर कैसे नहीं करोगी, तुम्हें ऐसा करना ही होगा।"

सबकुछ समझते ही आएलीता एकदम से शर्मा गई और जल्दी से अपने घर को भागी। और ओसिमो को जब सारी बात पता चली, तो वह खुशी से फूला नहीं समाया। कहां वह अपनी भेड़ों की चिन्ता कर रहा था और कहां उसे इतना अच्छा दामाद मिल गया! उसने सहर्ष इस शादी की अनुमति दे दी।

अगले महीने जमींदार के बेटे के साथ आएलीता का विवाह हो गया। जमींदार खुश था कि उसे इतनी अच्छी बहू मिली। आसिमो खुश था कि उसे इतना अच्छा खानदान मिला और आएलीता इसलिए खुश थी कि उसके पिता की चिंता दूर हो गई। ●

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन